अकेली आवाज़

अकेली आवाज़

राजेन्द्र अवस्थी

एक

मैं स्कूल नहीं जाऊंगा

"तुम्हें स्कूल जाना ही चाहिए, बंटू"—खीजकर नीता मिस ने कहा।

बंटू ने अपने बाल अपनी ही मुट्ठियों से भींचकर खींचने शुरू कर दिए। वह जमीन पर लोट-लोटकर रोने लगा। रोते-रोते बोला—"मैं स्कूल नहीं जाऊंगा। कभी नहीं जाऊंगा।"

"तो तुम्हें मन लगाकर मेरे पास पढ़ना होगा"—नीता मिस ने ज़ोर देकर कहा।

"नहीं, नहीं, नहीं"—बंटू ज़ोर से चिल्लाया। उसकी आवाज बाहर के कमरे तक पहुंच गई। कमरे में आशुतोष मुकर्जी दफ्तर का काम कर रहे थे। कमरा शान्त था और चारों तरफ से बन्द था। एक टेबल लैम्प जल रहा था और उसके प्रकाश के नीचे चौधरी साहब बड़ी-बड़ी फाइलों से निपट रहे थे। लेकिन बंटू की आवाज तेज थी। इतनी तेज कि उस कमरे तक पहुंच गई।

मुकर्जी साहब थोड़ी देर चुप रहे। पर आवाजें लगातार आती रहीं। उन्हें क्रोध आ गया। गुस्से में कमरे से निकलकर वह बाहर आए।

बंटू उसी तरह जमीन पर लोट रहा था और रो रहा था। नीता मिस एक हाथ पकड़े उसे मना रही थी। मुकर्जी साहब ने ज़ोर से डांटा—"नीता, क्या तुमने बंटू को मारा है?"

नीता के कुछ कहने के पहले ही बंटू उठकर खड़ा हो गया। बोला—"हां, डैडी, नीता मिस ने मुझे दो घूंसे मारे हैं।"

मुकर्जी साहब ने अपनी भरी हुई आंखों से नीता मिस की ओर देखा और बोले—"लड़के को यूं मारना ठीक नहीं है। पढ़ाने का यह तरीका मैं बिलकुल पसन्द नहीं करता।"

नीता मिस कुछ कहना चाहती थीं, परन्तु तब तक मुकर्जी साहब चले गए थे। बंटू ने अपने आंसू पोंछे। हंसते हुए उसने नीता मिस को जीभ

और कमरे से वाहर निकलकर दौड़ते हुए सामने के वाग में चला गया। नीता मिस आंखें फाड़े उस लड़के को देखती रहीं। देखते-देखते वह आंखों से ओझल हो गया।

उसके जाने के वाद नीता मिस ने एक लम्वी सांस ली। अपने सामने देखा। फटी हुई कितावें और फैला हुआ वस्ता। वंटू को उन्होंने कितनी वार समझाया है। वह मानता ही नहीं। उन्होंने एक किताव उठाकर देखी। वह इतिहास की पुस्तक थी। उसके ऊपर लाल पेंसिल से वंटू ने एक चित्र वनाया था। एक स्त्री का चित्र। ऊंचा जूड़ा और देह से सटी हुई साड़ी। ऊंची सैंडलें। नीचे लिखा था—"नीता मिस, हमारा सरदर्द।"

नीता मिस अपनी हंसी नहीं रोक पाईं। उस कमरे में वह अपने-आप हंसने लगीं। फिर एकाएक चुप हो गईं। एकदम गम्भीर।

सामने धूप ढल चुकी थी। परछाईं की तरह छाया उतरने लगी थी। नीता मिस ने वंटू का वस्ता समेटकर रैक पर रख दिया और कमरे के वाहर आ गईं। दरवाजे पर श्रीमती मुकर्जी खड़ी थीं। शायद वह कहीं वाहर जाने वाली थीं। नीता मिस का उतरा हुआ चेहरा देखकर वोलीं—"क्या वात है? आज तुम उदास क्यों हो?"

नीता मिस ने मुसकराने की कोशिश की—"ऐसे ही। कोई खास वात नहीं है।"

नीता मिस वहां रुकीं नहीं। वह वरामदे से उतरकर वाहर चली गईं। श्रीमती मुकर्जी को लगा, जरूर कोई वात है। वरना नीता मिस कभी यूं उदास नहीं रहतीं। उन्होंने कभी ऐसा व्यवहार भी नहीं किया। वह अपने पति के कमरे की ओर चली गईं।

नीता मिस वंगले के वाहर दूर के लान में घूमती रहीं। उनका दिमाग चक्कर खाता रहा। कई भूली-विसरी वातें उन्हें याद आती रहीं। आज से छः साल पहले वह इस घर में आई थीं। उन्हें वंटू को पढ़ाने के लिए विशेष रूप से रखा गया था। आशुतोष मुकर्जी ठहरे एक ऊंचे अफसर। अंगरेजों के जाने के वाद भारतीय अफसरों को कलेक्टर वनने का मौका मिला। मुकर्जी साहव काम के पक्के थे। विचारों के दृढ़ और मजवूत थे। स्वभाव से सख्त, परन्तु भीतर से उतने ही नरम। उन्हें भी मौका मिला और वह कलेक्टर वना दिए

गए।

कलेक्टर का काम आसान नहीं होता। आज यहां, तो कल वहां। फिर मुकर्जी साहब को एक और मुसीबत थी। उनके काम की धाक खूब थी। इसलिए उनको उन्हीं जिलों में भेजा जाता, जहां कोई गड़बड़ी होती।

इस तरह बार-बार तबादले के कारण बंटू की पढ़ाई में बड़ी बाधा आती इसलिए श्रीमती मुकर्जी ने एक टीचर रखने का इरादा कर लिया। वह चाहती थीं कि टीचर उन्हींके साथ रहे। जहां वह जाए, वह भी जाए और बंटू को पढ़ाती रहे।

नीता मिस ने यह काम सम्हाल लिया था। पांच-छः सालों से इसी परिवार के साथ रहने के कारण, वह उसका एक अंग बन गयी थी। बंटू उनके मुंह लग गया था। पूरे घर में था भी वही अकेला। इकलौता लड़का। घर में पूरे लाड़-प्यार में पला। नीता मिस भी उससे उतना ही प्यार करती। लेकिन वह यह भी चाहती थी कि बंटू पढ़ाई ठीक करता रहे। उनका इरादा था कि तीन साल वह और पढ़ ले। फिर उसे सीधे हायर सेकेण्डरी की परीक्षा में बैठा दिया जाएगा। पांच-छः वर्षों में वह उसे चौथी अंगरेजी के आगे ले आई थी।

नीता मिस को एक बड़ी परेशानी थी। बंटू इतना छोटा नहीं है। उसकी उम्र बारह के लगभग है। लेकिन वह अपने सारे व्यवहार छोटे लड़कों की तरह करता है।

नीता मिस जिम्मेदार और पढ़ी-लिखी महिला थी। कई सालों तक वह स्कूलों में काम कर चुकी हैं। सैंकड़ों लड़के-लड़कियों को उन्होंने पढ़ाया है। इतने अनुभव के बाद वह बाल-मनोविज्ञान भी खूब समझती हैं। परन्तु हर चीज की एक सीमा होती है।

उन्हें याद आ रहा था। वे जब बंटू को पहले दिन पढ़ाने बैठी थीं, वह छः साल का सुन्दर और सुघड़ लड़का था। पहले उन्होंने अक्षर ज्ञान का पाठ शुरू किया था। उन्होंने 'अ' लिखने को कहा था। बंटू ने 'अ' की जगह नीता मिस का चित्र बना दिया था। तब नीता मिस खूब हंसी थी। उसके गाल पर अपनी हथेली फिराते हुए बोली थीं—"कितना शरारती लड़का है।"

नीता मिस को विश्वास था कि यह बड़ी बात नहीं है। धीरे-धीरे

वंटू ठीक हो जाएगा। परन्तु इतने वर्ष गुजर गए, वंटू ठीक नहीं हुआ।

उन्हें याद है। एक बार मुकर्जी साहब से उन्होंने कहा था—"आप वंटू को किसी स्कूल में दाखिल करा दीजिए। वहां वह ठीक हो जाएगा।"

"नहीं"—आशुतोष मुकर्जी ने कहा था—"स्कूल में और लड़के भी होते हैं। वे वंटू को परेशान कर सकते हैं। फिर सारे लड़के एक जैसे नहीं होते। वंटू सभी तरह के लड़कों के साथ उठेगा-बैठेगा। इससे उसकी आदतें भी खराब होंगी। मैं चाहता हूं कि मेरे बेटे को घर पर ही आलीशान शिक्षा दी जाए।"

नीता मिस चुप रही थीं। वह कह भी क्या सकती थीं। मां-बाप के लाड़-प्यार से लड़के ऐसे ही तो विगड़ते हैं। पढ़ने का नाम सुनते ही वंटू का खून सूख जाता था। नीता मिस उसका हाथ पकड़कर काम शुरू करातीं, तो वह खाने या पीने का वहाना करने लगता। उसके बाद लौटता तो फिर कोई नया वहाना हाज़िर।

एक दिन तो वंटू ने कमाल कर दिया था। नीता मिस उसके सारे वहानों को पहचान गई थीं। इसलिए उन्होंने कोई वहाना नहीं सुना।

वंटू उठने को हुआ, तो उसका हाथ पकड़ लिया। वंटू ने तीन-चार बार यही किया। उसे सफलता नहीं मिली। पांचवीं बार उसने नीता मिस की आंखों का चश्मा ही खींच लिया। उसे खींचकर उसने दूर फेंक दिया और स्वयं रोने लगा। नीता मिस अपनी फटी नज़रों से यह सब देखती रहीं। उन्होंने वंटू का हाथ छोड़ दिया। तभी श्रीमती मुकर्जी आ गयीं। उन्होंने यह देखा तो हंसने लगीं। वंटू का हाथ प्यार से पकड़कर वह वोलीं—"वेटे, मिस को इस तरह परेशान नहीं करते। वह तुम्हारी टीचर हैं। तुम्हें उनकी इज्ज़त करनी चाहिए।"

लेकिन वंटू ने तव भी नहीं माना था। हाथ छुड़ाकर वह भागा था और भागते हुए उसने मिस नीता को ठेंगा दिखाया था। श्रीमती मुकर्जी तव भी हंस रही थीं। उन्होंने नीता मिस के लिए दूसरा चश्मा खरीद दिया था।

नीता मिस ढली हुई शाम के साये में घूम रही थीं। वह अकेली थीं। उनका मन तव भी वोझिल था। अपना घर-वार छोड़कर वह यहां-वहां

घूमती-फिरती थीं। बंटू को अपने बेटे की तरह समझती हैं। तब भी···। नीता मिस ने ऊपर आकाश की ओर देखा। पक्षियों का एक झुण्ड उड़ता हुआ उनके सिर पर से निकल गया। शाम सुहावनी थी और ठण्डी हवा बह रही थी। नीता मिस का दिमाग तब भी भारी था। अब उन्हें बंटू से शिकायत नहीं थी। वह तो एक लड़का है। लड़के बंदर की जात होते हैं। उन्हें ऊधम मचाना ही चाहिए। किन्तु मुकर्जी साहब को ऐसा नहीं करना था।

मुकर्जी साहब का ध्यान आते ही नीता मिस की आंखों के सामने एक सख्त और सीधा चेहरा घूम गया। मुकर्जी साहब की बड़ी-बड़ी आंखें और भारी आवाज। इसी आवाज में वह अपने मातहत अफसरों को हुक्म दिया करते हैं। इन्हीं आंखों से जिसे एक बार देख लेते हैं, वह कांप उठता है। उन्होंने उन्ही आंखों से नीता मिस की ओर देखकर कहा था—"लड़के को यूं मारना ठीक नहीं। मैं यह नहीं चाहता।"

नीता मिस को क्रोध आ गया। एक तो बटू को मारा ही नहीं था। और मारा भी होता तो क्या, उनको इतना भी अधिकार नहीं है। वह अपने आप कुछ बड़बड़ाने लगी। उनके कदम तेज हो गए। तेज कदमों से यहां-वहां घूमने लगी। उन्होंने अपने-आप चुटकी बजाई और बंगले की ओर मुड़ गई।

दो

एक शैतान लड़का

रात के अंधेरे में नीता मिस अपने कमरे में बैठी थी। टेबल लैम्प के सहारे वे एक किताब पढ़ रही थी। [उनका यह रोज का नियम है। सोने से पहले वह कोई न कोई किताब जरूर पढ़ती हैं। पढ़ते-पढ़ते वह शाम की सारी घटना ही भूल गयी। उस पुस्तक में एक शैतान लड़के की कहानी थी। उसने सारे मोहल्ले को परेशान कर रखा था। उसकी टीचर ने धीरे-धीरे उसे किस तरह सुधारा। फिर उसे एक स्कूल में जबरन दाखिल करा दिया। थोड़े दिनों में ही वह लड़का एकदम सुधर गया। आगे चलकर वह बड़ा आदमी बना।

नीता मिस अपने-आप मुस्कराने लगीं। उनके सामने वंटू की तसवीर घूम गयी। इसी लड़के की तरह एक शरारती लड़का।

उसी समय किसीने दरवाजा खोला। नीता मिस ने लौटकर देखा। वह श्रीमती मुकर्जी थीं। नीता मिस खड़ी हो गयीं। श्रीमती मुकर्जी ने उन्हें वैठाया। वह स्वयं एक कुरसी पर वंठ गयीं। श्रीमती मुकर्जी ने कहा—"नीता जी, आप वुरा न मानें। हम वंटू को जानते हैं। वह लड़का दिन-पर-दिन विगड़ता जा रहा है।"

नीता मिस ने मुसकराकर कहा—"वंटू को मैं भी जानती हूं। मुझे कोई शिकायत नहीं है।"

"आज शाम से आप उदास हैं। मुकर्जी साहव ने आपको···" श्रीमती मुकर्जी कहते-कहते रुक गयीं।

नीता मिस की आवाज़ भी वदल गयी। वह वोलीं—"मुझे वंटू से कोई शिकायत नहीं है। परन्तु मुकर्जी साहव को इस तरह नहीं डांटना चाहिए था। वह भी वंटू के सामने, जवकि मैंने वंटू को मारा ही नहीं था। लड़के इसी तरह विगड़ते हैं।"

"आपकी शिकायत सही है"—श्रीमती मुकर्जी ने कहा—"वंटू झूठ वोलने लगा है। उसे आपको मारना चाहिए। विना सजा दिए लड़के रास्ते पर नहीं आते।"

नीता मिस अपनी हंसी नहीं रोक सकीं। वह ज़ोर से हंस पड़ीं। लेकिन यह उनकी स्वाभाविक हंसी नहीं थी। इसमें एक व्यंग्य था। वंटू को विना मारे यह हो सकता है, तो मारने के वाद क्या होगा।

श्रीमती मुकर्जी समझदार महिला थीं। वे असल वात को समझ गयीं। वोलीं—"मैं इसीलिए आयी हूं। मुकर्जी साहव ने ही मुझे भेजा है। असल में वह उस समय जरूरी काम कर रहे थे। गुस्से में आकर, वह कुछ भी कह वैठे। उनकी ओर से मैं माफी मांगती हूं।"

'माफी' शव्द सुनते ही नीता मिस का मन पूरी तरह घुल गया। उनका उतरा हुआ चेहरा फिर खिल उठा। उन्होंने उठकर श्रीमती मुकर्जी के हाथ पकड़ लिए—"आप क्या कहती हैं?"

श्रीमती मुकर्जी हंस पड़ीं। वोलीं—"नीता जी, वचपन में किसने मार

नहीं खायी। फिर गुरु की मार से बढ़कर और है क्या। मेरे पिता भी स्कूल मास्टर थे। वह लड़कों को जरूर पीटा करते थे। कहते थे—बिना मार खाए विद्या नहीं आती। गुरु की मार एक वरदान होती है। यही बच्चों को बड़ा आदमी बनाती है। मेरे टीचर तो मुझे खूब मारते थे। मेरी चोटियां खींचते थे और जब मैं अपने पिताजी से शिकायत करती थी तो वे भी उल्टे चांटे लगा देते थे। इसी मार का कारण है, मीता जी, कि हम आज मजे में हैं। हर साल हम पहले नम्बर पर पास होते रहे हैं, और इनाम जीतते रहे हैं। कालेज में मैंने गोल्ड जीती थी और इंग्लैण्ड सरकारी खर्चे पर पढ़ने भेजी गयी थी।"

"आप सही कहती हैं"—नीता मिस ने कहा—"बंटू के साथ एक और परेशानी है। वह घर में अकेला है। अकेला होने से जिद्दी हो गया है। उसका यह अकेलापन आगे जाकर नुकसान पहुंचा सकता है।"

"वह कैसे ?"—श्रीमती मुकर्जी ने पूछा। नीता मिस ने कहा—"आदमी एक सामाजिक प्राणी है। वह अकेला कभी नहीं रह सकता। अकेलापन उसे खा जाएगा। अकेले रहना केवल पशु जानते हैं। बंटू को यदि अकेले रहने की आदत लग गयी, तो वह कभी दोस्त नहीं बना सकेगा। वह अब छोटा नहीं है। आपको उसकी यह आदत सुधारनी चाहिए।"

"वह कैसे ?"—श्रीमती मुकर्जी ने पूछा।

"बंटू को आप किसी अच्छे स्कूल में दाखिल करा दीजिए। ऐसा स्कूल हो, जहां पढ़ने के साथ रहने की भी सुविधा हो। घर से दूर रहेगा, तो अपने-आप ठीक हो जाएगा।"

"घर से दूर ! यह कैसे हो सकता है। वह हमारा इकलौता बेटा है।" श्रीमती मुकर्जी का चेहरा उतर गया।

नीता मिस बोलीं—"स्कूल में और भी लड़के होते हैं। उनके साथ मिल-जुलकर रहना बड़ी बात है।"

श्रीमती मुकर्जी ने बीच में रोककर कहा—"यही तो मुकर्जी साहब नहीं चाहते। स्कूल में गंदे और खराब लड़के भी होते हैं। बंटू को उनसे अलग रखा जाना चाहिए।"

नीता मिस मुसकराईं। उनके मन में आया, वह कह दें कि बंटू

अच्छा लड़का है। उन्हें लगा कि वे पूछें कि गंदे और खराव लड़के और कैसे होते हैं? क्या उनके सिर पर सींग निकलते हैं? लेकिन वह कुछ नहीं वोलीं। उन्होंने वात को वहीं छोड़ दिया और यहां-वहां की वातें करने लगीं। काफी देर तक दोनों वातें करती रहीं। काफी रात गए श्रीमती मुकर्जी अपने कमरे में चली गईं।

सुवह चाय पीने के वाद नीता मिस ने वंटू को आवाज़ लगाई। वह पहले से ही वस्ता खोले वैंठा था। अपनी गणित की कापी में उसने एक चित्र वनाया था। चित्र में दिखाया गया था कि नीता मिस रो रही हैं। उनके पास ही वंटू वैठा है और जोर-ज़ोर से हंस रहा है।

नीता मिस वंटू के पास आकर वैंठ गयीं। वोलीं—"वंटू, तुमको हाथ जोड़कर नमस्ते कहना चाहिए था न?"

वंटू ने निहायत शैतानी के साथ 'नमस्ते' की। उसने वह कापी रीता मिस के सामने फेंक दी। नीता मिस देखकर दंग रह गईं। उन्होंने दांत पीसे। परन्तु दूसरे ही क्षण उनकी मुद्रा मुलायम हो गई। वोलीं—"अरे, वंटू, तुम तो वहुत अच्छा चित्र वना लेते हो।" उन्होंने वंटू की पीठ ठोकी—"खूव, वहुत खूव।"

यह सुनते ही वंटू के मन में जाने क्या आया। वह सोचता था कि नीता मिस उसे फिर डांटेंगी। फिर वह रो देगा। पिता जी उसी तरह आकर मिस को डांट देंगे। वह उठकर भाग जाएगा। और इस तरह पढ़ाई से छुट्टी मिल जाएगी। ऐसा कुछ नहीं हुआ। नीता मिस वरावर मुसकराती रहीं। उन्होंने कहा—"हिन्दी की रीडर निकालो। आज हम तुम्हें कविताएं पढ़ाएंगे।"

वंटू को गुस्सा आ गया था। परन्तु वह कर भी कुछ नहीं सकता था। नीता मिस ने हिन्दी की किताव निकाली। उसमें से एक पाठ खोला। वह पाठ महात्मा गांधी के वारे में था। उसमें गांधीजी के वचपन की कहानी लिखी थी। नीता मिस ने वंटू से वह पाठ पढ़ने को कहा। वंटू मज़े में पाठ पढ़ने लगा। वह पाठ उसे अच्छा लगा। उसमें लिखा था कि गांधीजी वचपन में वड़े शैतान थे। उनकी शैतानियां भी लिखी हुई थीं। वंटू ने पूछा—"मिस, इसका मतलव हुआ कि शैतानी करना अच्छा है।"

नीता मिस ने उसकी ओर देखते हुए कहा—"हां, शैतानी जरूर करनी चाहिए।···आगे पढो।"

वंटू आगे पढता गया। अन्त मे पहुंचकर वह रुक गया। नीता मिस ने उसके चेहरे की ओर देखा। वंटू के चेहरे पर एक दूसरे भाव उतर आए थे। नीता मिस ने कहा—"वंटू, रुक क्यो गए? क्या आगे पढ़ना नहीं आता?"

वंटू बोला—"आता क्यों नहीं, लेकिन इसमे झूठ लिखा है।"

"झूठ।"—नीता मिस ने कहा—"जरा पढो तो, हम भी सुनें, उसमे झूठ क्या है?"

वंटू ने जान-बूझकर अटक-अटककर पढना शुरू किया—'गांधीजी को अपनी गलती महसूस हो गयी। उन्होंने अपने कान पकड़े। अपने शिक्षक से माफी मांगी और कहा—'मैं अब कभी झूठ नहीं बोलूगा। झूठ बोलना पाप है।' इसके साथ ही वंटू चिल्ला उठा—'इस किताब मे यह गलत लिखा है। एकदम गलत।' उसने गुस्से में आकर वह पूरी किताब फाड डाली। फिर वह उठकर भागने लगा। नीता मिस ने उसे उसी समय पकड़ लिया। जोर से उसका हाथ खीचकर उन्होंने डाट लगाई। बोली—"इस तरह तुम भाग नही सकते।"

वंटू सकते में आ गया। उसे लगा, कही ऐसा न हो कि आज सचमुच में मिस उसे मार दें। परन्तु नीता मिस ने उसे नही मारा। बोली—"वंटू, तुम ठीक कहते हो। उस पुस्तक मे सब झूठ लिखा है।···"

वंटू ने बीच मे ही रोककर कहा—"सब नही, मिस, आखिर मे ही झूठ लिखा है।"

नीता मिस जोर से हंस पडी। बोली—"तो सही क्या होना चाहिए?"

वंटू चुप हो गया। उसके चेहरे पर परेशानी की रेखाएं खिंच गईं। वह स्वयं नही जानता था कि यदि वह बात गलत है तो सही क्या है। इतना विवेक उसमे नही था।

नीता मिस ने कहा—"बोलो, बोलते क्यो नही?"

वंटू यहां-वहां देखने लगा। उसी समय उसने पानी पीने का वहाना किया। नीता मिस ने कहा—"अच्छा, ठहरो, पानी मंगाते हैं। तब तक यहीं बैठे

रहो।" नीता मिस ने वहीं से आवाज़ लगायी। परन्तु शायद कोई नौकर नहीं था। यह देखकर वह स्वयं उठने लगीं। अब बंटू के लिए और बड़ी परेशानी थी। वह तुरन्त उठकर खड़ा हो गया और दौड़कर बाहर भाग गया। दरवाज़े के पास पहुंचकर उसने आवाज़ लगाई—"मैं ऐसे पाठ नहीं पढ़ना चाहता।"

तीन

एक अकेली आवाज़

मौसम साफ और खुला था। नीले आसमान पर यहां-वहां हल्के सफेद बादल बगुलों की तरह तैर रहे थे। पूरबी क्षितिज लाल होता जा रहा था और लगता था जैसे नीचे से कोई रंगभरी फुहारें छोड़ रहा है। बंगले के आसपास पक्षियों की स्वर-लय-भरी तानें गूंज रही थीं। बंटू अब भी सो रहा था। उसे इन बातों का भान नहीं था।

नीता मिस घूमकर लौटीं। वह प्रतिदिन सुबह उठती हैं और घूमने चली जाती हैं। वहां से लौटकर वे बंटू को जगाया करती हैं। बंटू को तब उठना पड़ता है। नीता मिस ने रोज़ की तरह बंटू को उठाया। वह ऊं-आं कर, करवटें लेता रहा और चादर को और-और सिकोड़ता गया। नीता मिस ने उसे कई बार आवाज़ें दीं। हर बार बंटू 'ऊं' कह देता और फिर करवट बदल लेता।

थोड़ी देर नीता मिस प्रतीक्षा करती रहीं। फिर उन्होंने चादर को ज़ोर से खींच लिया और बंटू को हाथ पकड़कर उठाकर बैठा दिया।

बंटू ने भारी आंखों से नीता मिस की ओर देखा। उसे लगा, जैसे कोई यम उसके सामने खड़ा है। नीता मिस का इस तरह उठाना उसे अच्छा नहीं लगा। लेकिन उसके सामने और कोई चारा नहीं था। वह ज़्यादा गड़बड़ करता है, तो मम्मी वहां आ जाएंगी और फिर कान खींचे जाएंगे।

बंटू ने बिस्तरे से उठते हुए तिरछी आंखों से नीता मिस की ओर देखा और बाथरूम में चला गया।

चाहो, वह पढ़ने को न मिले। गणित से उसे निहायत नफरत है। कई बार याद करने पर भी वह ९ का पहाड़ा भूल जाता है। इतिहास और भूगोल से उसे चिढ़ है। इतिहास में कितने सन्, सम्वत् याद रखने पड़ते हैं, और भूगोल में उसे आज तक यह याद नहीं हो पाया कि किस देश की राजधानी कहां है। अंगरेज़ी वह पढ़ना चाहता है, परन्तु नीता मिस अक्सर उससे स्पेलिंग पूछती हैं। इससे बड़ा सिरदर्द और क्या हो सकता है।

बंटू को अंगरेज़ी की पुस्तक निकालनी पड़ी। मिस ने उसे कल कुछ प्रश्न दिए थे। उन प्रश्नों के उत्तर उसे याद करने थे। बंटू ने कुछ भी काम नहीं किया था। उसने टालना चाहा। एक पिछला पाठ खोलकर उसने मिस के सामने बढ़ा दिया। बोला—"मिस, इस कविता का अर्थ फिर समझा दीजिए मैं भूल गया।"

नीता मिस ने देखा बंटू के चेहरे पर शरारत के भाव बहुत साफ थे। चाहकर भी वह उन भावों को नहीं छिपा सका था। नीता मिस जानती थीं कि नरमी होने से काम नहीं चलेगा। उन्होंने सख्ती की और कहा—'यह नहीं, दसवां पाठ निकालो।"

"नहीं, मैं यही पाठ पढूंगा, मिस।"—बंटू ने ज़िद्द की।

नीता मिस ने उसे समझाया कि पढ़ाई में यूं ज़िद नहीं करते। अभी कोर्स बहुत-सा पड़ा है और जल्दी-जल्दी पढ़ाई न की गई तो वह पूरा नहीं होगा। उन्होंने समझाते हुए कहा—"बेटे, तुम्हें इस साल आठवीं की परीक्षा में बैठना है। तुम नहीं जानते प्राइवेट पढ़ने वाले लड़कों को कितनी कठिनाई होती है…।"

बंटू ने बीच में कहा—"मुझे परीक्षा में नहीं बैठना।"

"तुम परीक्षा में नहीं बैठोगे तो आगे कैसे पढ़ोगे। बड़े आदमी कैसे बनोगे।" मिस ने फिर समझाया। पर बंटू समझने के लिए तैयार नहीं हुआ। उसने कहा—"मैं बिना पढ़े बड़ा आदमी बनूंगा।"

"वह कैसे ?"—मिस ने पूछा।

"बड़ा होकर मैं एक बंदूक खरीदूंगा। बंदूक लेकर किसी शहर में जाऊंगा। वहां बंदूक के जोर से लोगों से धन लूटूंगा और इस तरह बड़ा आदमी बनूंगा।" बंटू की ये बातें सुनकर नीता मिस के पैरों से ज़मीन

घिसक गई। उन्हें लगा, जैसे वे बैलगाड़ी की कील पर खड़ी हैं और चारों ओर की दुनिया घूम रही है। बंटू ने यह सब कहां से सीखा। वह गलत आदतें सीखेगा तो बदनाम वही होगी।

उन्होंने पूछा—"यह सब तुम्हें कहां से पता लगा, बंटू।"

बंटू जोर से हंसा। बोला—"यह भी कोई बड़ी बात है। यह देखो···।" उसने एक किताब निकालकर मिस को दिखाई। बोला—"इसमें सब कुछ समझाया गया है। डाकू मूरतसिंह अपनी बंदूक लेकर निकल पड़ा था। उसने लाखों रुपये लूटे और बड़ा आदमी बन गया। पुलिस उसे आखिर तक नहीं पकड़ सकी।"

नीता मिस ने वह किताब अपने हाथ में ले ली। उसे समझाया—"बेटे, धन-दौलत से कोई बड़ा आदमी नहीं बनता। दूसरों का लूटा हुआ धन मिट्टी के समान है। आदमी को मेहनत से खुद धन कमाना चाहिए।"

बंटू ने कहा—"आप गलत कहती हैं, मिस। इस पुस्तक में ऐसा नहीं लिखा।"

"ऐसी पुस्तकें तुम्हें नहीं पढ़नी चाहिए।"—नीता मिस ने कहा।

"क्यों नहीं पढ़नी चाहिए ? मैं जरूर पढ़ूंगा।" बंटू ने जिद की और उस किताब को मिस के हाथ से छीनने के लिए वह आगे बढ़ा। नीता मिस ने उसे बड़े प्यार से समझाया, परन्तु वह नहीं माना। उसने कहा—"मैं ऐसी कई किताबें पढ़ चुका हूं। और अभी और पढ़ूंगा। मेरे पास और भी रखी हैं।"

नीता मिस ने पूछा—"ये किताबें तुम्हें किसने लाकर दीं, बंटू ?"

बंटू ने बिना हिचक के कह दिया कि वह ड्राइवर दिलेरसिंह से झटककर ये किताबें ले आता है। नीता मिस को असल जड़ का पता लग गया। वे मुस्कराईं। बोलीं—"अच्छा, चलो, आज का पाठ पढ़ो।"

"नहीं, पहले मेरी किताब मुझे वापस दीजिए"—बंटू ने जिद की।

नीता मिस ने उसे डांटा। समझाया भी कि टीचर के साथ जिद्द करना अच्छा नहीं है। परन्तु जब बंटू नहीं माना, तो उन्होंने वह किताब ही फाड़ डाली।

किताब के फटते ही बंटू आग-बबूला हो गया। सामने कांच का पेपरवेट

पड़ा था। उसने आव देखा न ताव, वह पेपरवेट उठाकर नीता मिस को दे मारा। उनके सिर से खून वहने लगा। यह देखकर वंटू घर से वाहर भाग गया।

नीता मिस ने सिर पर हाथ लगाकर खून रोकने की कोशिश की। उसी समय नौकरानी वंटू को दूध देने कमरे में आई तो खून देखकर दंग रह गई। उसने तुरन्त श्रीमती मुकर्जी को खवर दी। श्रीमती मुकर्जी दौड़ती हुई वहां आई।

नीता मिस वरावर मुस्कराती रहीं। उनके चेहरे पर ज़रा-सी भी शिकन नहीं थी।

श्रीमती मुकर्जी ने अपने हाथ से नीता मिस की मरहम-पट्टी की। उनकी आंखों में आंसू आ गए। लड़का दिन-पर-दिन विगड़ता जा रहा है। आयु के साथ यदि उसकी हरकतें यूं ही वढ़ती गईं तो उन्हींके नाम पर धव्वा लगेगा। यह लड़का नहीं कलंक का टीका वनता जा रहा है।

उन्होंने श्री आशुतोष मुकर्जी को जाकर सारी घटना वता दी। यह सुनकर वह भी चिंतित हो उठे। उन्हें डर लगा कि कहीं मिस नीता नौकरी छोड़कर न चली जाएं। उनके साथ वंटू लगातार शरारतें कर रहा है। वही हैं, जो इतने सालों से सव कुछ सह रही हैं। उनके सामने नीता मिस का चेहरा झूल गया। वह एक सीधा और सरल चेहरा था। सदा हंसता और मुस्कराता हुआ। वे चुपचाप अपना काम करती रहती हैं। वंटू की जितनी देखभाल वे करती हैं, दूसरा नहीं कर सकता। इतने साल साथ रहने के कारण उनका सम्वन्ध पराया नहीं रह गया। इस परिवार की न होते हुए भी वह अव उसका एक अंग वन गई थीं।

मुकर्जी साहव गुस्से में उठे और वाहर निकलकर वंटू को आवाज़ लगाई। वह वहां नहीं था। उन्होंने वहुत खोज-वीन की। कोई असर नहीं हुआ। तव उन्होंने नौकरों को वुलाया। उन्हें आदेश दिया कि वंटू जहां भी हो, उसे ढूंढ़कर लाया जाए।

भीतर जाकर मुकर्जी साहव ने नीता मिस को हमदर्दी दिखाई। जो हो चुका है, उसके लिए खेद प्रकट किया। परन्तु नीता मिस ने कोई शिकायत न की। उन्होंने सहज भाव से कहा—"कोई वात नहीं। अभी वच्चा है।

बच्चे ऊधमी होते ही हैं।"

"नहीं"—मुकर्जी साहब ने सख्त स्वर में कहा—"ऐसे में यह लड़का हमारे हाथ से निकल जाएगा। आज शाम आप मुझसे मिलिएगा।"

मुकर्जी साहब तेजी के साथ कमरे से चले गए और अपने काम में लग गए।

दोपहर तक सभी नौकर खाली हाथ वापस आ गए। बंटू का कहीं पता नहीं था। यह देखकर श्रीमती मुकर्जी को चिन्ता हुई। नीता मिस भी परेशान हुई। कहीं वह भाग न गया हो, या···।

श्रीमती मुकर्जी ने अपने पति को टेलीफोन किया और अपनी चिन्ता जाहिर की। मुकर्जी साहब दफ्तर का सारा काम छोड़कर घर भागे आए। उनका खून भी सूख गया था। इकलौता बेटा है, कहीं डर के मारे कुछ कर न बैठे। नौकरों के साथ वह भी उसकी खोज में निकल पड़े। पूरा बंगला अशान्त हो उठा। ज्वार की तरह परेशानियों की लहरों से वह बंगला घिर गया।

धूप ढलने लगी। चिड़ियों के स्वर चारों ओर फैलने लगे। सूरज की जो किरणें पूरब से फूटी थीं, पश्चिम की ओर जाकर छिपने लगीं। सूरज सिमटता गया और फिर वह एक गेंद की तरह गोल बनकर क्षितिज के भीतर उतरने लगा गया। मुकर्जी परिवार निराश और परेशान लौट आया। बंटू का कहीं पता नहीं था। श्रीमती मुकर्जी की आंखों से लगातार आंसू निकल रहे थे। नीता मिस का चेहरा परेशानी से पीला पड़ गया था। नौकर अपने साहब के चेहरे को देख-देखकर ढीले हो रहे थे।

सभी परेशान होकर घर के भीतर गए तो नीता मिस देखकर दंग रह गईं। बंटू अपने सोने के कमरे से बाहर निकल रहा था। वे वहीं से चिल्लायी---"बंटू यहां है। बंटू यहां है।"

सभीने आकर उसे घेर लिया। श्रीमती मुकर्जी उसे लिपटाये बिना न रह सकीं। तभी मुकर्जी साहब का चेहरा सख्त हो गया। तेज आवाज में उन्होंने बंटू से पूछा—"तू कहां था ? बोल ?"

उन्होंने बंटू का दायां कान जोर से पकड़ा। पहली बार मुकर्जी साहब ने बंटू का कान पकड़ा था। यह देखकर बंटू की सिट्टी-पिट्टी गुम हो

गयी। वह रोने लगा। परन्तु उसका असर किसी पर न हुआ। सभी इतनी देर से परेशान हो रहे थे, इसलिए सभीके मन में गुस्सा था। बंटू ने जो कुछ किया है, अक्षम्य है। इसकी उसे सजा मिलनी ही चाहिए। अपने पिता के सख्त चेहरे को देखकर उसे सच बताना ही पड़ा। वह भागकर सामने के पीपल के झाड़ पर चढ़ गया था। जब सब उसे खोजने चले गए तो वह वहां से उतरा। पीछे की खिड़की खुली थी। उसीसे वह भीतर कूदा और अपने कमरे में पहुंच गया।

नीता मिस को इस घटना से और दर्द हुआ। गलत किस्म की किताब पढ़ने का ही कारण है कि इस कच्ची उम्र में बंटू ने इतना सब सीख लिया है।

मुकर्जी साहब से न रहा गया। उन्होंने दो चांटे जोर से उसके गाल पर जड़ दिये और वहां से चले गए। सबको यह आदेश दे दिया गया कि कोई भी व्यक्ति बंटू से बात नहीं करेगा। उसे एक कमरे में बन्द कर दिया गया और कमरे के सामने कड़ा पहरा बैठा दिया गया।

रात को मुकर्जी साहब और श्रीमती मुकर्जी ने नीता मिस को परामर्श के लिए बुलाया। काफी देर तक तीनों सोचते रहे। अन्त में एक ही उपाय उनके सामने था—बंटू को किसी अच्छे स्कूल में दाखिल करा दिया जाए। उसके रहने का प्रबन्ध भी एक होस्टल में किया जाए। नीता मिस ने सुझाव दिया कि रामगढ़ का आदर्श विद्यालय सबसे अच्छा है। वहां लड़कों को अनिवार्य रूप से होस्टल में रहना पड़ता है। वह स्कूल ही अपने ढंग का अलग है। शहर से दूर और सारी सुविधाओं से भरा। वह आता भी उसी जिले में है। इसलिए मुकर्जी साहब आश्वस्त हुए। उनके प्रभाव से काम हो जाएगा और बंटू को वहां भरती कर लिया जाएगा।

मुकर्जी साहब की आस्था पहली बार डिगी। वह क्या चाहते थे, उन्हें क्या करना पड़ रहा है।

सुबह बंटू को रात का निर्णय सुना दिया गया। दो-तीन दिन के भीतर ही उसे 'आदर्श विद्यालय' में दाखिल कर दिया जाएगा। बंटू ने सुना तो वह चीख उठा—"नहीं, मैं कहीं नहीं जाऊंगा। मैं यहीं रहूंगा।" परन्तु उसकी चीख किसीने नहीं सुनी।

दोपहर को वह नीता मिस के पास गया। जाते ही वह रोने लगा। बोला—"आगे से मैं ऐसा कभी नहीं करूंगा। मुझे घर से बाहर मत भेजिए।"

नीता मिस ने उसकी पीठ पर हाथ फेरा। उसे समझाया कि स्कूल में जाकर पढ़ने से अच्छी बात दूसरी नहीं है। उन्होंने कहा—"बंटू, तुम्हें अब स्कूल जाना ही चाहिए।"

बंटू ने देखा, नीता मिस किसी तरह नहीं मान रही। तब उसने अपनी मुट्ठियों से अपने ही सिर के बाल खींचे और बोला—"मैं स्कूल नहीं जाऊंगा, कभी नहीं जाऊंगा।"

...ली आवाज़ उसीके कंठ में डूब गई। नीता मिस ने इस बार हमदर्दी नहीं दिखाई।

चार

'आदर्श विद्यालय' में

'आदर्श विद्यालय' में आशुतोष मुकर्जी के आने की सूचना पहले ही पहुंच गई थी। वहां के अफसरों ने प्रिंसिपल को खबर दे दी थी कि कलेक्टर साहब आज यहां आने वाले हैं। उनके स्वागत की वहां तैयारियां हो चुकी थीं। तैयारियां बहुत साधारण-सी। केवल यह कि उस समय प्रिंसिपल अपने कमरे में जरूर रहें। उनका समय बंटा हुआ है। निर्धारित समय पर वे निर्धारित जगह में रहते हैं। कलेक्टर साहब को वहां आकर उन्हें न खोजना पड़े, इसका ध्यान रखा गया।

जाते समय श्रीमती मुकर्जी ने अपने बेटे को आंख भरकर विदाई दी। उसे कई बातें समझाईं। वहां जाकर उसे उपद्रव नहीं करना चाहिए। अच्छे लड़कों की तरह आचरण करना चाहिए। किसी तरह की शिकायत न मिले, इसका उसे ध्यान रखना चाहिए।

श्रीमती मुकर्जी के लिए यह बड़ा दुःखद अवसर था। बंटू कभी उसकी आंखों से ओझल नहीं हुआ था।

नीता मिस तो बराबर रोती रहीं। जब बंटू मोटर में बैठने लगे...

मिस ने पास जाकर उसके सिर पर हाथ फेरा। भरे गले से वह बोलीं—'वंटू, सुखी रहो।"

वंटू ज़ोर से हंसा। बोला—"मिस, आपको हमने माफ कर दिया। परन्तु मैं यूं सहज ढंग से आपका पीछा नहीं छोड़ने वाला। आप रोती क्यों हैं। देखती-भर जाइए, महीने-दो महीने में वंटू फिर यहीं। आपने ही पढ़ाया था न :

मेरा मन कहां अनत सुख पावै,
जैसे उड़ि जहाज को पंछी,
फिर उड़ि जहाज पै आवै।

पिताजी को भी अपने मन का कर लेने दो। फिर सब ठीक हो जाएगा।"

वंटू की बात सुनकर नीता मिस को भी हंसी आ गई। उन्होंने अपने आंसू पोंछे और कहा—"नहीं बेटे, ऐसा मत करना। अब तुम बड़े हो रहे हो। तुम्हें मन लगाकर पढ़ना चाहिए।"

मोटर रवाना हुई तो वंटू की आंखें भी गीली हो गईं। सारे नौकरों ने 'छोटे सरकार' को सलामी दी। गाड़ी के आगे खिसकते ही वंटू ने पीछे देखा। उसने नीता मिस को जीभ दिखाई और फिर चिल्लाया—"हम जल्दी लौटेंगे, मिस, चिन्ता मत करना।"

सुबह के नौ बजे कलेक्टर मुकर्जी 'आदर्श विद्यालय' के गेट पर थे। गेटकीपरों को सूचना थी, इसलिए किसीने उनकी गाड़ी नहीं रोकी।

प्रिंसिपल मोहन शर्मा ने कलेक्टर साहब का स्वागत किया। वंटू ने तब भी प्रिंसिपल को हाथ नहीं जोड़े। मुकर्जी साहब ने जब डांट लगायी तो उसने अजीब ढंग से 'नमस्ते' की। प्रिंसिपल को इसका कतई बुरा नहीं लगा। ऐसे कई लड़के वे देख चुके हैं। उनकी बूढ़ी आंखों से कुछ नहीं छिपा रह सकता।

प्रिंसिपल ने अपने एक सहायक को बुलाया। उसे आदेश दिया कि वह वंटू की टेस्ट ले ले। वंटू टेस्ट का नाम सुनकर खुश हुआ। यह एक अच्छा अवसर है। वह कोई काम नहीं करेगा। तब उसे भरती नहीं किया जाएगा।

सहायक शिक्षक उसे अपनी क्लास में ले गए। उसे दो-एक सवाल करने को दिए। वंटू ने एक भी सवाल सही नहीं किया। उन्हें आश्चर्य हुआ। कलेक्टर साहब कहते थे कि ट्यूटर वंटू को लगातार पढ़ाती रही है। उन्होंने वंटू की ओर देखा। उसकी आखें झुकी हुई थी। वह अंगूठे से सीमेंट की फर्श को घिस रहा था। उसके चेहरे पर शरारत के भाव स्पष्ट थे।

शिक्षक ने कहा—"तुम्हें तो कुछ भी नहीं आता। तुम्हारी टीचर ने क्या कुछ नहीं पढाया ?"

टीचर का नाम आते ही वंटू के सामने नीता मिस का चेहरा घूम गया। उन्होंने वंटू को क्या नहीं पढाया। उसकी हर शैतानी सहकर भी वे लगन के साथ पढाती रही हैं।

शिक्षक ने कहा—"जरूर तुम्हारी ट्यूटर गैर-जिम्मेदार है।"

"नहीं, नहीं"—वंटू एकदम चिल्लाया—"नीता मिस ऐसी नहीं थीं।"

"न होती तो…।"

वंटू ने कापी का दूसरा पृष्ठ खोला। पांच मिनट में ही उसने दोनों सवाल सही कर दिए।

शिक्षक वंटू की ओर देखते रहे। ऐसा लडका उन्हें पहली बार मिला है। वह मुस्कराए। उन्होंने आगे और परीक्षा नहीं ली। वंटू को लेकर वे प्रिंसिपल के कमरे में वापस आ गए। बोले—"ठीक है, नौवीं में दाखिल हो सकता है।"

प्रिंसिपल ने उसका नाम लिखा। फीस आदि के पैसे जमा किए और 'कमरा नम्बर बीस' वंटू के नाम के सामने लिख दिया गया।

प्रिंसिपल शर्मा कलेक्टर साहब और वंटू के साथ उस कमरे तक गए। कमरे में दो विस्तर थे। एक खाली था। कलेक्टर से उन्होंने कहा—"यह विस्तर वंटू के लिए है। यह टेबल है, और…।"

कमरा आलीशान था। उसमें बिजली थी। नहाने और धोने का कमरा साथ लगा था। बड़े-बड़े दो आईने थे। पलंग पर एक मोटा गद्दा बिछा था। कुर्सियां साफ और खूबसूरत थी। फर्श की सफेदी दूध की तरह चमक रही थी। दीवारों पर डिस्टेंम्पर पुता हुआ था। कमरे के बीच में एक बड़ी

दीवार घड़ी लगी हुई थी। ऊपर पंखा था।

कमरे को देखकर आशुतोष मुकर्जी खुश हुए। सारी सुख-सुविधाएं यहां पर हैं। वंटू को कोई परेशानी नहीं होगी।

वंटू फटी-फटी आंखों से सारे कमरे को देखता रहा। उसकी नजर रह-रहकर दूसरे खाली पलंग पर अटक जाती थी। वह जानना चाहता था कि यहां दूसरा लड़का और कौन है? परन्तु न तो वह पूछ सका, और न किसीने बताया।

वह पूछने के लिए मुंह खोलता, पर प्रिंसिपल को देखते ही कांप उठता। मोहन शर्मा ऊंचे-पूरे और तन्दुरुस्त आदमी थे। उनकी बड़ी-बड़ी सफेद मूंछों के ऊपर तिकोना काला चश्मा और भी डरावना लगता था। वे सूट पहनते थे और टाई बांधा करते थे। उनके हाथ में एक खूबसूरत बेत थी। उस बेत को देखकर वंटू को पसीना छूटने लगता था।

वंटू को प्रिंसिपल मोहन शर्मा को सौंपकर कलेक्टर साहब रवाना हो गए। जाते समय वंटू को वे कई बातें समझा गए। वंटू ने सबकी उपेक्षा की। उसके चेहरे पर अपने पिता के प्रति घृणा और उपेक्षा के भाव उभर आए। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि उसके पिता उसे अकेला छोड़कर कैसे जा सकते हैं।

पांच

पहला दिन

पहले दिन वंटू को 'आदर्श विद्यालय' के नियम समझाये गए। प्रिंसिपल ने उसे अपने पास बुलाया। कहा—"बेटे, इसे अपना घर समझकर रहो। तुम्हें किसी तरह की कोई परेशानी नहीं होगी। कोई तकलीफ हो तो सीधे मुझसे आकर कहो। वैसे तुम्हारी इन्चार्ज वार्डन हैं।

प्रिंसिपल ने वार्डन से वंटू का परिचय कराया। वंटू ने आंख उठाकर एक बार उस ओर देखा और फिर अपनी आंखें झुका लीं।

प्रिंसिपल ने कहा—"बेटे, बहनजी से नमस्ते करो।"

बंटू सिर झुकाये चुप बैठा रहा। वार्डन श्रीमती अपर्णा सेन ने हंसकर कहा—"कोई बात नही। कलेक्टर साहब ने मुझे सब बता दिया है।"

यह सुनकर बंटू ने भरी नज़रों से वार्डन की ओर देखा। उसने पूछा—"क्या बता दिया है?"

"यही कि तुम बहुत अच्छे लडके हो।"—अपर्णा सेन ने कहा।

बंटू की आदत पडी हुई थी। उसने जीभ दिखाई और कहा—"हां, बहुत अच्छा लडका हूं।"

प्रिंसिपल देखकर सन्न रह गए। उनके विद्यालय में शिष्टाचार के कड़े नियम हैं। कोई लड़का इस तरह अभद्र व्यवहार नही कर सकता। लेकिन वह पहला दिन था। वे चुप रहे। उन्होंने अपर्णा सेन को हुक्म दिया कि वे बंटू को ले जाएं और सब समझा दें।

अपर्णा बंटू को लेकर अपने कमरे में गईं। बंटू ने देखा, उनका कमरा भी व्यवस्थित और साफ-सुथरा था। सारी चीजें करीने के साथ लगी हुई थी। उन्होंने बंटू को बैठने के लिए एक कुर्सी दी। उसके लिए मिठाई लेने वे अन्दर चली गई। बंटू चारों ओर देखने लगा। फिर उसने मिठाई लाती हुई वार्डन को देखा। बोला—"मैं मिठाई नही खाता।"

"तुम्हारे पिता ने कहा था कि तुम्हे मीठी चीजें पसन्द हैं। हमें अपना ही समझो। इसे खा लो।"—वार्डन ने उसे समझाते हुए कहा।

"अपना कैसे समझ लू।" एकाएक बंटू ने कह दिया—"मैंने नीता मिस को भी अपना नही समझा।"

"कौन नीता मिस?"—वार्डन ने पूछा।

"मेरी टीचर, और कौन।" खड़े शब्दों में बंटू ने जवाब दिया।

वार्डन ने चाहा कि वे और भी प्रश्न बंटू से करें। पूछें कि नीता मिस ने तुम्हें यही सिखाया है। परन्तु वह पहला दिन था, वे चुप रहीं। बहुत कहने पर भी बंटू ने मिठाई नही खाई। वह बोला—"हम खाएंगे तो अपने पैसों से खरीदकर खाएंगे।"

वार्डन ने इसका बुरा नहीं माना। वह मुस्कराती रहीं। बंटू की ये हरकतें देखकर उन्होंने उसे कोई खास नियम भी नही बताए। कहा—"धीरे-धीरे तुम सारे नियम स्वयं समझ लोगे।"

वंटू ने व्यंग्य-भरी हंसी में कहा—"जी···।"

वंटू अपने कमरे में पहुंचा तो वहां एक लड़का और था। वह असल में उसका सहयोगी लड़का था। दूसरा पलंग उसीका था।

कमरे में पहुंचते ही उस लड़के ने कहा—'हलो, नमस्ते।"

वंटू ने सिर मटकाकर अपनी जीभ दिखा दी। लड़का यह देखकर दंग रह गया। किन्तु वह कुछ नहीं बोला। उसी तरह शान्त वह अपनी चादर ठीक करता रहा। वंटू ने पूछा—"तुम कौन हो ?"

"मेरा नाम मनोज है।"

"होगा, मुझे तुम्हारे नाम से क्या मतलब। मैं यह जानना चाहता हूं कि तुम इस कमरे में कैसे आए ? यह मेरा कमरा है।"

मनोज जोर से हंस दिया। हंसते हुए वह वंटू की भारी नज़रें देखता रहा। वंटू की आंखों में तिरस्कार के भाव स्पष्ट थे।

मनोज ने कहा—"दोस्त, क्रोध करना ठीक नहीं है। क्रोध पाप की जड़ है।"

वंटू जोर से चिल्लाया—"शटअप। मेरे कमरे से बाहर चले जाओ···।"

मनोज उसके थोड़ा पास आया। बोला—"मित्र, हम दोनों एक-से हैं। एक लड़के को दूसरे लड़के के साथ आदमियों की तरह व्यवहार करना चाहिए। हम अपने व्यवहार से ही तो पहचाने जाते हैं।"

वंटू अपना धीरज खो रहा था। उसे कभी किसीने इस तरह शिक्षा देने की हिम्मत नहीं की थी। वह मनोज के पास आ धमका। बोला—"क्या कहा ?"

मनोज को अचरज हुआ। वंटू तो लड़ने के लिए आमादा हो रहा है। विद्यालय में लड़ने से बड़ा और कोई अपराध नहीं है। ऐसे लड़कों को बड़ी सख्त सजा मिलती है। उसने वंटू को समझाया—"मित्र, नहीं बोलना तो मत बोलो। यूं झगड़ो मत। यदि हमारे कप्तान ने देख लिया तो···।"

"तो क्या ?"—वंटू जोर से चिल्लाया और उसने एक चांटा मनोज के गाल पर जड़ दिया। मनोज पहले ही दिन इस तरह के व्यवहार के लिए तैयार नहीं था। वह हतप्रभ हो, उसे देखने लगा। वह चाहता तो चिल्ला देता। आवाज़ सुनते ही वहां और लड़के आ जाते और वंटू को वार्डन के

सामने पेश किया जाता। लेकिन उसने ऐसा नहीं किया। वह चुपचाप अपने पलंग की ओर वापस आ गया।

उसी समय घंटी बजी। घड़ी उस समय एक बजा रही थी। वह लंच का समय था। मनोज कपड़े बदलकर अकेले कमरे से बाहर निकल आया। बाहर आया तो उसे और लड़के मिल गए। एक ने पूछा—"तुम्हारे कमरे में कोई नया पंछी आया है?"

—"हां। बड़ा अजीब है।"

दूसरे ने कहा—"अजीब। कैसे?"

मनोज ने चांटे वाली सारी घटना बता दी। कहा—"वह तो बोलना भी नहीं चाहता।" तीसरे लड़के ने लानत भेजी। कहा—"अशोक, तुमको चुप नहीं रहना चाहिए। ऐसे लड़के की शिकायत तुरन्त करनी चाहिए।"

"नहीं, मैं नहीं करूंगा।"—अशोक ने दृढ़ता से कहा।

"तो हम करेंगे।"—एक और लड़के ने उत्तर दिया।

सारे लड़के भोजन-गृह में एकत्रित हो गए। बंटू सबसे पीछे आया। वह भी जबरन लाया गया था। चपरासी ने देखा, सभी लड़के भोजन के लिए चले गए हैं। अकेला बंटू रह गया है। उसने बंटू को आवाज दी। उसे जाना पड़ा।

भोजन परोसा जाने लगा। तभी एक लड़के ने खड़े होकर बंटू की शिकायत कर दी। वार्डन उस समय कमरे में घूम रही थी। वह देख रही थी कि हर लड़के को ठीक और पूरा भोजन मिले। भोजन की मात्रा बंधी हुई थी। उसके बाद फल और मेवे दिए जाते थे।

उन्हें विश्वास हो गया कि बंटू ने ऐसा जरूर किया होगा। एक सेब छीलते हुए वे बंटू के पास आईं। उन्होंने कहा—"बंटू, खड़े हो जाओ।"

उनकी आवाज इतनी सख्त थी कि बंटू को खड़ा होना पड़ा। फिर उन्होंने मनोज को खड़े होने का आदेश दिया। वह भी खड़ा हो गया। और लड़के खाना छोड़कर इन दोनों की ओर देखने लगे।

वार्डन ने मनोज से पूछा—"तुमने यह शिकायत क्यों नहीं की?"

मनोज ने नीचे सिर झुका लिया। वह कुछ नहीं बोला।

वार्डन ने पूछा—"क्या यह सच है?"

मनोज जानता था, झूठ बोलना यहां अपराध है। उसने सिर हिला-
कर कहा—"जी।"

"तब तुमने शिकायत क्यों नहीं की?"

मनोज के पास इस प्रश्न का कोई उत्तर नहीं था।

वार्डन ने बंटू से पूछा—"तुमने ऐसा क्यों किया?"

बंटू ने बिना हिचक के कहा—"यह हमें परेशान करता था।"

"किस तरह?"

"मुझसे आकर बातें कर रहा था।"

"यह तो परेशान करना नहीं हुआ।"

"मैं नहीं चाहता, कोई मुझसे बात करे।"

वार्डन ने ज़ोर से डांटा—"बंटू, तुम विद्यालय में पढ़ने आए हो। हर विद्यालय के कुछ नियम होते हैं। तुम्हें उन नियमों के अन्तर्गत रहना होगा।"

बंटू ने कहा—"मैं नियम-वियम नहीं जानता।"

सारे लड़के उसकी बात सुनकर हंस पड़े। अपर्णा को क्रोध आ गया। किसी तरह उन्होंने उसे दबाया। बंटू के और पास आकर वे बोलीं—"बंटू, यह पहली शिकायत है। आगे कोई शिकायत आएगी तो यहां की 'विद्यार्थी परिषद्' के सामने तुम्हें जाना होगा। फिर जो सज़ा मिले, तुम जानो। तुम्हारे लिए अच्छा यही है कि तुम मनोज से अपने किए की माफी मांग लो।"

"माफी!"—बंटू ने सिर उठाकर कहा—"मैंने कभी किसीसे माफी नहीं मांगी।"

"माफी मांगना बुरा तो नहीं,"—वार्डन ने कहा।

"माफी छोटे आदमी मांगते हैं। मैं ऐसा कभी नहीं कर सकता।"

बंटू की यह बात सुनकर एक हल्की सरगरमी सारे कमरे में दौड़ गई। यह एक ऐसा उत्तर था, जिसकी किसीको आशा नहीं थी। 'आदर्श विद्याल में सभी लड़के बराबरी के नाते पढ़ते हैं। वहां छोटे-बड़े और गरीब-अमी का कोई भेद नहीं है। सबके साथ एक-सा व्यवहार होता है।

मनोज चिन्तित और परेशान रहने लगा। वह यहां के सभी निय

से परिचित था। वह जानता था कि बंटू के लिए ऐसा व्यवहार करना मुसीबत मोल लेना है। उसने कहा—"बहनजी, आप चिन्ता न करें। बंटू कल ही हमारे विद्यालय मे आया है। फिर उसने मुझे ही तो मारा है। मैं उसे माफ करता हूं।"

बंटू ने आंख उठाकर उसे देखा। वह जैसे कहना चाहता था कि माफ करने वाले तुम कौन होते हो! परन्तु अब तक वह डर भी गया था। अपना खाना छोड़कर बंटू चुपचाप वहा से भाग गया। अपने कमरे में आकर वह बिस्तरे पर लेट गया और रोने लगा।

उस दिन वह स्कूल नही गया। किसी काम मे उसने भाग नहीं लिया। पहला दिन होने के कारण उसे छूट भी मिल गई। किसीने उससे कुछ नही कहा। लेकिन ये सारी बातें प्रिंसिपल के कानों मे डाल दी गईं।

उन्हें चिन्ता हुई। उन्होंने वार्डन से कहा—"बंटू बिगड़ा हुआ लड़का है। कलेक्टर साहब सब कुछ बता गए हैं। वह इकलौता भी है। इससे और बिगड़ गया है। उसकी अकेले रहने की आदत हो गयी है। तुम्हे काफी सावधानी से उसे देखना है। यह हमारे विद्यालय की प्रतिष्ठा का प्रश्न है।"

वार्डन ने आश्वासन दिया कि उन्हें इसकी चिन्ता है। वे सब देखती रहेंगी।

बंटू रात मे काफी देर तक नही सोया। उसे लगा, उसने एक बडी गलती की है। नीता मिस इन सबसे बडी अच्छी थी। उसे कितना चाहती थी। उसके साथ कितना प्यार करती थी। और वह है जो हमेशा असभ्यों की तरह उनसे पेश आता रहा। उसे ऐसा नही करना चाहिए था।

उसका दिमाग चक्कर खाने लगा। फिर वह एकाएक अपने बिस्तरे से उठ बैठा। उसका साथी चादर ओढ़े सो रहा था। उसके प्रति बंटू के मन में घृणा बनी रही।

वह दरवाजे के पास गया। उसने चाहा कि वह दरवाजा खोलकर बाहर जाए। थोड़ा बाहर घूम लेगा तो दिमाग का भारीपन दूर हो जाएगा। लेकिन दरवाजा बन्द था। उसे हैरानी हुई।

"यह तो जेल हो गयी"—उसने अपने-आप कहा। यह वापस आकर अपने विस्तरे में फिर लेट गया। उसके सामने वार्डन श्रीमती अपर्णा सेन का चेहरा घूम गया। एक दुवली-पतली सुन्दर स्त्री। उनकी आंखों का सुनहरा चश्मा वहुत अच्छा है। नीता मिस का चश्मा इतना अच्छा नहीं था। परन्तु चश्मे के भीतर से झांकती उनकी आंखें अजीव हैं। उसे लगा जैसे उन आंखों के रेशे वाहर निकलकर उसकी आंखों में घुसते जा रहे हैं। वह अपनी आंख मीचने लगा। मीचते-मीचते उनमें दर्द हो गया। वे जलने लगीं।

चीखना चाहकर भी वह नहीं चीख सका। यहां कौन है जो उसकी सुनेगा। घर में होता तो वहां के सभी लोग उसकी वात मानते। उसे पहली वार पश्चात्ताप हुआ। नीता मिस के साथ उसने कभी अच्छा व्यवहार नहीं किया। इसके वावजूद उसकी मां ने हमेशा उसीका साथ दिया। नीता मिस भी कितने सहज ढंग से सव भूल जाती थी।

'और एक ये हैं···' उसने अपने-आप कहा—'कहती थीं, आगे से गड़वड़ी की तो मामला 'विद्यार्थी परिषद्' को सौंप दिया जाएगा···एं।' उसने सिर हिलाया।

वड़ी देर तक वह अपने-आप कुछ वड़वड़ाता रहा। फिर वह उठकर वैठ गया। उसने तय कर लिया कि इस विद्यालय में वह नहीं पढ़ेगा। यहां से वाहर जाकर ही रहेगा। वाहर जाने के लिए वह हर सम्भव प्रयत्न करेगा। उसने सोचा—वह यहां के नियमों का हमेशा उल्लंघन करेगा। आखिर परेशान होकर ये पिताजी को पत्र लिख देंगे। वे मुझे आकर वापस ले जाएंगे। इसके साथ ही उसने प्रतिज्ञा की कि वापस जाकर वह नीता मिस के साथ कभी खराव व्यवहार रहीं करेगा। कभी नहीं···

वह तरह-तरह की वातें सोचता रहा। सोचते-सोचते उसे नींद आ गई।

सुवह मनोज ने उसे उठाया। उसकी चादर खींचकर वोला—"वंटू, उठो। घंटी वज गई है। हमें सुवह की दौड़ में शामिल होना है।"

"नहीं, मैं नहीं जाऊंगा।" उसने चादर खींचकर फिर ओढ़ ली। मनोज ने समझाया—"यह जरूरी है, वंटू। सुवह की हवा ताज़ा होती है। जरा

बाहर तो निकलो, कितना अच्छा लगता है। सुबह उठने से सारे दिन दिमाग में ताजगी बनी रहती है।"

बंटू ने जोर से कहा—"मुझे नहीं चाहिए ताजगी। मैं नहीं उठूंगा।"

मनोज चुपचाप अकेले बाहर चला गया। मैदान में आकर उसने कप्तान से बंटू की शिकायत कर दी। विद्यालय का नियम था कि साथ का कोई लड़का कुछ गलत काम करे तो दूसरे लड़के को तुरन्त शिकायत करनी चाहिए। वह शिकायत नहीं करेगा तो उसे भी अपराधी माना जाएगा।

कप्तान ने एक दूसरे लड़के को बंटू के पास भेजा। वह दौड़ता हुआ गया। उसने जाकर बंटू की चादर खींची और सख्त आवाज में बोला—"चलिए, उठिए, इसी समय।"

बंटू ने आखें खोलकर देखा। वह ऊंचा और सख्त लड़का सामने खड़ा था। वह उससे तगड़ा था। उसका रंग काला था। उसे वह दैत्य की तरह लगा। उसके अन्दर भय की लहरें उठीं और ऊंची उठती गईं। उसे तुरन्त बिस्तर से उठना पड़ा।

मैदान में गया तो उसने देखा सभी लड़के और लड़कियां वहां मौजूद हैं। उसने उनपर एक उड़ती हुई नजर डाली। तभी कप्तान ने उसे अपने पास बुलाया। बंटू को सारे लड़कों के सामने खड़ा किया गया। इतने लड़कों के सामने खड़े होने का उसका पहला अवसर था। कप्तान ने आदेश दिया—"तुम यहीं खड़े-खड़े कवायद करो।"

उसे बड़ी लज्जा आई। भीतर से वह पानी-पानी हो गया। ऐसा जानता तो पहले ही उठ जाता। बिना कुछ कहे उसे इतने सारे लड़कों के सामने कवायद करनी पड़ी।

कवायद के बाद सारे लड़के नाश्ते के लिए गए। किसीने बंटू से कुछ नहीं कहा। वह सोचता था, इसके बाद ये लड़के उसे चिढ़ाएंगे। परन्तु किसीने उसे नहीं चिढ़ाया।

नाश्ते में सबको एक गिलास दूध, एक अण्डा और दो बिस्कुट दी गई।

"यह मैं नहीं खाऊंगा।" बंटू ने कहा—"इतने सुबह कहीं नाश्ता किया जाता है। मुझे तो चाय चाहिए।" उसके पास एक लड़की बैठी थी। बंटू की बात सुनकर वह हंसी। परन्तु उसने अपनी हंसी रोक

"वंटू, यहां चाय नहीं मिलती। चुपचाप नाश्ता कर लो। फिर पढ़ाई की घंटी वज जाएगी।"

"क्यों कर लूं ? क्या मेरी अपनी कोई मरजी नहीं ?"

लड़की ने उसकी ओर देखा। वोली—"मैं नहीं जानती, परन्तु यहां के नियम यही हैं।"

"मैं उन नियमों को तोड़ूंगा"—वंटू ज़ोर से चिल्लाया। उसकी आवाज़ तेज़ थी। सुनकर सभी उसकी ओर देखने लगे। कप्तान ने भी यह सुना। उसने पूछा—"वंटू, क्या बात है ?"

वंटू नहीं बोला।

कप्तान ने पास वाली लड़की से पूछा—"आशा, वंटू क्या कह रहा था ?"

"उसे चाय चाहिए।"—आशा ने कहा।

"अच्छा।"—कप्तान ने केन्टीन के वैरे को हुक्म दिया—"वंटू को चाय दो और रोज़ उसे चाय दिया करो।"

फिर उसने वंटू से कहा—"वंटू, हम विद्यार्थी हैं। पहले के विद्यार्थी गुरुओं के आश्रम में रहते थे। उन्हें आश्रमों के कड़े नियमों का पालन करना होता था। हमारे यहां ऐसे कड़े नियम नहीं हैं। जो नियम हैं, वे हम सब लड़कों ने ही मिलकर बनाए हैं। जो चीज़ बुरी है, हम उसे छोड़ना चाहते हैं।"

"तो क्या चाय पीना बुरा है ?"—वंटू ने पूछा।

"नहीं।"—कप्तान ने कहा—"चाय पीना बुरा नहीं है, लेकिन चाय की आदत डालना बुरा है। इसीलिए हमने यहां चाय बन्द की है। हम केवल चार बजे के नाश्ते में चाय लेते हैं।"

"मुझे ऐसे स्कूल में नहीं रहना"—वंटू के मुंह से एकाएक निकल गया।

सुनकर सभी लड़के और लड़कियां चौंक पड़े। एक हल्की-सी सरसराहट वहां दौड़ गई। आशा ने उसकी ओर देखा। बोली—"यहां क्या अच्छा नहीं लगता, वंटू ? हम अच्छे नहीं लगते ?"

"हां···" वंटू ने तेज़ी से कहा—"हमें कुछ अच्छा नहीं लगता। कोई अच्छा नहीं लगता।"

"चि···च, चि···च ! बेचारा···।" आशा ने उसकी ओर देखकर

मुसकरा दिया।

वंटू तैश में आ गया। उसने उठकर आशा की चोटी जोर से खींच दी। वह सी-ई-ई-ई करके रह गई। सारे लड़के वंटू के इस व्यवहार को देखकर चौंक उठे।

कप्तान ने खड़े होकर वंटू से कहा—"खड़े हो जाओ।"

वंटू खड़ा नहीं हुआ। कप्तान ने सुबह वाले लड़के की ओर उंगली दिखाई। उसे देखते ही वंटू डर गया और चुपचाप खड़ा हो गया। लड़का अपनी जगह लौट आया।

कप्तान ने वंटू को आदेश दिया—"इसी तरह खड़े रहो।"

वंटू को खड़ा रहना पड़ा। उसके सामने और कोई रास्ता नहीं था। लेकिन वह दो मिनट ही खड़ा रहा होगा कि आशा खड़ी हो गई। कप्तान से बोली—"मैं वंटू को माफ करती हूं।"

"वंटू, बैठ जाओ!"—कप्तान ने आदेश दिया। वंटू को यह अच्छा नहीं लगा। एक छोटी-सी लड़की उसे माफी देती है। वह कौन होती है, माफ करने वाली। उसने भरी आंखों से माला की ओर देखा। आशा मुस्करा रही थी। फिर उसने कप्तान की ओर देखा। कप्तान सख्त निगाहों से उसकी ओर देख रहा था। वह फिर से चिल्लाया—"वंटू, बैठ जाओ।"

इस बार वंटू को विवश होकर बैठना पड़ा। वह बैठ तो गया, लेकिन उसे लगा कि इससे बड़ी पराजय और कोई नहीं हो सकती।

'मैं पराजित होकर नहीं रहूंगा। ऐसे विद्यालय मे मैं नहीं पढ सकता।' वह अपने-आप बुदबुदाया।

तभी घण्टी बज गई। सब लड़के-लड़कियां अपने-अपने कमरे मे चले गए।

कमरे मे पहुंचते ही वार्डन श्रीमती अपर्णा सेन आ गईं। मुसकराते हुए उन्होंने वंटू से पूछा—"तुम्हें कोई परेशानी तो नहीं?"

वंटू को कम परेशानियां नहीं थीं। लेकिन उसे वार्डन से चिढ़ थी। उनके सामने परेशानियो की चर्चा करना व्यर्थ है। वह ...

वार्डन ने फिर वंटू के साथी की ओर देखा।

मनोज ?"

"जी, सुबह से मेरा सिर भारी है। न जाने क्यों ?"

"अच्छा।" वार्डन ने कहा और वहां से चली गयीं।

दस मिनट के भीतर ही एक डाक्टर वहां आ गया। उसने मनोज की परीक्षा ली। एक गोली देकर डाक्टर ने कहा—"ठंडे पानी से अभी यह गोली खा लो।" मनोज ने तुरन्त गोली खा ली।

वंटू ने तिरछी नज़रों से डाक्टर को देखा। उसे लगा, वह डाक्टर भी बेकार है। उसे अपने यहां आने वाले डाक्टरों की याद आ गई। वे कितनी तरह से, कितने मीठे ढंग से वंटू से बातें किया करते थे। पर इतनी-सी बात नहीं समझ सका कि वे डाक्टर एक कलेक्टर के घर आया करते थे।

डाक्टर चला गया तो वंटू अपने सिर पर हथेली रखकर कुर्सी पर बैठ गया। उसके सामने खुली हुई पुस्तक थी। उसने अपने साथी से यह भी नहीं पूछा कि उसका सिर कब से भारी है, और अब कैसा है ?

वह उसी तरह पुस्तक पर आंखें गड़ाए बैठा रहा। मनोज से ही नहीं रहा गया। वह उठकर वंटू के पास गया। बोला—"वंटू, तुम परेशान नज़र आ रहे हो। तबियत तो ठीक है न ?"

"हां···" वंटू ज़ोर से चिल्लाया—"और तबियत ठीक भी न हो तो ऐसे बोर डाक्टर से मुझे अपनी दवा नहीं करानी।"

"क्या मतलब ?" मनोज ने पूछा।

"मतलब पूछने वाले तुम कौन होते हो।"—वंटू उसी तरह चिल्लाया।

"मैं तुम्हारा सहयोगी हूं। तुम्हारा साथी हूं। क्या तुम मुझे अपना कुछ नहीं समझते ?" मनोज ने आश्चर्य से पूछा।

"नहीं।" वंटू ने कहा और आगे कुछ कहते-कहते वह रुक गया। मनोज को उसका यह व्यवहार अच्छा नहीं लगा। सहपाठियों में तो सहयोग की भावना होनी चाहिए। वंटू अपने को जाने क्या समझता है।

मनोज ने तब भी बुरा नहीं माना। वह इस विद्यालय में तीन सालों से पढ़ता है। यहां के नियमों को वह जानता है। उसे सिखाया गया है कि कभी किसी बात का बुरा मत मानो। हमेशा खुश रहो और अपने दोस्त की सारी गलतियों को माफ कर दो। एक दोस्त एक अच्छे भाई के समान

है। आपस में एक-दूसरे का आदर करो।

मनोज के मन में ये शिक्षाएं गहरी जम गई थी। वह तब भला वंटू की बातों का बुरा क्यों मानता।

छह

आंखें ही आंखें

कक्षा में वंटू को पहली पंक्ति में बैठाया गया।

वह ऊंचाई में सबसे छोटा था। घण्टी बजते ही क्लास का कप्तान सामने आया। उसने वंटू के लिए एक जगह खाली कराई। उसने वंटू से कहा—"यह तुम्हारी जगह है। तुम्हे रोज यहां बैठना है।"

वंटू चुपचाप उस जगह पर बैठ गया। उसे अचरज हुआ। उसके साथ बैठने वाला उसके कमरे का सहयोगी मनोज ही था। मनोज ने मुसकराकर वंटू को बैठने का इशारा किया। वंटू निर्दिष्ट जगह पर एक अजीब ढंग से बैठ गया। उसके बैठने का तरीका कुछ ऐसा था, जैसे किसी को जबरन अनजानी और अनचाही जगह पर बैठा दिया जाता है।

इसी बीच कक्षा के शिक्षक आ गए। उनके भीतर आते ही सारे लड़के खड़े हो गए। वंटू को यह बात अच्छी न लगी। उसकी टीचर नीता मिस आती थी, तो वह कुर्सी पर ही बैठा रहता था। कभी वह खड़ा नहीं हुआ। यहां शिक्षक के आते ही सारी कक्षा उठकर खड़ी हो जाती है।"

लेकिन वंटू को अधिक सोचने का मौका नहीं मिला। कप्तान फिर सामने आ गया। उसने विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए कहा—"दोस्तो, आज से हमारे साथियों में एक और साथी की वृद्धि हो गयी है। हम सब उसका स्वागत करते हैं। उसका नाम है—वंटू।"

कक्षा के सारे लड़के और लड़कियां आंख उठाकर देखने लगे।

कप्तान ने कहा—"आइए, वंटू जी। आप सामने आइए।"

वंटू अपनी सीट से नहीं उठा। मनोज ने उसे इशारा किया। कहा—"वंटू, उठकर चले जाओ। कप्तान का कहना न मानना अनुशासन भंग

करना है।"

वंटू ने उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया। कप्तान ने फिर कहा—"दोस्तो, लगता है, वंटू शरमा रहे हैं।···पहले दिन ऐसा होता ही है। परन्तु शरमाने की कोई बात नहीं है। हम सब तुम्हारे साथी हैं।" उसने फिर दोहराया—"आइए, वंटू जी।"

वंटू को लगा, यदि वह अब भी नहीं उठता तो वैसा ही कोई काला लड़का उसके सामने आकर खड़ा हो जाएगा। वंटू चुपचाप उठकर सामने खड़ा हो गया।

कक्षा के सारे लड़कों ने उसे देखा। फिर सब एक साथ खड़े हो गए। सब एकसाथ बोले—"हम सब अपने बीच वंटू का स्वागत करते हैं।"

दो बार कक्षा के सारे लड़कों ने यह बात दोहराई। फिर सब बैठ गए। कप्तान भी अपनी जगह पर आकर बैठ गया। तब कक्षा के शिक्षक सामने आए। उन्होंने वंटू की पीठ पर हाथ रखा। बोले—"वंटू, ये सब तुम्हारे साथी हैं। तुम्हारे अपने हैं। यह विद्यालय भी तुम्हें पसन्द आएगा। मन लगाकर पढ़ना और एक अच्छा लड़का बनने की कोशिश करना।"

वंटू ने एकदम कहा—"तो क्या मैं अच्छा लड़का नहीं हूं?"

सारी कक्षा एकसाथ हंस पड़ी। शिक्षक ने कहा—"ऐसी बात नहीं है। हम पहले दिन हर लड़के से यही कहते हैं। तुम अच्छे लड़के हो, तो हम सबको खुशी है।"

वंटू अपनी सीट पर जाकर बैठ गया। शिक्षक ने हाजिरी का रजिस्टर खोला। वे एक-एक लड़के का नाम लेकर पुकारते। वह लड़का खड़ा हो जाता और 'येस सर' कहकर बैठ जाता। सारी कक्षा की हाजिरी हो गई। सबसे अन्त में वंटू का नाम पुकारा गया। वंटू अपनी सीट पर बैठा रहा। उसने कोई जवाब नहीं दिया।

शिक्षक ने सिर उठाकर वंटू की ओर देखा। बोले—"वंटू, तुम्हारा नाम लिया गया है।"

वंटू खड़ा हो गया। बोला—"लेकिन मैं तो हाज़िर हूं, आप यह बात जानते हैं।"

—"तो भी वैसा बोलना चाहिए। तुमने और लड़कों को बोलते नहीं

सुना ?"

"सुना है, पर···।" बंटू आगे कुछ नहीं बोल पाया। वह यह नहीं समझ पाया कि अभी तो लड़कों ने उसका स्वागत किया है। फिर हाज़िरी देने का क्या मतलब है ?

शिक्षक उठकर खड़े हो गए। बोले—"बंटू, कक्षा में इतने सारे लड़के हैं। शिक्षक तो अकेला होता है। उसे क्या पता कौन नहीं आया। इसलिए हाज़िरी ली जाती है। खड़े होकर 'येस सर' कहने से सारी कक्षा के लड़के उसे देख लेते हैं। कोई गलत हाज़िरी नहीं दे सकता।"

बंटू कुछ नहीं बोला।

शिक्षक ने कहा—"अच्छा, तो 'येस सर' कहो, और बैठ जाओ।"

बंटू ने धीरे से उखड़े शब्दों में 'येस सर' कहा और बैठ गया।

कक्षा की पढ़ाई शुरू हो गई। परन्तु उस दिन बंटू लगातार यही सोचता रहा कि 'येस सर' कहने की ज़रूरत क्या है ? नीता मिस ने तो कभी उसकी हाज़िरी नहीं ली।

'आदर्श विद्यालय' में आए बंटू को एक सप्ताह बीत गया। उसे तब भी अपने घर की याद बराबर आती रही। वहां कितना सुख था। नौकर-चाकर थे। और पढ़ाने के लिए नीता मिस जैसी टीचर थी। बंटू को अपनी मां की याद बरबस आ जाती। वे कितना लाड़-प्यार करती थीं। पिताजी कितने अच्छे थे। ऊपर से कई बार सख्त होने पर भी उनका मन कितना कोमल था।

यहां सारे काम उसे स्वयं अपने हाथ से करने पड़ते हैं। न कोई नौकर, न चाकर। अपनी कोई मर्ज़ी भी नहीं। हमेशा दूसरों की मर्ज़ी पर रहना पड़ता है। उसे एक साथ कई चेहरे घूमते दिखाई दिए। उनमें प्रिंसिपल का चेहरा था। वार्डन का चेहरा था। कक्षा के शिक्षक और कप्तान का चेहरा था। इनके बीच उस मुस्टंड और तन्दुरुस्त काले लड़के का भी चेहरा था। सहयोगी अशोक का चेहरा भी दूर नहीं था। ये सारे चेहरे जैसे उसे एक-साथ घूर रहे हैं। कितनी आंखें हैं, जो उसपर हरदम लगी रहती हैं। इनसे छिपना कतई सम्भव नहीं है।

बंटू को अपने पिता पर गुस्सा आ गया। वह सोचने लगा—'यदि मैं
के लिए इतना ही भार था, तो क्या मेरे लिए यही एक स्कूल रहा गया
?' उसे नीता मिस की वह बात भी याद आई। उन्होंने कहा था—
आदर्श विद्यालय से अच्छा स्कूल और दूसरा नहीं है।"

बंटू को लगा ये सब उसके दुश्मन हैं। जान-बूझकर उन्होंने उसे यहां भेजा है ताकि वह और परेशान हो। 'मैं ऐसे स्कूल में नहीं रहूंगा...' वह अपने-आप बोला—'मैं बराबर ऊधम मचाता रहूंगा और अनुशासन तोड़ता रहूंगा। एक दिन ऐसा अवश्य आएगा कि विद्यालय के सारे लोग मुझसे तंग आ जाएंगे।'

इतना सोचने के बावजूद बंटू को अपना रास्ता बदलना पड़ा। सुबह उठना उसके लिए ज़रूरी हो गया। वह उठने में ज़रा-सी देर करता कि वही काला लड़का उसके पास आकर खड़ा हो जाता। इस भय का परिणाम यह हुआ कि एक सप्ताह के भीतर ही बंटू की सुबह की नींद उड़ गयी। वह अब अपने-आप खुल जाती और बंटू उठ जाता। सुबह जाकर उसे दौड़ना पड़ता और कवायद भी करनी पड़ती थी। इससे उसके हाथ-पैरों में दर्द होने लगा। परन्तु उसने यह किसीसे कहा नहीं। जब दर्द शुरू हुआ तो उसके मन में एक नया ख्याल आया। वह सोचने लगा कि धीरे-धीरे यह दर्द बढ़ेगा। वह फिर बीमार पड़ जाएगा। तब उसे घर जाने की छुट्टी मिल जाएगी।

परन्तु ऐसा नहीं हुआ। हाथ-पैरों का दर्द धीरे-धीरे अपने-आप मिटने लगा। उसे सुबह एक नई ताज़गी महसूस होने लगी। दिन-भर वह ताज़ा रहने लगा। अब वह चाहने लगा कि कोई ऐसा साथी भी हो, जिसपर व विश्वास कर सके।

मनोज लगातार उपेक्षाओं के बावजूद बंटू से दूर नहीं हटा।

वह रविवार का दिन था। बंटू नदी के किनारे टहल रहा था। नदि के किनारे घूमना उसे हमेशा पसन्द रहा है। कई बार तो वह काफी तक नदी के किनारे बैठा रहता। अपलक सामने फैले सौन्दर्य को दे और देखता रहता। उस दिन भी वह यूं ही घूम रहा था। तभी उसने दे सामने से मनोज आ रहा है। उसे आता देखकर बंटू ने चेहरा पलट लि मनोज ने तब भी उसे नहीं छोड़ा। वह बंटू के पास आ गया। बोल

"बंटू, तुम अब भी मुझसे घृणा करते हो ?"

"हां"…बंटू ने बिना हिचक के कह दिया—"मैं तुमसे ही नहीं, इस विद्यालय के हर चेहरे से घृणा करता हूं। क्योंकि तुम सब मेरे दुश्मन हो।"

"नहीं, बंटू"—मनोज ने कहा—"तुम्हें थोड़े दिनों में सब पता लग जाएगा। तुम देखोगे कि इस विद्यालय का हर सदस्य एक-दूसरे से कितना गहरा प्यार रखता है।"

"यह कभी नहीं हो सकता। और हुआ भी तो मैं इसके पहले ही यहां से भाग जाऊंगा।"

बंटू की यह बात मनोज के लिए चौंका देने वाली थी। इस विद्यालय में आसानी से लोगों को जगह नहीं मिलती। कई साल तक उनके नाम 'प्रतीक्षा' की सूची में लिखे पड़े रहते हैं। तब कहीं नम्बर आता है। नम्बर आ भी गया तो यहां इतना खर्च पड़ता है कि बहुत-से लड़के भरती ही नहीं हो पाते। मां-बाप के लिए और भी बहुत-से खर्च होते हैं। यही एक अकेला खर्च नहीं है।

मनोज ने गौर से बंटू को देखा। बंटू के चेहरे पर कोई शिकन नहीं थी। लेकिन वह तब भी जैसे नाटक कर रहा था। बार-बार अपनी शकल इस तरह बनाता, जैसे वह बहुत परेशान हो।

मनोज वहां से चल दिया। चलते-चलते उसने कहा—"बंटू, जब तुम्हारा गुस्सा उतर जाए तो वहां आ जाना। नीचे ढाल पर एक बगीचा है। उस बगीचे में रंग-बिरंगी तितलियां हमेशा घूमती रहती हैं। मैं जाकर उन्हींके साथ खेलूंगा।"

"सच।" बंटू ने पूछा। तितलियों के साथ खेलना उसे हमेशा पसन्द रहा है। रंग-बिरंगी तितलियां अपने-आपमें कितनी सुन्दर लगती हैं। उन्हें पकड़ने में कितना मजा आता है।

"हां, सच", अशोक ने कहा।

"तो मैं साथ चलूंगा। लेकिन तितलियां मैं तुमसे अलग पकड़ूंगा।"

बंटू की यह बात अशोक ने मंजूर कर ली। दोनों साथ-साथ आगे चले। नीचे एक बाग था। बाग में कई तरह के फूल थे। गुलाब, गेंदा, चमेली, चम्पा, जासौन और डेलिया तथा मोंगरा। हरसिंगार के फूल सारे

ाग में थे। वंटू को यह जगह बड़ी अच्छी लगी। फूलों के झुरमुट और न झुरमुटों में घूमती बेशुमार तितलियां।

वंटू दौड़-दौड़कर सारे बाग में घूमता रहा। उसने कई तितलियां पकड़ीं। मनोज तितलियों को पकड़ता तो था, परन्तु उन्हें फिर छोड़ भी देता था। वंटू ने तितलियों को नहीं छोड़ा। उसने कहा—"मनोज, मैं तुम्हें इनका तमाशा अपने कमरे में दिखाऊंगा।"

"कैसा तमाशा ?" मनोज ने पूछा।

"वहां देखना।" वंटू ने कहा।

थोड़ी देर बाद दोनों वापस लौट आए। कमरे में आकर वंटू ने तितलियों को 'यू डी कोलोन' पिलाया। टेबल पर उसने कुछ फूल रखे। तितलियों को उसने उन्हीं फूलों पर बैठाल दिया। दोनों ने अचरज से देखा, तितलियां अचल अपनी जगह बैठी हैं। वे उड़कर नहीं भागीं।

दोनों को उनका इस तरह बैठना अच्छा लगा। वंटू तो खुशी के मारे बांसों उछलने लगा। यहां आकर वह कभी इतना खुश नहीं रहा।

थोड़ी देर में कई लड़के-लड़कियां वहां जमा हो गए और वह तमाशा देखने लगे। सभीको अचरज हुआ। वंटू खुश था। वह इन सब लड़कों से कुछ तो ज्यादा जानता है। 'यू डी कोलोन' पीकर नशे में भरी हुई तितलियों ने वंटू का उत्साह बढ़ा दिया। उसे अपने-आप पर गर्व हुआ इतने सारे लड़के उसके कमरे में थे।

दस मिनट बाद घण्टी बजी। घण्टी बजते ही सारे लड़के शाम प्रार्थना के लिए चले गए।

मनोज ने कहा—"चलो, वंटू। हमें भी तुरन्त चलना चाहिए।"

"नहीं, मैं नहीं जाऊंगा। मैं इन तितलियों के साथ खेलूंगा।" पहले की तरह खड़ी जबान में बोला।

मनोज ने उसे फिर समझाया—"ऐसा मत करो, वंटू। वरना फिर सज़ा मिलेगी।"

वंटू ने अपने दोनों कानों पर हाथ रख लिए। वह ज़ोर से बोल "सज़ा, सज़ा ! सज़ा ! सज़ा के सिवाय यहां कुछ और भी है ! मैं जाऊंगा, मैंने एक बार कह दिया।"

मनोज ने गुस्से से लाल बंटू का चेहरा देखा और वहां से चला गया। बंटू तितलियों के साथ खेलता रहा। थोड़ी-थोड़ी देर में वह उन्हें यू डी कोलोन पिलाता रहा, ताकि उनका नशा न टूटे और वे बैठी रहें।

सात

पहली मुसीबत

'विद्यार्थी परिषद' की बैठक शुरू हुई। विद्यालय के एक बड़े हाल में सारे लड़के और लड़कियां आकर बैठ गए। पीछे की सीटों पर प्रिंसिपल, वार्डन और दूसरे शिक्षक थे। सब शान्त बैठे हुए थे। तभी हल्की-सी घण्टी बजी। सब सावधान हो गए। सामने के दरवाजे से तीन लड़के आए। पीछे के दरवाजे से दो लड़कियां आयीं। ये पांचों एक ऊंचे मंच पर जा बैठे। उनके बैठते ही सारे कमरे में एक हल्की-सी सुरसुरी फैल गई।

यह 'विद्यार्थी परिषद' की पंचायत थी। ये चुने हुए जूरी थे। सप्ताह में एक बार परिषद् की यह बैठक होती है। उसमें ही सारी बातें तय की जाती हैं। उन्हींके अनुसार सप्ताह-भर का काम चलता है। अनुशासन भंग करने वाले उपद्रवी लड़कों को सजा भी मिलती है।

बंटू के लिए यह पहला मौका था। वह दिलचस्पी के साथ सारी कार्यवाही देख रहा था।

एक कप्तान सामने आकर खड़ा हो गया। उसने जूरी के सदस्यों को सिर झुकाया और फिर अपनी कक्षा की रिपोर्ट पढ़नी शुरू कर दी।

' माननीय महोदय, इस सप्ताह हमारी कक्षा में शांति रही। किसी लड़के की कोई शिकायत नहीं आई। एक लड़की ने बड़े साहस का काम किया। उसने नदी में डूबते हुए एक लड़के की जान बचाई। उसका पैर फिसल गया और वह गहरे पानी में चला गया। हमारे विद्यालय की एक छात्रा ने अपनी जान की परवाह किए बिना पानी में कूदकर उसे बचा लिया।

"मैं माननीय न्यायाधीशों को उस लड़की का नाम बताना चाहता हूं। वह है—मोहिनी गुप्ता। दसवीं कक्षा की छात्रा है।"

नाम सुनते ही सारे लड़कों की आंखें यहां-वहां तैरने लगीं। वे शायद उस लड़की को ढूंढ़ रही थीं।

जूरी में जो सदस्य थे, उनमें से प्रधान न्यायाधीश का पद इस बार नौवीं कक्षा के एक लड़के को मिला था। उसका नाम था—हरकिशन। वह अपनी कक्षा का कप्तान भी था। विद्यालय के नियमों के अनुसार अलग-अलग कक्षा के कप्तानों में से 'विद्यार्थी परिषद्' के लिए पांच सदस्य चुने जाते हैं। ये जूरी या न्यायाधीश कहलाते हैं। उनमें एक प्रधान न्यायाधीश होता है। ये पांचों मिलकर विद्यालय में अनुशासन बनाए रखने का प्रयत्न करते हैं।

प्रधान न्यायाधीश हरकिशन ने लोहे का हथौड़ा टेबल पर मारा—"शान्ति, शान्ति।" एक गहरी शान्ति वहां व्याप्त हो गई। हरकिशन ने कहा—"न्यायाधीश उस वीर और साहसी लड़की को देखना चाहते हैं।"

एक सिपाही ने आवाज़ दी—"मोहिनी गुप्ता!"

एक लड़की सामने आकर खड़ी हो गई। वह सलवार और कुर्ता पहने थी और मुसकरा रही थी। लड़की दुबली-पतली थी। उसे देखकर बैठे हुए लड़के और लड़कियां फुसफुसाने लगे। शायद सभीको अचरज था। इतनी दुबली-पतली लड़की ने यह काम कैसे कर लिया।

उसने न्यायाधीश के सामने सिर झुकाया। बोली—"सम्माननीय महोदय, आपकी आज्ञा के अनुसार हाजिर हूं।"

प्रधान न्यायाधीश ने उस लड़की को गौर से देखा। असल में वह लड़की उम्र में उससे थोड़ी बड़ी ही रही होगी। किन्तु इस समय वह प्रधान न्यायाधीश के पद पर था। उसने कहा—"दोस्तो, मोहिनी गुप्ता हमारे सामने खड़ी हैं। आप इन्हें देख रहे हैं। शौर्य और साहस के लिए आयु की कोई सीमा नहीं होती। शरीर और स्वास्थ्य का बन्धन भी नहीं होता। असल में समय पर सूझ-बूझ की जरूरत होती है। हमारे विद्यालय की माननीय सदस्या ने अपनी सूक्ष्म बुद्धि और सूझ-बूझ का परिचय देकर हम सबका नाम रोशन किया है। हम उन्हें पूरे विद्यालय की ओर से

बधाई देते हैं और प्रिंसिपल साहब से निवेदन करते हैं कि वे उन्हें एक प्रमाणपत्र दें। साथ ही पूरे महीने उनके लिए दुगुने खर्च की व्यवस्था करें।"

प्रिंसिपल मोहन शर्मा ने खड़े होकर प्रधान न्यायाधीश की बात स्वीकार कर ली। सब लोगों ने एकसाथ तालियां बजाईं। मोहिनी ने सिर झुकाकर सबके अभिवादन स्वीकार किए। उन्हें धन्यवाद दिया और वह अपनी जगह आकर बैठ गई।

इसके बाद दूसरा कप्तान आया। उसने अपनी कक्षा की रिपोर्ट में खराब लड़कों के नाम गिनाए। अच्छे लड़कों को प्रोत्साहन देने की मांग की।

इस तरह एक के बाद एक कप्तान सामने आते गए। सबसे बाद में नवीं कक्षा की बारी आई। नियम यह था कि जिस कक्षा का विद्यार्थी प्रधान न्यायाधीश होता है, उस कक्षा के दूसरे प्रतिनिधि को सबसे बाद में अवसर दिया जाता है।

नवमी के प्रतिनिधि कप्तान ने आकर सप्ताह-भर की रिपोर्ट पेश कर दी। रिपोर्ट लम्बी थी। बंटू सांस रोके वह रिपोर्ट सुन रहा था। रिपोर्ट पढ़ने के बाद उसने जूरी से एक प्रश्न पूछा। उसने कहा—"सम्माननीय न्यायाधीश महोदय, हमारी कक्षा के एक विद्यार्थी ने बाग से तितलियां पकड़ीं और उन्हें काफी देर तक बेहोश रखा। मैं जानना चाहता हूं कि क्या इस तरह तितलियां पकड़ना अपराध है ?"

प्रश्न सुनकर प्रधान न्यायाधीश ने अपने सदस्यों से सलाह-मशविरा किया। सभी लोग इस प्रश्न के फैसले की उत्सुकता के साथ प्रतीक्षा कर रहे थे। प्रधान न्यायाधीश ने तब लोहे का हथौड़ा टेबल पर मारा। बोले—"शान्ति, शान्ति।"

कप्तान की ओर देखकर प्रधान न्यायाधीश ने कहा—"तितलियां पकड़ना अपराध नहीं है।"

सारे लड़के-लड़कियों ने तालियों की गड़गड़ाहट से इस महत्त्वपूर्ण फैसले का स्वागत किया।

कप्तान ने फिर कहा—"मुझे अपनी कक्षा
यत करनी है। उसका नाम है बंटू।"

नाम सुनते ही पल-भर के लिए वंटू का खून सूख गया। परन्तु दूसरे ही क्षण वह सावधान हो गया। अपने-आप वह सोचने लगा—'देखूं ये मेरा क्या करते हैं।'

प्रधान न्यायाधीश ने पूछा—"वंटू ने क्या किया था ?"

कप्तान ने बताया—"वंटू ने कल शाम की प्रार्थना में भाग नहीं लिया।"

प्रधान न्यायाधीश ने आवाज़ दी—"वंटू, सामने आओ।"

वंटू ने अपने चारों ओर देखा। उसे लगा, यहां बैठी हुई सारी आंखें उसीकी ओर लगी हैं। उसे गुस्सा आ गया। उसने दांतों से होंठ दबाये और बाहर आकर सामने खड़ा हो गया। उसने अकड़कर जूरियों की ओर देखा। प्रधान न्यायाधीश उसीकी कक्षा का कप्तान था। वंटू ने बड़ी उपेक्षा और घृणा से उसकी ओर नज़र डाली। जैसे वह नजरें कह रही थीं, 'तुम सब मेरी तुलना में बहुत तुच्छ लड़के हो। मेरा कुछ नहीं कर सकते।'

प्रधान न्यायाधीश ने कहा—"वंटू तुम्हारा नाम है ?"

वंटू को क्रोध आ गया। यह उसीकी कक्षा का विद्यार्थी है, तब भी नाम पूछता है। उसे लगा, जैसे वह लड़का वंटू को नीचा दिखाना चाहता है। वंटू कांपने लगा। उसने कोई जवाब नहीं दिया। दूसरे न्यायाधीश ने पूछा—"तुम कल शाम की प्रार्थना में नहीं गए ?"

"नहीं" उसी तरह अकड़कर वंटू ने जवाब दिया।

दूसरे न्यायाधीश ने पूछा—"क्यों, आखिर क्यों नहीं गए ?"

'हमारी मरजी···।" वंटू ने बिना झिझक उत्तर दिया। उसका उत्तर सुनकर सारा स्कूल स्तब्ध रह गया। प्रिंसिपल और दूसरे शिक्षक भी सकते में आ गए। उनके चेहरे पर इसके स्पष्ट भाव थे। वहां एक हल्का-सा कोलाहल फैल गया। हर लड़का आपस में बातें करने लगा।

पांचों न्यायाधीशों ने सलाह-मशविरा किया। फिर प्रधान न्यायाधीश ने सबको सावधान करने के लिए हथौड़ा पीटा। सब एकदम चुप हो गए। पूरे हाल में इतनी गम्भीर स्तब्धता व्याप्त हो गई कि सांसों का उतार-चढ़ाव तक सुना जा सकता था।

प्रधान न्यायाधीश ने कप्तान से प्रश्न किया—"तुम्हारे पास कोई

गवाह है ?"

"जी"—उसने कहा—"मैं बंटू के रूम पार्टनर मनोज की ही गवाही देनी चाहता हूं।" मनोज कांप उठा। उसका नाम बीच में कैसे आ गया। वह बंटू से दुश्मनी नहीं करना चाहता था।

प्रधान न्यायाधीश ने आदेश दिया—"मनोज को बुलाया जाए।"

मनोज सामने आकर खड़ा हो गया। एक दूसरे लड़के ने सामने आकर गीता की पुस्तक रख दी। उसपर हाथ रखकर मनोज ने कसम खाई—"मैं जो बोलूंगा, सच कहूंगा; केवल सच कहूंगा और सच के सिवाय वह और कुछ न होगा।"

मनोज ने यह शपथ लेते हुए वहीं से अपने दोस्त बंटू की ओर देखा। बंटू ऊपर आकाश की ओर निहार रहा था। उसे मानो कोई परेशानी नहीं थी। वह दृढ़ और सीधा खड़ा रहा।

मनोज से एक न्यायाधीश ने पूछा—"तुम बंटू के ही कमरे में रहते हो?"

"जी।"

"बंटू कब सोता है?"

"जी···" मनोज की जीभ लड़खड़ाने लगी, परन्तु उसने अपने को संयत किया। बोला—"बिस्तर पर तो वह समय पर चला जाता है। परन्तु उसके सोने का कोई समय नहीं है।"

दूसरा प्रश्न था—"बंटू, कल शाम की प्रार्थना में नहीं गया, क्या यह सच है?"

"जी, हां।"

"तुमने उसे चलने के लिए कहा था?"

"जी हां, कहा था।"

"बंटू ने क्या उत्तर दिया?"

मनोज थोड़ी देर रुक गया। वह नहीं चाहता था कि बंटू के बारे में वह सब कुछ बताए। परन्तु उसके पास और कोई चारा नहीं था। उसने कहा—"बंटू ने कहा, मैं नहीं जाऊंगा। तितलियों के साथ खेलूंगा।"

प्रधान न्यायाधीश ने बंटू की ओर देखा। बंटू तब भी उपेक्षा से उनकी

ओर देख रहा था। प्रधान न्यायाधीश ने कहा—"वंटू, तुम्हें अपनी सफाई में कुछ कहना है ?"

"नहीं।" वंटू ने उसी उद्दण्डता के साथ कहा और अपनी जगह पर जाकर बैठ गया। जूरियों ने आपस में सलाह की।

थोड़ी देर बाद प्रधान न्यायाधीश ने फिर टेबल पर हथौड़ा पीटा। सब शान्त हो गए तो उसने जूरियों का फसला सुना दिया। कहा—"यह वंटू की पहली शिकायत है। इसे देखते हुए इस बार उसे कम सज़ा दी जा रही है। आज से एक सप्ताह तक वह शाम की प्रार्थना में शामिल नहीं होगा। इस बीच उसे अपने कमरे में गणित के सवाल करने होंगे। जूरी गणित के अध्यापक से प्रार्थना करती है कि वह इस सप्ताह वंटू को दूसरों से दुगुना काम दें। और यह निगरानी रखें कि वंटू प्रार्थना के घण्टे में बराबर काम करे।"

वंटू के पूरे शरीर में आग लग गई। गणित ही एक ऐसा विषय है, जिसमें वंटू का कभी मन नहीं लगा। गणित के अध्यापक को वह हमेशा से यमराज समझता रहा है। उसका मन हुआ कि वह खड़ा हो जाए और वहीं जूरियों को जवाब दे दे। उनसे कह दे कि "मैं गणित के सवाल नहीं करूंगा। तुम्हें जो करना हो, कर लो।" एक बार वह उठा भी, लेकिन फिर वह अपने-आप बैठ गया। उसके पीछे मनोज बैठा था। उसने वंटू के कन्धे पर पीछे से हाथ रखा। वंटू वैसे ही गुस्से में था। कमीज़ में लगी आलपीन को निकालकर उसने मनोज की कलाई में चुभा दिया। मनोज ज़ोर से चीख उठा। उसकी कलाई से खून निकलने लगा था।

उसकी चीख पूरे हाल में गूंज गई। सब सतर्क हो गए। क्या हुआ। प्रिंसिपल साहब पीछे से उठकर सामने आ गए। मनोज ने देखा, सबको इसका पता चल गया है। वह नहीं चाहता था कि उसका दोस्त सज़ा पाए, परन्तु मुंह से चीख एकदम और अनायास निकली थी। वह शायद वंटू के इस व्यवहार से सतर्क नहीं था। प्रिंसिपल मनोज के पास आकर खड़े हो गये। उन्हें बताने की ज़रूरत नहीं पड़ी। वे समझ गए थे कि यह सब वंटू ने किया है। उन्होंने वंटू से खड़े होने के लिए कहा। वह चुपचाप खड़ा हो गया। उसके चेहरे पर ज़रा भी शिकन नहीं थी। कहीं भय नहीं था।

प्रिंसिपल वंटू के और करीब आ गए। अब उसे ज़रा भय लगा। ऐसा

न हो कि प्रिंसिपल उसके गालों पर चांटे जड़ दें। उसने अपनी दोनों हथेलियां गालों पर रख लीं। यह देखकर प्रिंसिपल को हंसी आ गई। किसी तरह दांतों के सहारे उन्होंने अपने ओंठ दबाए और हंसी रोकी। फिर अपना हाथ बंटू की पीठ पर रखा। हाथ रखते ही पहले तो बंटू कांप उठा, परन्तु दूसरे ही क्षण वह सावधान हो गया। प्रिंसिपल हल्के-हल्के मुस्कराए। बोले—"मनोज तुम्हारा सहपाठी ही नहीं, सहयोगी भी है। तुम्हें अपने दोस्तों के साथ सही व्यवहार करना चाहिए।"

"मेरा कोई दोस्त नहीं है।" बंटू ने कहा।

"मनोज तुम्हारा दोस्त नहीं है ?" प्रिंसिपल ने पूछा।

"नहीं, बिल्कुल नहीं।" बड़ी उपेक्षा के साथ बंटू ने जवाब दिया।

प्रिंसिपल ने कहा—"बंटू, तुम्हारा व्यवहार बहुत अशोभनीय है। तुम्हें मनोज से अपने किए के लिए माफी मांगनी चाहिए।"

"नहीं, मैं माफी नहीं मांग सकता। मैंने कभी किसीसे माफी नहीं मांगी।" बंटू का गला भर आया था।

प्रिंसिपल ने समझाया—"बंटू, माफी मांगना एक अच्छी बात है।"

"होगी"—बंटू ने कहा—"लेकिन मैं नहीं मांग सकता।"

"तो तुम्हें इसकी सजा भुगतनी होगी।"—प्रिंसिपल ने थोड़ा सख्त होते हुए कहा। बंटू ने कोई जवाब नहीं दिया। वह पत्थर की तरह अपना सख्त चेहरा बनाए चुपचाप खड़ा रहा।

प्रिंसिपल ने अपनी भरी हुई आंखों से उसे सिर से पैर तक देखा। फिर वह सामने आकर खड़े हो गए। उन्होंने सजा सुना दी—"दो दिन कोई बंटू से नहीं बोलेगा।"

प्रिंसिपल अपनी कुरसी पर जाकर बैठ गए। प्रधान न्यायाधीश ने बंटू को बैठ जाने का हुक्म दिया। बंटू भी अपनी जगह पर बैठ गया। उसके मन में आग लग गई। समन्दर की तरह ऊंची लहरों ने उसे आ घेरा। उसे लगा जैसे वह एक साथ कई मुसीबतों में यहां आकर फंस गया है। मकड़ी के जाले में जैसे एक मक्खी फंसी होती है, बंटू ने अपने को भी उसी स्थिति में पाया। उसका मन भारी हो गया।

शिकायतों के बाद अब आगे का काम चला। एक लड़की लोहे की पेटी

ओर देख रहा था। प्रधान न्यायाधीश ने कहा—"वंटू, तुम्हें अपनी सफाई में कुछ कहना है ?"

"नहीं।" वंटू ने उसी उद्दण्डता के साथ कहा और अपनी जगह पर जाकर बैठ गया। जूरियों ने आपस में सलाह की।

थोड़ी देर बाद प्रधान न्यायाधीश ने फिर टेबल पर हथौड़ा पीटा। सब शान्त हो गए तो उसने जूरियों का फसला सुना दिया। कहा—"यह वंटू की पहली शिकायत है। इसे देखते हुए इस बार उसे कम सज़ा दी जा रही है। आज से एक सप्ताह तक वह शाम की प्रार्थना में शामिल नहीं होगा। इस बीच उसे अपने कमरे में गणित के सवाल करने होंगे। जूरी गणित के अध्यापक से प्रार्थना करती है कि वह इस सप्ताह वंटू को दूसरों से दुगुना काम दें। और यह निगरानी रखें कि वंटू प्रार्थना के घण्टे में बराबर काम करे।"

वंटू के पूरे शरीर में आग लग गई। गणित ही एक ऐसा विषय है, जिसमें वंटू का कभी मन नहीं लगा। गणित के अध्यापक को वह हमेशा से यमराज समझता रहा है। उसका मन हुआ कि वह खड़ा हो जाए और वहीं जूरियों को जवाब दे दे। उनसे कह दे कि "मैं गणित के सवाल नहीं करूंगा। तुम्हें जो करना हो, कर लो।" एक बार वह उठा भी, लेकिन फिर वह अपने-आप बैठ गया। उसके पीछे मनोज बैठा था। उसने वंटू के कन्धे पर पीछे से हाथ रखा। वंटू वैसे ही गुस्से में था। कमीज़ में लगी आलपीन को निकालकर उसने मनोज की कलाई में चुभा दिया। मनोज ज़ोर से चीख उठा। उसकी कलाई से खून निकलने लगा था।

उसकी चीख पूरे हाल में गूंज गई। सब सतर्क हो गए। क्या हुआ। प्रिंसिपल साहब पीछे से उठकर सामने आ गए। मनोज ने देखा, सबको इसका पता चल गया है। वह नहीं चाहता था कि उसका दोस्त सजा पाए, परन्तु मुंह से चीख एकदम और अनायास निकली थी। वह शायद वंटू के इस व्यवहार से सतर्क नहीं था। प्रिंसिपल मनोज के पास आकर खड़े हो गये। उन्हें बताने की जरूरत नहीं पड़ी। वे समझ गए थे कि यह सब वंटू ने किया है। उन्होंने वंटू से खड़े होने के लिए कहा। वह चुपचाप खड़ा हो गया। उसके चेहरे पर जरा भी शिकन नहीं थी। कहीं भय नहीं था।

प्रिंसिपल वंटू के और करीब आ गए। अब उसे जरा भय लगा। ऐसा

खोलकर खड़ी हो गई। सिलसिलेवार एक-एक छात्र और छात्रा वहां तक गए और एक-एक रुपया लेकर चले आए। यह एक सप्ताह के लिए उनका जेब-खर्च था। बंटू भी एक रुपया लेकर आ गया। उसने एक रुपये के नोट को देखा। वह उसे बहुत छोटा मालूम हुआ। घर में था तो मनमाने रुपये वह खर्च कर सकता था।

इसके बाद उसी लड़की ने पूछा—"और किसीको अतिरिक्त पैसे चाहिए ?"

दो लड़के खड़े हो गये। उनमें एक मनोज भी था। पहले लड़के से पूछा गया—"तुम्हें इसके अतिरिक्त पैसे किसलिए चाहिए ?"

उसने कहा—"मेरी कलम टूट गई। मैं दूसरी कलम खरीदूंगा।"

"वह कितने में आएगी ?"

"दो रुपये में।"

प्रधान न्यायाधीश ने यह रकम स्वीकृत कर दी। वह लड़का आकर दो रुपये ले गया। इसके बाद मनोज की बारी थी। उससे भी कारण पूछा गया।

उसने बताया कि उसे अपने गरम कपड़े धुलाने हैं। उसके लिए भी अतिरिक्त रकम मंजूर कर दी गई। वह ढाई रुपये लेकर वापस आ गया। अब और किसीको रुपयों की जरूरत नहीं थी। इसलिए वह पेटी बन्द कर दी गई।

दसवीं कक्षा के कप्तान ने खड़े होकर एक प्रस्ताव रखा। उसने कहा—"यदि हम लोग इस सप्ताह पिकनिक का प्रोग्राम बनाएं तो कैसा रहेगा ?"

प्रधान न्यायाधीश ने प्रस्ताव को चर्चा के लिए पेश किया। काफी देर तक इसपर विचार होता रहा। पिकनिक कैसी रहे और कहां जाया जाए ? अन्त में तय हुआ कि दूसरे सप्ताह पिकनिक का प्रोग्राम रखा जाए।

तालियों की गड़गड़ाहट के बीच यह प्रस्ताव भी पास हो गया।

मीटिंग खत्म हुई तो सारे लड़के खुशी से नाच उठे। प्रधान न्यायाधीश हरकिशन भी नाच उठा। उन सबके लिए यह बड़े हर्ष की बात थी। वे पिकनिक के लिए जाएंगे। पिकनिक में कितना मजा आता है।

आठ

कोई बोले नहीं

सुबह के व्यायाम से लौटने के बाद बंटू के पैर अपने-आप मनोज के पास चले गए। वहां जाकर वह खड़ा हो गया। मनोज तब अपनी किताबें और कापियां ठीक कर रहा था।

बंटू ने कहा—"तुम्हें कमरे में रहना है या नहीं।"

बंटू का चेहरा तमतमा रहा था। मनोज ने उसकी ओर देखा और शायद कुछ पूछना चाहा। उसने अपना मुंह खोला भी। तभी उसे याद आ गया। कल यह निर्णय किया गया है कि बंटू से कोई दो दिन नहीं बोलेगा। मनोज ने अपना मुह फेर लिया और काम मे लग गया।

बंटू ने अपनी बात फिर दोहराई—"मनोज, तुमने सुना, जो मैंने कहा?"

मनोज ने उसकी ओर देखकर अपनी नजरें फिर झुका ली।

बंटू ने पूछा—"तुम मुझसे नाराज हो?"

मनोज ने अपना सिर हिलाकर 'नाहीं' कर दी। इसका अर्थ था कि वह बंटू से नाराज नहीं है।

"फिर"—बंटू ने कहा—"तुम मुझसे बोलते क्यों नहीं?"

इस बार मनोज बंटू की ओर मुह सीधा कर खड़ा हो गया। अपने मुह के सामने वह दो अंगुलियां ले गया। तब बंटू को याद आया, दो दिनों तक उससे कोई नहीं बोलेगा।

वह सुनककर वहा से अपनी सीट पर चला आया। उसने भी किताबें निकालीं और पढने का उपक्रम करने लगा। उसे सफेद कागज पर टंके काले अक्षर घूमते-से नजर आए। उसे लगा, सभी कुछ हिलते हुए पानी की तरह बेतरतीब और धुंधला है। उसकी आखें किताब के दो पन्नों पर टिकी थीं, परन्तु दिमाग वहां नहीं था। यह बात उसे अजीब लगी कि दो दिन तक कोई उससे नहीं बोलेगा। वैसे ही उससे बोलने वाले लोग कम

थे। उसका कोई मित्र ही नहीं था। परन्तु तब उसे इसका बिल्कुल भान नहीं था। सभी कुछ सहज भाव से होता जा रहा था। यह पहली बार उसने अनुभव किया कि वह अकेला है। यह अकेलापन उसे काटने लगा।

किताब बन्द कर वह कमरे के बाहर गया। उसने कुछ लड़के और लड़कियों को जाते देखा। उसे लगा जैसे किसीने इनके होंठ सी दिए हैं। उससे कोई नहीं बोलेगा।

नौ बजे विद्यालय की पढ़ाई शुरू हुई। प्रार्थना के बाद सब अपनी-अपनी कक्षा में गए। बंटू भी चुपचाप सिर झुकाए अपनी कक्षा में पहुंच गया। कप्तान ने एक-एक लड़के की कापियां देखीं। उनमें जहां गलतियां थीं, उन्हें बतलाईं। कापियां देखते-देखते वह बंटू के भी पास आया। यह वही लड़का था, जो पिछले दिन प्रधान न्यायाधीश का पद सम्हाले हुए था।

बंटू की कापी में जहां गलती थी, वहां उसने लाल पेंसिल से निशान बना दिया और चला आया। उसने यह नहीं बताया कि गलती क्या है? बंटू को यह अच्छा नहीं लगा। उसके चेहरे पर प्रतिहिंसा के भाव उभर आए। यह सामूहिक रूप से उसके सम्मान को चोट पहुंचाना था।

कक्षा में शिक्षक आए। रोज की तरह सभी खड़े हो गए। फिर हाजिरी हुई। बंटू को अचरज हुआ कि शिक्षक ने उसका नाम नहीं पुकारा। अपना नाम न सुनकर बंटू खड़ा हो गया। बोला—"मैं भी आया हूं, सर।" यह सुनते ही सारी कक्षा एकसाथ खिलखिलाकर हंस पड़ी। लड़कियां भी बिना हंसे न रहीं। लड़कियों को हंसता देखकर बंटू टुकड़े-टुकड़े हो गया। उसने चाहा कि वह उनके पास जाए और एक-एक की चोटी खींचकर उन्हें ठीक कर दे। परन्तु वह ऐसा नहीं कर सका। मन मारकर अपनी जगह बैठ गया।

शाम ढली। हल्का-सा धुंधलका जमीन पर उतर आया। धुएं-भरा कोई गुब्बारा जैसे किसीने जमीन पर फोड़ दिया है। आसमान साफ था और शाम शान्त तथा सुहावनी थी। बंटू को यह मौसम अच्छा लगा। वह कमरे के बाहर आ गया। उसने खुले आकाश में अपनी नज़रें दौड़ाईं। फिर दूर के छोर को देखा। उस छोर को जहां धरती और आकाश मिलते हैं, जिसे क्षितिज कहा जाता है। धूल-भरी शाम में वह क्षितिज तैरता-सा नज़र

आया। वहां से कुछ यादें उतरकर उसके भीतर उभर आईं।

सबसे पहले उसने नीता मिस की याद की। ऐसी शामों को वह अक्सर नीता मिस के साथ घूमने आया करता था। रास्ते-भर नीता मिस उसे तरह-तरह की कहानियां सुनाती थीं। इन कहानियों में कितना रस होता था।

"आह।" उसने एक लंबी सांस ली।

सांस के नीचे उतरते ही उसके सामने अपनी मां का चेहरा घूम गया। वह मां, जो उसके लिए हमेशा व्याकुल रहती थी। उसकी हर बात वह मानती थी। उसने कभी बंटू को सज़ा नहीं दी थी।

'ये सब मुझे भूल गए।'—बंटू ने अपने-आपसे कहा। वह सोचने लगा, 'मुझमें ऐसा क्या दोष है? क्यों लोग मुझसे घृणा करते हैं?'

'नहीं, मुझमें कोई दोष नहीं है। यह विद्यालय ही खराब है। यहां रहकर आदमी पागल हो सकता है।' दौड़ता हुआ वह अपने कमरे में आया। आते ही उसने कांच के सारे गिलास फोड़ दिये। फिर वह मनोज की टेबल के पास पहुंचा। उसपर रखे गिलास भी उसने जमीन पर फेंक दिए। मनोज परेशान हो गया। बंटू को क्या हो गया। वह भागा-भागा वार्डन के पास गया। उनसे जाकर शिकायत की।

वार्डन ने आकर देखा, तो दंग रह गईं। इतने सालों से वे इस होस्टल को चला रही हैं। ऐसा लड़का उन्हें नहीं मिला था। एक सीधी नज़र उन्होंने सारे कमरे में दौड़ाई। फिर जमादार को आवाज़ दी। जमादार ने कमरे की सफ़ाई कर दी। उसी समय वार्डन ने कप्तान को बुलाया। उसके कान में कुछ कहा।

पांच मिनट बाद ही कप्तान कांच के चार-पांच गिलास लेकर वापस आ गया। वार्डन श्रीमती अपर्णा सेन ने गिलास बंटू की टेबल पर रख दिये। उसकी ओर उन्होंने हंसकर देखा। बोलीं—"नये गिलास आ गए हैं। इन्हें भी फोड़ दो।"

बंटू हतप्रभ वार्डन के चेहरे को देखता रहा। उनके चेहरे पर ज़रा भी शिकन नहीं थी। लगता था, जैसे कुछ हुआ ही नहीं। बंटू अपनी जगह खड़ा रहा। वार्डन ने फिर कहा—"बंटू, उठाओ गिलास और एक के बाद

एक उन्हें फोड़ दो।"'फोड़ो।"

इस बार वार्डन ने आदेशात्मक स्वर में बात कही। बंटू थोड़ी देर अपलक देखता रहा और फिर उसकी आंखों में आंसू आ गए। वह वहीं बैठ गया और फफक-फफककर रोने लगा।

वार्डन कांच के गिलासों को वहीं छोड़कर चली गई। तभी घण्टी बजी। यह प्रार्थना की घण्टी थी। मनोज ने कपड़े बदले। वह प्रार्थना-भवन की ओर चल पड़ा। बंटू परेशान हो गया था। वह भी जाने के लिए तैयार हुआ। तभी वह काला लड़का आकर दरवाजे पर खड़ा हो गया। अब बंटू वहां नहीं जा सकता। उसे सजा दी गई है। उसे गणित के सवाल करने पड़ेंगे। अभी गणित वाले मास्टर भी आ रहे होंगे।

बंटू के पैरों से ज़मीन खिसकने लगी। एक सप्ताह तक उसे गणित के सवाल करने होंगे।

'यह नहीं हो सकता'—वह बुदबुदाया। उसी समय गणित वाले सर वहां आ गए। बंटू ने अपना सिर पीट लिया और कापी खोलकर सवाल करने लगा। उसे एक-एक अंक भारी लग रहा था। ये जैसे अंक नहीं, कोई बड़े राक्षस हैं। इनमें से हर अंक बंटू को समूचा निगल सकता है। वह सोचता रहा और सवाल करता रहा।

गणित वाले सर थोड़ी देर ठहरे और चले गए। वह काला लड़का तब भी खड़ा रहा। बंटू ने उसे देखा और कहा—"तुम भी क्यों नहीं चले जाते। क्यों मेरे सिर पर खड़े हो?" वह लड़का कुछ नहीं बोला। एक अचल मूर्ति की तरह खड़ा रहा।

बंटू ने गुस्से से कहा—"चश्मुद्दीन सर चले गए। तुम भी रास्ता नापो।"

काले लड़के को हंसी आ गई। गणित वाले सर चश्मा पहनते हैं, इस-लिए बंटू ने उनका नाम ही चश्मुद्दीन रख दिया। वाह! वह खुश होकर भाग गया।

दूसरे दिन सारे विद्यालय में यह बात फैल गई। बंटू ने गणित वाले सर को चश्मुद्दीन कहा है। कई लड़कों ने इसका मज़ा लिया। कुछ ने सोचा, चलो परिषद् की अगली बैठक में फिर गुल खिलेगा।

दो दिन बीत गए।

तीसरे दिन की सुबह मनोज स्वयं बंटू के पास गया। बोला—"दोस्त, तुम अब भी मुझसे नाराज हो?"

बंटू के लिए ये दो दिन दो वर्ष की तरह बीते थे। वह अब और परेशानी सहने को तैयार न था। परन्तु एकाएक बात मान लेना भी उसकी आदत नहीं थी।

उसने तुनकते हुए कहा—"हां···।"

"तो मुझे माफ कर दो।" मनोज ने कहा।

बंटू ज़ोर से हंस पड़ा। वह खूब हंसा। इतना हंसा कि उसके पेट में बल पड़ने लगे। मनोज इसका कारण नहीं समझ पाया। उसने पूछा—"क्या बात है बंटू?"

बंटू ने कहा—"तुम एकदम बुद्धू हो। इतनी आसानी से माफी मांग लेते हो।" वह फिर हंसने लगा।

मनोज ने कहा—"इसमें क्या खराबी है। दोस्तों से माफी मागना अच्छी बात है।"

बंटू ने व्यंग्य किया—"क्या मैं तुम्हारा दोस्त हूं?"

मनोज इस प्रश्न को सुनकर चौंक उठा—"क्या तुम नहीं समझते? मैं तो तुम्हें अपना दोस्त समझता हूं।"

"नहीं, मेरा कोई दोस्त नहीं है।"—बंटू ने बिना हिचक के कह दिया। मनोज आंखें फाड़े बंटू की ओर देखने लगा। बंटू के चेहरे पर कोई अन्तर नजर नहीं आया। परन्तु शायद वह कुछ सोचने लगा था। बंटू ने ही एक बार कहा था—"केवल छोटे लोग माफी मांगते हैं।" उसने अपने-आपको बहलाया—'मनोज से मैं वैसे ही बड़ा हो गया।' उसने मुस्कराकर मनोज की ओर देखा और फिर दोनों एक-दूसरे से लिपट गए।

सूरज ढले दोनों घूमने चले गए। बंटू का दिमाग आज भारी नहीं था। रास्ते में उन्हें दो-तीन और लड़के मिले। सबने बंटू से बातें की, परन्तु बंटू अपनी आदत के अनुसार आसमान में ही देखता रहा। बाग में जाकर दोनों खूब घूमते रहे। परन्तु आज उन्होंने तितलियां नहीं पकड़ी।

बंटू मनोज से बहुत-सी बातें करता रहा। पहले तो उसने गिलासों के

फूटने के बारे में पूछा। वह जानना चाहता था कि क्या अगली मीटिंग में फिर यह प्रश्न उठाया जाएगा।

"नहीं"—मनोज ने कहा—"इस विद्यालय में इनकी परवाह नहीं की जाती। मीटिंग में वे ही प्रश्न उठाये जाते हैं, जो आचरण से सम्बन्धित होते हैं।" वंटू ने राहत-भरी सांस ली।

उसने मनोज से पूछा—"तुम्हें यहां अच्छा लगता है ?"

"बहुत अच्छा···" मनोज ने कहा—"तुम नहीं जानते, हमारा विद्यालय अपने ढंग का निराला है। ऐसा विद्यालय कहीं नहीं है। तुमने इतने दिनों में देखा ही है। सारा काम हम लोग ही तो करते हैं। इतनी आज़ादी कहां मिलेगी।"

"आज़ादी।" वंटू ने तुनककर कहा—"तुम इसे आज़ादी कहते हो ? मुझे तो यहां एक क्षण भी अच्छा नहीं लगता। मैं इस विद्यालय में नहीं रहना चाहता।"

मनोज को यह सुनकर आश्चर्य हुआ। इस विद्यालय को कभी किसीने बुरा नहीं कहा। वंटू ने कहा—"मैं यहां से जाना चाहता हूं। इसीलिए ऊधम किया करता हूं। कभी तो ये तंग आकर मेरे पिताजी को सूचना देंगे। मैं पिताजी को लिख दूंगा कि यहां नहीं रहना चाहता। मुझे विश्वास है कि मेरे पिता जी मेरी मर्ज़ी के विरुद्ध मुझे यहां नहीं रखेंगे।"

मनोज की आंखों में अपने-आप आंसू आ गए।

"अरे, तुम तो रोने लगे।" वंटू ने उसकी ओर देखकर पूछा—"क्या हो गया ?"

"कुछ नहीं"—मनोज ने छोटा-सा उत्तर दिया और अपने आंसू पोंछे। बहुत पूछने के बाद उसने बतलाया कि उसे अपने पिता की याद आ गई थी। पिछले साल एक मोटर-दुर्घटना में उनकी मृत्यु हो गई। अब घर में मां है और एक बड़ी बहन। घर में जायदाद है, इसलिए रुपये-पैसों की इतनी कमी नहीं है। लेकिन······।

मनोज ने कहा—"पिता जी होते हैं, तो बात ही और होती है।"

"तुम्हारी मां और बहन तुम्हें कभी पत्र लिखती हैं ?"—वंटू ने पूछा।

मनोज ने उदास होकर कहा—"नहीं, दोनों में से कोई भी पढ़ा

नहीं है।"

"तो तुम भी पत्र नहीं लिखते ?"

"नहीं।"

"यह खराब बात है।"

"हां, बहुत खराब बात है। लेकिन और कोई चारा भी तो नहीं। पढना भी भाग्य की बात है।"

बंटू ने गर्व के साथ मनोज की ओर देखा और कहा—"मेरे पिता तो हर हफ्ते मुझे पत्र लिखते हैं। और मेरी मां उपहार भेजती है। और नीता मिस अच्छी-अच्छी कविताएं लिखकर भेजा करती है। पिछली बार उन्होंने एक बड़ी मजेदार कविता लिखकर भेजी थी। सुनो।" बंटू ने अपनी जेब से एक लम्बा कागज निकाला और उससे चार पंक्तियां पढ़ीं :

बिल्ली और बंदर में भेद नहीं है,
आलू और चुकन्दर में छेद नहीं है,
तीतर और बटेर दोनों लड़ते हैं,
पर दोनों में कहीं मतभेद नहीं है।

दोनों हंस-हंसकर लोट-पोट हो गए। इस कविता का दोनों ने खूब मजा लिया।

मनोज ने कहा—"दोस्त, तुम बड़े भाग्यशाली हो। तुम्हारी किस्मत तेज है।"

"मैं तुम्हें सारे पत्र पढ़वा दिया करूंगा।"—बंटू ने कहा—"पर तुम्हें एक काम करना होगा।"

"वह क्या ?"—मनोज ने पूछा।

"हर मीटिंग में मेरी शिकायत तुम्हें करनी पड़ेगी।"—बंटू की यह बात सुनकर मनोज का मुंह फटा रह गया। यह कैसी अजीब बात है। उसने पूछा—'सो क्यों ?'

"ताकि ये लोग मुझे विद्यालय से निकाल दें और मैं अपने घर वापस जा सकूं।"—बंटू बहुत गम्भीर होकर बोला।

मनोज हंस दिया। बोला—"इस विद्यालय से जाना इतना आसान नहीं है, बंटू। थोड़े दिनों के बाद तुम्ही देखना, क्या होता है।"

"क्या होगा ?"—वंटू ने कहा।

"यह तो समय ही बताएगा, मेरे दोस्त।"—मनोज ने कहा—"और रही तुम्हारी मदद करने की बात, सो मैं जरूर करता। परन्तु एक बाधा है। हमारे विद्यालय का नियम है कि किसीको झूठ नहीं बोलना चाहिए। मैं कैसे झूठ बोल सकता हूं। और तुम्हें भी झूठ नहीं बोलना चाहिए, वंटू।"

"तो मुझे अब शैतानी ही करनी होगी। झूठ बोलने से काम नहीं चलेगा।" वंटू ने चुटकी बजाते हुए कहा—"तुम एक काम तो कर सकते हो ?"

"वह क्या ?"

"मैं जो भी शैतानियां करूं, उनकी सच्ची शिकायत वार्डन के पास तक तो पहुंचा सकते हो ?"

मनोज ने हंसते हुए अपने दोनों हाथ वंटू के गले में डाल दिए।

"थोड़े दिनों की बात है। फिर सब ठीक हो जाएगा।"—मनोज ने कहा।

"कुछ नहीं होगा।" वंटू ने जोर दिया—"हम वो नहीं हैं, जो आसानी से बहल जाएं।"

दोनों हाथ में हाथ डाले उचकते हुए विद्यालय की ओर चले आए। विद्यालय के अहाते में पैर रखते ही उन्हें अपर्णा सेन मिल गईं। उन्होंने वंटू को पहली बार इतना खुश देखा।

अपर्णा ने वंटू को अपने पास बुलाया और पूछा—"अब तो मन लगने लगा है न ?"

"नहीं"—वंटू ने उसी तरह उपेक्षा से उत्तर दिया—"मन लगने का प्रश्न ही नहीं उठता।" अपर्णा सेन को यह उत्तर सुनकर अचरज हुआ। उन्होंने वंटू की ओर देखा। वह विना उनकी आज्ञा लिए वहां से अपने कमरे की ओर चला गया। मनोज को भी उसके इस व्यवहार से बुरा लगा।

फिर घण्टी वजी और वंटू ने अपना सिर पीट लिया। फिर वही काला लड़का आकर खड़ा हो जाएगा और फिर गणित के सर आ धमकेंगे—चश्मुद्दीन।

वह सोच ही रहा था कि वह काला लड़का सचमुच आ गया। वंटू ने

उसे जाकर धक्का दिया और कहा—"भाई, तुम जाओ। हम गणित के ही सवाल करेंगे।"

लड़का लकड़ी की तरह सीधा खड़ा रहा। वह अपनी जगह से बिलकुल नहीं हटा। बंटू ने उसके हाथ जोड़े—"भाई, माफ करो। बहुत हो गया।" इसका भी असर उसपर नहीं हुआ। बिना कुछ बोले वह वैसा ही खड़ा रहा। बंटू ने जोर से दांत पीसे। हर बात की सीमा होती है। यह लड़का इस तरह नहीं मानेगा।

बंटू अपने कमरे में गया। उसने अपनी आलमारी खोली। उसमें से उसने किमाच का एक फल निकाला। पिछली बार उसे घूमकर लौटते समय किमाच रास्ते पर पड़ा मिल गया था। वह सहज ही उसे उठा लाया था। फिर मनोज ने कल ही उसे बताया था कि यह फल अच्छा नहीं होता। शरीर से जरा रगड़ दो कि खुजाते-खुजाते मुसीबत हो जाए। कई बार खून तक निकल आता है। बंटू ने सोचा, इस लड़के का इलाज इससे बढ़कर और नहीं हो सकता। उसने किमाच लाकर उसकी दोनों टांगों पर रगड़ दिया। रगड़ने की देर थी कि लड़का चिल्ला उठा। दोनों हाथों से अपने पैर खुजलाता हुआ वह भागा। वह भागता गया। सामने से गणित के अध्यापक आ रहे थे। वह उनसे जा टकराया। उनका चश्मा फूट गया। लेकिन चश्मे की उन्हें चिन्ता नहीं हुई। वह लड़का सचमुच परेशान था। उसकी चमड़ी लाल हो गई थी।

वे उसे वार्डन के कमरे में ले गए। वार्डन उस समय तक प्रार्थना-भवन से नहीं लौटी थी। उन्हें चपरासी के हाथ बुलवाया गया। दवा निकालकर उस लड़के के पैरों में लगाई गई। एक घण्टे के बाद उसे शान्ति मिली। तब कहीं वार्डन और गणित के शिक्षक ने चैन की सांस ली।

इसीके बाद सोचने का मौका मिला। अब तक मनोज भी वापस आ गया था। रात्रि के भोजन के लिए जब सब लड़के उस बड़े हाल में पहुंचे तो बंटू ने देखा, सभी उसकी ओर भयभीत निगाहों से देख रहे हैं। सब विद्यार्थी अपनी-अपनी कुर्सी पर जा बैठे। बैठते ही वहां फुसफुसाहट होने लगी। एक लड़का दूसरे से कुछ कहता। दूसरा तीसरे से। इस तरह बात आगे बढ़ती गई। सरकते-सरकते वह लड़कियों के पास तक पहुंची तो

"क्या होगा ?"—वंटू ने कहा।

"यह तो समय ही बताएगा, मेरे दोस्त।"—मनोज ने कहा—"और रही तुम्हारी मदद करने की बात, सो मैं ज़रूर करता। परन्तु एक बाधा है। हमारे विद्यालय का नियम है कि किसीको झूठ नहीं बोलना चाहिए। मैं कैसे झूठ बोल सकता हूं। और तुम्हें भी झूठ नहीं बोलना चाहिए, वंटू।"

"तो मुझे अब शैतानी ही करनी होगी। झूठ बोलने से काम नहीं चलेगा।" वंटू ने चुटकी बजाते हुए कहा—"तुम एक काम तो कर सकते हो ?"

"वह क्या ?"

"मैं जो भी शैतानियां करूं, उनकी सच्ची शिकायत वार्डन के पास तक तो पहुंचा सकते हो ?"

मनोज ने हंसते हुए अपने दोनों हाथ वंटू के गले में डाल दिए।

"थोड़े दिनों की बात है। फिर सब ठीक हो जाएगा।"—मनोज ने कहा।

"कुछ नहीं होगा।" वंटू ने ज़ोर दिया—"हम वो नहीं हैं, जो आसानी से वहल जाएं।"

दोनों हाथ में हाथ डाले उचकते हुए विद्यालय की ओर चले आए। विद्यालय के अहाते में पैर रखते ही उन्हें अपर्णा सेन मिल गईं। उन्होंने वंटू को पहली बार इतना खुश देखा।

अपर्णा ने वंटू को अपने पास बुलाया और पूछा—"अब तो मन लगने लगा है न ?"

"नहीं"—वंटू ने उसी तरह उपेक्षा से उत्तर दिया—"मन लगने का प्रश्न ही नहीं उठता।" अपर्णा सेन को यह उत्तर सुनकर अचरज हुआ। उन्होंने वंटू की ओर देखा। वह बिना उनकी आज्ञा लिए वहां से अपने कमरे की ओर चला गया। मनोज को भी उसके इस व्यवहार से बुरा लगा।

फिर घण्टी बजी और वंटू ने अपना सिर पीट लिया। फिर वही काला लड़का आकर खड़ा हो जाएगा और फिर गणित के सर आ धमकेंगे—वशमुद्दीन।

वह सोच ही रहा था कि वह काला लड़का सचमुच आ गया। वंटू ने

उसे जाकर धक्का दिया और कहा—"भाई, तुम जाओ। हम गणित के ही सवाल करेंगे।"

लड़का लकड़ी की तरह सीधा खड़ा रहा। वह अपनी जगह से बिलकुल नहीं हटा। बंटू ने उसके हाथ जोड़े—"भाई, माफ करो। बहुत हो गया।" इसका भी असर उसपर नहीं हुआ। बिना कुछ बोले वह वैसा ही खड़ा रहा। बंटू ने जोर से दांत पीसे। हर बात की सीमा होती है। यह लड़का इस तरह नहीं मानेगा।

बंटू अपने कमरे में गया। उसने अपनी आलमारी खोली। उसमें से उसने किमाच का एक फल निकाला। पिछली बार उसे घूमकर लौटते समय किमाच रास्ते पर पड़ा मिल गया था। वह सहज ही उसे उठा लाया था। फिर मनोज ने कल ही उसे बताया था कि यह फल अच्छा नहीं होता। शरीर से जरा रगड़ दो कि खुजाते-खुजाते मुसीबत हो जाए। कई बार खून तक निकल आता है। बंटू ने सोचा, इस लड़के का इलाज इससे बढ़कर और नहीं हो सकता। उसने किमाच लाकर उसकी दोनों टांगों पर रगड़ दिया। रगड़ने की देर थी कि लड़का चिल्ला उठा। दोनों हाथों से अपने पैर खुजलाता हुआ वह भागा। वह भागता गया। सामने से गणित के अध्यापक आ रहे थे। वह उनसे जा टकराया। उनका चश्मा फूट गया। लेकिन चश्मे की उन्हें चिन्ता नहीं हुई। यह लड़का सचमुच परेशान था। उसकी चमड़ी लाल हो गई थी।

वे उसे वार्डन के कमरे में ले गए। वार्डन उस समय तक प्रार्थना-भवन से नहीं लौटी थी। उन्हें चपरासी के हाथ बुलवाया गया। दवा निकालकर उस लड़के के पैरों में लगाई गई। एक घण्टे के बाद उसे शान्ति मिली। तब कहीं वार्डन और गणित के शिक्षक ने चैन की सांस ली।

इसीके बाद सोचने का मौका मिला। अब तक मनोज भी वापस आ गया था। रात्रि के भोजन के लिए जब सब लड़के उस बड़े हाल में पहुंचे तो बंटू ने देखा, सभी उसकी ओर भयभीत निगाहों से देख रहे हैं। सब विद्यार्थी अपनी-अपनी कुर्सी पर जा बैठे। बैठते ही वहां फुसफुसाहट होने लगी। एक लड़का दूसरे से कुछ कहता। दूसरा तीसरे से। इस तरह बात आगे बढ़ती गई। सरकते-सरकते वह लड़कियों के पास तक पहुंची तो

सारी लड़कियां एकसाथ चिल्ला पड़ीं।

सब चौंक उठे। अब किसीसे कुछ भी छिपा नहीं रहा। बंटू अपना सिर नीचा किये भोजन करता रहा। वह भोजन भी नहीं कर सका। थोड़ा-सा उसने खाया और उठ गया। दिमाग फिर परेशान हो गया। एक बड़ी मुसीबत उसके ऊपर टूटने वाली है। उसकी कल्पना मात्र से ही वह सिहर उठा।

आधी रात को उसने बिजली जलाई। मनोज खर्राटे लेकर सो रहा था। बंटू ने एक कागज निकाला और अपने पिता को पत्र लिखने लगा। उसने लिखा :

"पिता जी, प्रणाम।

आधी रात का समय है और मैं जाग रहा हूं। इस विद्यालय का हर लड़का मेरे विरुद्ध है। मैं नहीं जानता, मैंने इनका क्या बिगाड़ा है। ये सब मिलकर न जाने कब की दुश्मनी निकाल रहे हैं। मैं बेहद परेशान और दुःखी हूं। यहां मुझे रह-रहकर अपनी टीचर नीता मिस की याद आ रही है। वे कितनी अच्छी थीं।

उनकी तरह यहां एक भी टीचर नहीं है। सब यमराज के साक्षात् अवतार हैं। हमारी वार्डन अपर्णा सेन हैं। उनका तो पूछना ही क्या? हैं तो दुबली पतली, परन्तु उनके काम किसी भी मोटी स्त्री से कम नहीं हैं। बिच्छू की तरह सारे होस्टल का चक्कर लगाती रहती हैं। उन्हें न रात दिखती है, न आधी रात। आधी रात को भी वे आ धमकती हैं···।"

बंटू ने उसी समय एक आहट सुनी। पैर के घुंघरुओं की वह मीठी आवाज़ थी। वह कांप उठा। यह आवाज़ तो वार्डन की है। उन्हींका नाम ले रहा था और वही आ धमकीं। उसने पत्र पूरा किया :

"···और मैं लिख ही रहा हूं कि वार्डन मेरे कमरे में आ धमकी हैं। आगे की ईश्वर जाने। जो बीतेगी, कल पता चलेगा।

आपका बेटा

—बंटू।"

बंटू ने जल्दी-जल्दी पत्र तह किया और उठकर बिजली बुझानी ही चाही कि खिड़की से अपर्णा सेन ने आवाज दी—"बंटू, तुम अभी भी जाग रहे हो।"

"जी···जी नहीं"—बंटू का कंठ सूख गया। उसने तेजी से लाइट बुझा दी। प्यास के मारे उसका गला सूख रहा था, तो भी उसने न तो कोई जवाब दिया और न दरवाजा खोला। बिस्तर में लेटकर ऊपर से उसने रजाई ओढ़ ली और दोनों हथेलियां कानों में लगाकर वह सो गया। फिर कृत्रिम ढंग से वह खर्राटे भरने लगा। उसे इसके बाद पता ही नहीं चला वार्डन कब तक वहां खड़ी रहीं और कब वहां से चली गईं।

नौ

एक नया संघर्ष

सुबह नाश्ते के समय विद्यालय के सभी शिक्षक और स्वयं प्रिंसिपल भी हाजिर थे। लड़के अपनी-अपनी बेंचों पर बैठे थे। लगता था, जैसे कोई समारोह होने वाला है। लेकिन इस समारोह की खबर किसी को नहीं थी।

नाश्ते के बाद एक कागज-पेंसिल लेकर हरकिशन सामने आया। बंटू का कलेजा धक्क हो उठा। कल जो कुछ हो चुका है, अब फिर उसकी चर्चा होगी। थोड़ी देर वह परेशान हुआ, परन्तु फिर अपने-आप [illegible] गया।

'होने दो। मैं भी देखूंगा, मेरा कौन क्या करता है?' वह अपने-आप बुदबुदाया। उसने [illegible] के लिए अपने को मजबूत बना लिया। तभी हरकिशन ने एक-एक लड़के से उसकी पसन्द के मनोरंजन पूछने शुरू कर दिए। हर लड़के ने अपनी पसन्द बता दी। [illegible] हरकिशन एक नोटबुक में लिखता गया।

यह देखकर बंटू को हँसी आ गई। [illegible] जब वह अपनी पसन्दगियों के बारे में [illegible] लगा। लेकिन [illegible]

के मन में एक विचार आया—'मुझे अधिक दिन तो यहां रहना नहीं। फिर पसन्दगी क्यों बताई जाए ?'

मनोज अपनी जगह से उठकर वंटू के पास आया। बोला—"वंटू, घुड़सवारी जरूर लिखवाना। हम दोनों रोज सुबह घोड़े पर बैठकर एक-साथ दौड़ा करेंगे।"

"नहीं, मैं अपनी पसन्दगी किसीको नहीं बता सकता। मैं कुछ नहीं लिखवाऊंगा। मुझे यहां रहना भी नहीं।"—वंटू ने मनोज से सहज ढंग से कह दिया।

मनोज ने उससे मिन्नतें कीं। वंटू पत्थर बना बैठा रहा।

हरकिशन ने उसी समय आशा की ओर संकेत किया। आशा उठकर खड़ी हो गई। उसने अपनी तीन पसन्दगियां बता दीं—(१) घुड़सवारी, (२) संगीत, और (३) सिलाई।

मनोज ने वंटू को धक्का दिया। बोला—"तुमसे तो यह लड़की अच्छी है।"

वंटू को तैश आ गया। उसी समय हरकिशन ने उसकी ओर संकेत किया। वंटू ने खड़े होकर बिना हिचक अपनी तीन पसन्दगियां बता दीं—(१) घुड़सवारी, (२) संगीत और (३) टेनिस तथा क्रिकेट।

आशा के एकदम बाद वंटू ने भी पहली दो पसन्दगियां दुहरा दी थीं इसलिए सभी विद्यार्थी हल्के से हंस दिए। वंटू अपनी जगह बैठ गया। उसकी सांसों को बड़ा चैन मिला। अच्छा हुआ, कोई मुसीबत सामने न आई।

अब बारी उस काले लड़के की थी। वंटू उसे दूर से देखकर ही गया। कहीं वह शिकायत न करने लगे। लड़के ने कोई शिकायत नहीं उसने धीरे से उठकर अपनी तीन पसन्दगियां बता दीं। उन तीन घुड़सवारी भी थी। वंटू ने अपने दांतों से अपने होंठ काट लिए। अपने-आप कहा—'अच्छा, बेटा, तुम यहां भी आ धमके। देखूंगा।'

मनोज ने अपनी पसन्दगियों में घुड़सवारी और संगीत रखा। कूद में उसकी रुचि कम थी, इसलिए उसने वैज्ञानिक प्रयोगों को तीसरी पसन्दगी में रख दिया।

वंटू खुश हुआ। मनोज का साथ उसे काफी समय तक मिलेगा। उसके साथ मिलकर वह उस काले लड़के को अच्छी तरह देख लेगा।

नाश्ते के बाद वंटू जब बाहर निकलने लगा, तो आशा उसके पास आ गयी। बोली—"वंटू, तुमने घुड़सवारी लेकर अच्छा किया।"

"अच्छे की क्या बात है ?" वंटू ने तुनककर कहा—"यह मेरा नया शौक नहीं है। मेरे पिता जी कलेक्टर हैं। घर में भी मैं रोज घुड़सवारी सीखता रहा हूं।...हां।"

वंटू ने गर्व से उसकी ओर देखा। आशा हल्के-हल्के मुसकराती रही। बोली—"अच्छा, कलेक्टर साहब, हमें तो घुड़सवारी आप सिखाएंगे न ?"

"नहीं"—वंटू ने उसी ढंग से कहा—"सिखाने का काम शिक्षकों का है।...शिक्षक कोई बड़े आदमी नहीं होते।"

इस उत्तर को सुनकर आशा दुखी हुई। उसने कहा—"वंटू, बड़े आदमी की परिभाषा क्या है ?"

दोनों अब तक काफी आगे आ चुके थे। बाहर लान पर खड़े होकर वे बातें करने लगे। वंटू ने कहा—"बड़ा आदमी वही है, जो बड़ा हो।"

"यानी ऊंचाई में बड़ा हो।" आशा ने हंसकर कहा।

"नहीं", वंटू ने सख्त ढंग से उत्तर दिया—"बड़ा आदमी हर बात में बड़ा होता है।"

"हर बात में, यानी ?" आशा उसे छोड़ने को तैयार नहीं थी। वह काफी देर तक घुमा-फिराकर उससे इस प्रश्न का उत्तर पूछती रही। परन्तु वंटू ठीक उत्तर नहीं दे सका। तब आशा ने कहा—"मैं बताऊं बड़ा आदमी कौन है ?"

"हां—" उपेक्षा से वंटू ने कहा।

"वंटू" आशा ने कहना शुरू किया—"मनुष्य का आभूषण विद्या है। विद्या बुद्धि से आती है। बड़ा आदमी वही है, जिसके पास बड़ी बुद्धि हो। रुपये-पैसों से कोई भी बड़ा नहीं हुआ। इसलिए हमारे शिक्षक बड़े आदमी हैं। उनके पास हमसे बहुत बड़ी बुद्धि है।"

वंटू इससे शायद सहमत नहीं था। वह कुछ और कहना चाहता था। उसी समय घंटी बज गई। सबको अपने-अपने कमरे में पहुंचने का यत्न

संकेत था। उनकी पढ़ाई का समय शुरू हो गया था। आशा भी वहां से चल दी। जाते-जाते उसने कहा—"बंटू, हम अब रोज सुबह मिलेंगे, तब बातें करेंगे। तुम मजेदार लड़के दिखाई देते हो।"

बंटू भी अपने कमरे में चला आया। उसके कानों में आशा के शब्द गूंजते रहे—'मजेदार लड़के दिखाई देते हो।' बंटू अपने-आप मुस्कराने लगा।

बंटू आकर अपनी टेबल पर बैठ गया। उसने अंगरेजी की किताब खोली।

उसी समय एक लड़का उसके पास आकर खड़ा हो गया। बोला—"बंटू, तुम्हें प्रिंसिपल साहब ने बुलाया है।"

"हूं—" कहकर बंटू ने अपने सिर को झटका दिया। उसने लड़के की ओर देखा और कहा—"मैं अभी पढ़ रहा हूं। प्रिंसिपल साहब से जाकर कह दो।"

लड़का लौटकर जाने लगा तो मनोज ने उसे डांट लगाई—"बंटू, प्रिंसिपल साहब की हर बात एक आज्ञा होती है। क्यों तुम व्यर्थ की मुसीबतें मोल लिया करते हो?" मनोज ने वहीं से उस लड़के को आवाज़ ‍ःगाई और कहा—"ठहरो, बंटू आता है।"

मनोज ने बंटू का हाथ पकड़कर उठा दिया। बंटू को जाना पड़ा।

प्रिंसिपल के पास जाकर वह खड़ा हो गया। उसने देखा, वहां वार्डन ‍ी थीं। एक कोने में वह काला लड़का था। बंटू का खून सूख गया। अब ‍या होगा?

प्रिंसिपल साहब ने मुस्कराकर बंटू की ओर देखा और उसे बैठने का इशारा किया। वह एक कुर्सी पर बैठ गया। प्रिंसिपल ने कहा—"बंटू, तुम्हारे पिता जी की कल एक चिट्ठी आई है। उन्होंने तुम्हारी याद की है।"

"जी…" बंटू बहुत डरा हुआ था।

"उन्होंने पूछा है कि तुम्हारी शैतानियों के क्या हाल हैं?"

बंटू ने नीचे सिर झुका लिया।

"उन्होंने पूछा है कि तुम्हारा मन यहां लगने लगा या नहीं।"

प्रिंसिपल साहब की इस बात का उत्तर बंटू ने तुरन्त दिया—"नहीं, लग भी नहीं सकता।"

"क्यों ?"—प्रिंसिपल ने आश्चर्य से बंटू को देखा। बंटू इस 'क्यों' का उत्तर नहीं दे पाया। तब प्रिंसिपल जोर से हंसे। बोले—"बंटू, इस विद्यालय में तुम अकेले लड़के नहीं हो। और भी लड़के हैं। तुम उन लड़कों की तरह व्यवहार करना सीखो ˙।"

बंटू का मन हुआ कि वह उठकर खड़ा हो जाए और वहां से भाग जाए। सभी लोग उसे सिखाना चाहते हैं, जैसे वह एक निहायत घटिया और गिरा हुआ लड़का है। परन्तु प्रिंसिपल के सामने से इस तरह उठकर जाना आसान नहीं था।

प्रिंसिपल ने कहा—"तुम्हारे पिता इतने बड़े अफसर हैं। तुम्हें उनकी ही तरह बड़ा बनने के लिए प्रयत्नशील होना चाहिए।"

बंटू ने उसी समय कहा—"सर, मैं उनसे बड़ा बनूंगा।"

उसकी इस बात को सुनकर वार्डन जोर से हंस पड़ी। बंटू को शायद उनका हंसना अच्छा नहीं लगा। उसने अपनी भवें चढ़ाकर वार्डन की ओर देखा, परन्तु तुरन्त उसने नजर झुका ली।

प्रिंसिपल ने समझाया—"बंटू, बड़ा बनने के लिए बड़े काम करने पड़ते हैं।"

"मैं कोई छोटे काम नहीं करता।" बंटू की इस बात से प्रिंसिपल भी हंस दिए। उन्होंने कहा—"तुम सही कहते हो। तुम कभी कोई छोटा काम नहीं करते। कर भी नहीं सकते। कल तुमने अपनी वार्डन की बात नहीं सुनी, यह सचमुच छोटी बात नहीं है।"

बंटू के चेहरे पर शैतानी की रेखाएं उभर आईं। उसने अपने को दयनीय और ईमानदार बनाने की कोशिश की। बोला—"सर, कल वार्डन की मैंने कौन-सी बात नहीं सुनी ?"

प्रिंसिपल ने पूछा—"कल रात लाइट जलाकर तुम कमरे में क्या कर रहे थे ?"

"लाइट···जलाकर···।" बंटू घबरा गया और अपना थूक जोर-जोर से लीलने लगा—"मैंने रात को लाइट ही नहीं जलाई सर।" उसने दृढ़ होकर

उत्तर दिया।

प्रिंसिपल ने मुसकराकर उसकी ओर देखा। वंटू की नज़रें अपने-आप नीचे झुक गईं। फिर उन्होंने वार्डन की तरफ देखकर कहा—"वंटू सच कहता है। झूठ तो आप बोल रही हैं।"

वार्डन केवल मुस्करा दी।

"क्यों, वंटू ?"—प्रिंसिपल का स्वर इस बार तेज़ था।

"हां···न···हीं···" वंटू की जीभ लड़खड़ाने लगी।

"और तुमने इस लड़के के पैरों में किमाच भी नहीं लगाया, क्यों ?" वंटू ने उस काले लड़के की ओर देखा और घबरा गया। इस बार वह कोई जवाब नहीं दे सका। प्रिंसिपल खड़े हो गए। सख्त आवाज़ में बोले—"वंटू, मैंने तुम्हें अकेले में इसलिए बुलाया है कि तुम्हें सावधान कर दूं। तुम इन दोनों से अपने किए के लिए क्षमा मांगो और आगे से ऐसा काम न करने का वचन दो।"

वंटू नीचे सिर झुकाए बैठा रहा। प्रिंसिपल ने फिर अपनी बात दोहराई। वंटू ने तब भी कोई उत्तर नहीं दिया।

प्रिंसिपल ने कहा—"वंटू, खड़े हो जाओ।" वंटू खड़ा हो गया। उसका सिर उसी तरह नीचे झुका था। प्रिंसिपल ने कहा—"देखो, यहां और कोई नहीं है। शरमाने की भी बात नहीं है। इनसे क्षमा मांग लो और जाओ। जाकर अपना काम करो।"

"मैंने कभी किसीसे क्षमा नहीं मांगी।" वंटू ने धीरे से कह दिया।

"लेकिन क्षमा मांगना खराब तो नहीं है।" प्रिंसिपल ने कहा—"और फिर जहां कोई गलती हुई हो, वहां तो खुशी के साथ क्षमा मांगनी चाहिए। क्षमा मांगना विनय का प्रतीक है।"

"होगा।" वंटू ने बिना हिचक के उत्तर दिया।

"तो तुम्हें बड़ा आदमी नहीं बनना ?" प्रिंसिपल ने कोमल होकर उससे पूछा।

"क्षमा मांग कर नहीं।" वंटू अडिग था।

प्रिंसिपल को गुस्सा आ गया। उन्होंने कहा—"वंटू, मैं चाहता था कि तुम्हें परेशानी न उठानी पड़े। तुम शायद परेशान ही होना चाहते हो।

यह मामला फिर 'विद्यार्थी परिषद्' में जाएगा। आज ही तुम्हारी सजाएं पूरी हुई हैं। सात दिनों तक तुम कितने परेशान रहे। मैंने इसीलिए इस मामले को यहीं निपटाने का विचार किया था। आगे तुम्हारी मरजी।"

बंटू मूक खड़ा रहा। उसका सिर उसी तरह झुका हुआ था। अब उसकी आंखें भर आई थीं। एकाएक उनमें आंसू आ गए और वे नीचे गिरने लगे। प्रिंसिपल ने उसकी पीठ पर हाथ रखा। बोले—"ये आंसू व्यर्थ हैं, बंटू। इनमें कहीं पश्चात्ताप की गंध नहीं है। ये आंसू तुम्हारी कमजोरी के प्रतीक हैं। तुम्हारे मन में एक अहम् भरा हुआ है। यह सब तुम्हारा दोष नहीं है। दोष तुम्हारे माता-पिता का है। उन्होंने ही तुम्हें बिगाड़ा है। तुम जा सकते हो।"

बंटू का मन हुआ कि वह जोर से चिल्ला-चिल्लाकर प्रिंसिपल से कह दे कि उसके माता-पिता बहुत अच्छे हैं। वे हमेशा उसकी सुख-सुविधा का ध्यान रखते रहे हैं। उनमें कोई खराबी नहीं है। खराबी औरों में है।

बंटू एक क्षण वहां खड़ा रहा। फिर वहां से चला गया।

उसके जाते ही प्रिंसिपल को एक बड़ा धक्का लगा। वह अपनी कुर्सी पर बैठ गए। काला लड़का वहां से चला गया था। वार्डन सामने की कुर्सी पर आकर बैठ गईं। बोलीं—"यह लड़का पूरी तरह खराब हो चुका है। कोई इलाज नजर नहीं आता।"

"इलाज है। परन्तु···" उन्होंने एक लम्बी सांस ली। वार्डन की तरफ देखकर कहा—"आप काम कीजिए। फिर देखा जाएगा।"

बंटू प्रिंसिपल के कमरे से लौटा तो बेहद परेशान था। उसे लगा, सभी लोगों ने उसके चारों तरफ एक घेरा डाल रखा है। वे उसे झुकाना चाहते हैं।

'पर मैं नहीं झुकूंगा'—बंटू ने अपने-आपसे जोर से कहा। मनोज ने सुना तो पूछा—"क्या हुआ, बंटू ?"

"कुछ नहीं"—उसने कहा—"हर कोई चाहता है कि मैं क्षमा मांगूं। क्यों मांगूं ?"

मनोज उठकर उसके पास आ गया। बोला—"बंटू, मुंह से 'क्षमा' कह देना कितना आसान है। अंगरेजी में तो हर ज़रा-सी बात पर 'सॉरी' कह-

कर छुट्टी मिल जाती है। फिर तुम्हें परेशानी क्यों होनी चाहिए।"

—"नहीं, मैं क्षमा नहीं मांग सकता। यह विद्यालय कितना अजीब है। हर लड़के को झुकना सिखाता है।"

"झुकना ही तो जीवन का रहस्य है"—मनोज ने सुनी-सुनाई बात दोहरा दी। उसने कहा—"बरगद का झाड़ हवा के सामने कभी नहीं झुकता। लेकिन उसका उसे फल भोगना पड़ता है। जब वह गिरता है तो उसकी जड़ों तक का पता नहीं चलता। इतना भारी झाड़ न झुकने की अपनी ज़िद में समूल नष्ट हो जाता है। और दूसरी ओर बेंत का झाड़ है। हवा के साथ झुकने में अपना अपमान वह नहीं समझता। फल यह होता है कि बड़ी से बड़ी आंधी क्यों न आए, बेंत के झाड़ का बाल भी बांका नहीं होता...।"

बंटू ने उसे बीच में रोक दिया। बोला—"मैं कोई झाड़-पेड़ नहीं हूं। मनुष्य हूं।"

"मनुष्यों में श्रेष्ठ ईसा थे, बुद्ध थे, मोहम्मद पैगम्बर थे, राम और कृष्ण थे। इन सबने नम्रता के साथ झुकना सिखाया है। झुककर ही वे महान् बने हैं।" मनोज की बात का बंटू पर उल्टा असर पड़ा। उसने कहा—"मैं इनमें से कोई नहीं हूं। मनोज! मैं बंटू हूं। तुम्हें यह नहीं भूलना चाहिए।"

मनोज वहां अब नहीं ठहर सका। वह बंटू को जानता था। वह अपनी सीट पर लौट आया और पढ़ने लगा।

बंटू से पढ़ा नहीं गया। उसका दिमाग और भारी हो गया। उसकी समझ में यह नहीं आया कि ये सब लोग उसे झुकने के लिए क्यों उतारू हैं। वे झुकना चाहते हैं तो झुकें। उसके सामने एक बड़ी चुनौती थी। वह झुकता है या ये सब झुकते हैं। उसके मन में एक गठान बंध गयी। उसने इस चुनौती का दृढ़ता के साथ सामना करने का निश्चय किया।

"जो होगा देखा जाएगा"—वह अपने-आप बुदबुदाया और अपनी पुस्तक बन्द कर कमरे के बाहर चला गया।

क्रम चलता रहा। बंटू खुश होता और कभी परेशान नज़र आता। कोई एक सीधा और आसान रास्ता उसे दिखाई ही नही देता था।

सुबह-सुबह घुड़सवारी में उसे मजा आने लगा। पहले दिन तो उसने खूब आनन्द लिया। आशा कभी घोड़े पर चढ़ी नहीं थी। पहली बार चढ़-कर उसने बंटू की बराबरी करनी चाही तो बंटू ने पीछे से उसके घोड़े को एक कोड़ा लगा दिया। फिर क्या था, घोड़ा हवा से बातें करने लगा। थोड़ी दूर जाकर उससे आशा नीचे गिर पड़ी। बंटू ने पास जाकर अपना घोड़ा रोका और खूब हंसा।

अच्छी बात तो यह थी कि आशा रेत पर गिरी थी। वरना उसे बड़ी चोट आती। आशा का गिरना बंटू को अच्छा लगा।

"बहुत बड़ी-बड़ी बातें करती हो। देख लिया अब।"—बंटू ने चिढ़ाते हुए कहा।

आशा उठकर खड़ी हो गयी। घोड़े पर से बंटू के सामने नीचे गिरना उसे अच्छा नहीं लगा। परन्तु वह परेशान नहीं हुई। मुस्कराकर उसने अपनी हीन भावना को छिपा लिया। उसने निश्चय कर लिया कि एक न एक दिन बंटू को घुड़सवारी में नीचा दिखाकर रहेगी।

बंटू के लिए घुड़सवारी एक खेल की तरह हो गया। उसके उचाट मन को थोड़ी राहत मिली। अब सुबह उठने में उसे परेशानी नहीं होती थी। वह खुशी-खुशी उठने लगा। घुड़सवारी के लिए वह कवायद भी प्रसन्नता के साथ कर लेता था, यद्यपि इसमें उसे कतई मजा नहीं आता था।

शाम को संगीत का कार्यक्रम होता। प्रार्थना के घण्टे के बाद ही वह शुरू हो जाता। पहले दिन उसकी भेंट संगीत की अध्यापिका से हुई। वे आंखों से अंधी थीं। उनका नाम रेखा था। लेकिन लड़के और लड़कियां उन्हें 'रेखा बहन जी' कहा करते थे।

संगीत की कक्षा में अधिकांश संख्या लड़कियों की थी। लड़के बहुत थोड़े थे। लेकिन लड़के और लड़कियों की संगीत-शिक्षा में अन्तर था। लड़कियां सितार, वीणा, हारमोनियम और सारंगी बजाना सीखती थीं। इसके साथ शास्त्रीय संगीत के पक्के गाने उन्हें सिखाये जाते थे।

लड़कों के लिए अंग्रेजी वाद्य अधिक थे। बंटू पियानो बजाना सीखना चाहता था। मनोज की पसन्द गिटार में थी। दोनों को मनचाहे वाद्य बजाने के लिए मिल गए। रेखा बहन जी ने पहले दिन बंटू को पियानो के ट्यूनों

के बारे में समझाया। यह बताया कि किस बटन को दबाने से कौन-स
स्वर निकलता है। उन स्वरों का अर्थ क्या है। और बजाते समय दोनों पैं
कहां होने चाहिए। उन्होंने स्वयं सब कुछ करके बतलाया।

बंटू को एक सुखद आश्चर्य हुआ। रेखा बहन जी अंधी हैं, तब भी सब कु
बड़ी मुस्तैदी से कर लेती हैं। बंटू ने देखा, उनमें बिजली की तरह गति है
वह पियानो सिखाती हैं, तो गिटार भी उसी समय सिखा सकती हैं। इन
सिखाते-सिखाते वे बिना अवरोध के हारमोनियम और सितार वाली लड़
कियों के पास भी चली जाती हैं। वीणा बजाते-बजाते तबले पर गलत थाप
दी जा रही है, इसका अंदाज़ भी वे लगा लेती हैं।

आंखें न होते हुए भी वे जैसे सब कुछ देख लेती थीं।

आशा ने सितार बजाना सीखा था। अब उसने वीणा बजाना सीखना शुरू किया। जब वह वीणा बजाना शुरू करती तो बंटू अपना पियानो ज़ोर-ज़ोर से बजाने लगता। उसके बेसुरे स्वर बंटू को अच्छे लगते। इनसे आशा को अवरोध होगा। परन्तु रेखा बहन जी तेज़ थीं। वह वहीं से ज़ोर से आवाज़ देतीं। बंटू यदि तब भी न मानता तो वे दौड़कर आतीं और बंटू की अंगुलियों को ठीक जगह पर रख देतीं।

बंटू इस तरह कभी बदमाशी करता और कभी गम्भीर होकर रुचि के साथ पियानो बजाता। पियानो बजाते-बजाते उसके दिमाग में कई तरह के विचार आते। कभी वह सोचता कि उठकर आशा की वीणा के तार तोड़ दे। कभी रेखा बहन जी के सामने से हारमोनियम उठाकर अलग कर देना चाहता। कभी उसका मन होता कि पियानो के सारे बेसुरे बटनों को और तेज़ी से दबाये, ताकि उस कमरे में केवल उसीकी आवाज़ फैलती रहे।

रेखा बहन जी यह न होने देतीं। जब कभी बंटू ऐसा करता तो वे दौड़कर चली आतीं। बंटू को लगने लगा था कि रेखा बहन जी अंधी नहीं हैं, अंधी बनने का उपक्रम करती हैं।

एक बार उसने मनोज से कह भी दिया। बोला—"मनोज, तुम देखते हो रेखा बहन जी को। ज़रूर ये अंधी बनती हैं, हैं नहीं। वह जो काला चश्मा लगाती हैं न, इसीलिए। हम उन्हें न देख पाएं, वे हमें देखती रहें।"

"नहीं, बंटू—" मनोज ने कहा—"वे बनती नहीं हैं। उनकी दोनों

आंखें नहीं हैं। कहते हैं, लड़ाई में उनकी दोनों आखें चली गईं।"

"क्या वे लड़ने गई थी ?"—बंटू ने पूछा।

"नहीं, लड़ने नहीं गई थीं। वे उन दिनों सिंगापुर में रहती थीं। जापान की सेनाओं ने वहां हमला किया था। तब एक बम उनके पास आकर गिरा था। उसके टुकड़े उनकी आंखों में चले गए थे। वे तभी से अंधी हैं।"

बंटू को तब भी हमदर्दी नहीं हुई। उसने पूछा—"यह तुमसे किसने बताया ?"

"उन्होंने।"—बंटू से मनोज ने कहा—"एक दिन रेखा बहन जी ने अपनी सारी कहानी सुनाई थी।"

"तब तो वह कहानी रही होगी"—बंटू ने मजाक उड़ाते हुए कहा—"और तुम उसे सच मान गए ?"

"बंटू !" मनोज जोर से बोला—"तुम जाने अपनेको क्या समझते हो ! किसीपर तुम्हें विश्वास ही नहीं होता। अरे, आखें भर सब कुछ नहीं हैं। कई तो आंखों के रहते हुए भी अंधे होते हैं। तुमने पढ़ा नहीं ? आदमी के भीतर एक आंख और होती है। वह मन की आख है। मन की आंख तेज हो तो बाहर की आंखों के न रहने हुए भी आदमी सब देख सकता है।"

"अच्छा।" बंटू को यह सुनकर अचरज हुआ। उसने कहा—"तो रेखा बहन जी के मन में एक आंख है। वही सब देखती है। मैं उनसे कल पूछूंगा कि मेरे कपड़ों का रंग क्या है ?"

"यह बात तो वे जरूर बता देंगी···"मनोज ने कहा—"लेकिन इसके बाद और कुछ मत पूछना।"

"क्यों ?"—बंटू ने पूछा।

"हमारे विद्यालय की ड्रेस के बारे में उन्होंने जरूर सुना होगा। इसलिए उसे वे जरूर जानती होंगी। बाकी कैसे जान सकती हैं।"

"तुम्हींने तो कहा था कि उनके भीतर एक आंख और है।" बंटू ने शैतानी से कहा।

इस तरह बार-बार प्रश्न पूछना मनोज को अच्छा नहीं लगा। उसने कहा—"तुम्हारी समझ में कुछ नहीं आता।"

यह सुनते ही बंटू को गुस्सा आ गया। उसने कहा—"तुमने क्या कहा ? मेरी समझ में कुछ नहीं आता ! यानी मैं नासमझ हूं, गधा हूं !"

"मैंने तुम्हें गधा तो नहीं कहा।" बंटू ने जोर से जवाब दिया।

"तुम्हारा मतलब तो वही था।" मनोज बोला।

"हूं···ऊं···ऊं···"कहते हुए बंटू ने एक बार मनोज की ओर देखा और टेनिस का रैकेट लेकर बाहर चला गया।

दूसरे दिन दोपहर को विद्यालय के बड़े हाल में सब लोग एकत्रित हुए। बंटू के मन में एक बड़ा तूफान उठ रहा था। इस मीटिंग में कई बातें सामने आएंगी। सभी लोग उसका विरोध करेंगे। प्रिंसिपल साहब भी कसर नहीं छोड़ेंगे। तब···?

बंटू चुपचाप आकर एक कोने में बैठ गया। उसी समय उसने मनोज को आते देखा। फिर आशा को भी। उसे लगा, ये दोनों भी उसकी शिकायत किए बिना नहीं रहेंगे। उसके कानों में एक साथ कई आवाजें गूंजने लगीं।

—इसने हमें घोड़े से गिराया था।

—गिराकर वह खूब हंसा था।

—इसने मुझे गधा कहा था।

—यह कहता था कि रेखा बहन जी ढोंग करती है। वे अंधी नहीं हैं !

—और···!

और वह चक्कर खाने लगा। प्रिंसिपल से बड़ा यहां और कौन है। उसने मन ही मन भगवान का नाम लिया। फिर उसने मन पक्का कर लिया। इस बार किसीने सजा दी तो वह पिताजी को तार भेज देगा। और वापस चला जाएगा। वह किसीसे डरेगा नहीं, चाहे वह कोई हो।

पहले की तरह एक दरवाजे से तीन लड़के भीतर आए। दूसरे दरवाजे से दो लड़कियां आईं। सबके आते ही विद्यार्थियों ने उठकर उनको सम्मान दिया। फिर सब बैठ गए।

हरकिशन अब भी प्रधान न्यायाधीश के पद पर था। बंटू को यह बात अपने-आपमें बेतुकी और गलत लगी। वह उसीके साथ तो पढ़ता है। फिर

वही क्यों प्रधान न्यायाधीश के पद पर बैठे। उसमें सुरख़ाब के पर तो नहीं लगे। और यदि वह वहां बैठ सकता है, तो बंटू क्यों नहीं ?

'लेकिन मेरे पीछे तो सारा विद्यालय हाथ धोकर पड़ा है। मुझे कौन बैठने देगा।' —उसने अपने-आप कहकर एक ठण्डी सांस भर ली। परन्तु उसने यह भी तय कर लिया कि वह जूरी के फ़ैसले का विरोध करेगा। ये कौन होते हैं, फ़ैसला देने वाले !

परिषद् की बैठक आरम्भ हुई। पहले विद्यालय की रिपोर्ट पढ़ी गई। फिर वार्डन अपर्णा सेन ने आकर एक पत्र पढ़ा। यह पत्र गवर्नर के पास से आया था। उसमें कई बातें लिखी थीं। अच्छे विद्यार्थियों को आर्थिक सहायता देने की बात थी। चुने गए विद्यार्थियों को ऊंची शिक्षा के लिए विदेश भेजने का प्रस्ताव था।

बंटू ने पूरा पत्र ध्यान से सुना। उसे खुशी हुई, बुरे लड़कों के लिए उसमें कोई बात नहीं लिखी थी। अब तक बंटू न चाहते हुए भी अपने को बुरा समझने लगा था, क्योंकि सभी उसे बुरा कहते थे।

इसके बाद प्रधान न्यायाधीश ने पिछली बैठक का एक प्रस्ताव दोहराया। उसमें कहा गया था कि अगले सप्ताह पिकनिक का कार्यक्रम रखा जाएगा। सभी सदस्य इसके लिए तैयार हो गए। तब वार्डन से प्रार्थना की गई कि वे पिकनिक के कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत करें।

वार्डन ने सामने आकर लड़कों को शुभकामनाएं दीं। फिर बताया कि प्रिंसिपल साहब ने पिकनिक में जाने की आज्ञा दे दी है। जाने का इन्तज़ाम भी कर लिया गया है, दो दिन के बाद हम सब पिकनिक मनाने कश्मीर चलेंगे। हमारा कैम्प पहले श्रीनगर में लगेगा। फिर पहलगाम में। एक सप्ताह के बाद हम सब लौट आएंगे। जिन लड़के और लड़कियां को पिकनिक में जाना हो, उन्हें चाहिए कि वे अपनी कक्षा के अध्यापकों के पास अपना नाम लिखवा दें।

सारे विद्यार्थियों ने तालियां पीटीं। तालियों की गड़गड़ाहट से पूरा हाल गूंज उठा। बंटू भी अपनी प्रसन्नता को नहीं रोक सका। वह सब कुछ भूल गया।

प्रधान न्यायाधीश ने लोहे का हथौड़ा टेबल पर तीन बार पीटा

"शान्ति ! शान्ति !" इतने गहरे कोलाहल के बाद एकाएक गम्भीर शान्ति सारे हाल में छा गई। कागज भी हिलता तो उसकी सरसराहट सुनाई देती। सारे विद्यार्थी आगे की कार्यवाही के लिए तैयार हो गए। अब शिकायतें पेश करने का मौका था।

आठवीं कक्षा के कप्तान ने खड़े होकर एक लड़की की शिकायत पेश की। वह सारे सप्ताह सोती रही है। उसने पढ़ाई नहीं की।

शिकायत के बाद उस लड़की को खड़े होने का आदेश मिला। उसने अपनी सफाई पेश कर दी। उसका स्वास्थ्य ठीक नहीं था, इसलिए वह पढ़ नहीं सकी।

कप्तान ने उसपर फिर दोष लगाया। उसे अपने स्वास्थ्य की सूचना देनी थी। लड़की ने अपनी गलती तुरन्त मंजूर कर ली और इसके लिए क्षमा मांगी। उसने कहा—"मेरा मतलब किसीको गुमराह करने का नहीं था। मैं किसीको परेशान नहीं करना चाहती थी। मैं जानती थी कि यह पेट की खराबी से हुआ है। अपने-आप ठीक हो जाएगा। तब भी मैं अपनी गलती स्वीकार करती हूं। उसके लिए परिषद् से क्षमा मांगती हूं।"

"लानत है" वंटू के मुंह से अचानक निकल गया। सारे विद्यार्थियों ने उसकी ओर देखा। वह पानी-पानी हो गया। उसने अपना रुमाल अपने मुंह में ठूंस लिया और सिर झुकाकर नीचे छिप गया।

प्रधान न्यायाधीश ने फिर लोहे का हथौड़ा पीटा। सब शान्त हो गए। किसीने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया।

उसी समय आशा खड़ी हुई। वंटू घबरा गया। उसे लगा, वह दौड़कर आशा का मुंह दबा दे। कैसी लड़की है वह ?

आशा ने खड़े होकर शिकायत की कि उसकी एक किताब चोरी चली गई है। वंटू आश्वस्त हुआ। वह हंस पड़ा।

किताब का चोरी जाना अच्छा नहीं। चोरी का होना ही गलत है। आदेश दिया गया कि इस चोरी का पता लगाया जाए।

इसीके तुरन्त बाद मनोज उठा। वंटू को लगा, मनोज शिकायत किए बिना नहीं रहेगा। परन्तु मनोज ने वंटू की नहीं, रसोइये की शिकायत की। इस सप्ताह सब्जियों में लगातार नमक अधिक पड़ता रहा। इससे भोजन

बड़ा बेस्वाद लगा। विद्यालय के और विद्यार्थियों ने मनोज को बधाई दी। सबने उसका साथ दिया।

इस पूरे सप्ताह की रसोई सचमुच में बेस्वाद थी, परन्तु किसीने इसकी शिकायत नहीं की। इस मामले को बहुत गम्भीर माना गया। आदेश दिया गया कि मुख्य रसोइये को लिखित रूप से सूचना दे दी जाए कि आगे किसीने ऐसी शिकायत की तो उसे निकाल दिया जाएगा।

वार्डन ने इसका जिम्मा लिया।

इसके बाद बंटू की दोनों शिकायतें पेश हुईं—किमाच लगाने की और रात को देर तक जागने की।

रात को देर तक जागने का मामला स्वयं वार्डन ने सामने रखा। इसके बाद उन्होंने कहा—"मैं परिषद् के सामने एक मज़ेदार पत्र पढ़ना चाहती हूं।"

वार्डन ने बंटू का वही पत्र पढ़कर सुना दिया, जो उसने अपने पिता को लिखा था और जिसे वह अपनी लापरवाही से कक्षा की मेज पर छोड़ आया था। बंटू शर्म से गड़ गया। सारे विद्यार्थियों ने उस पत्र का खूब मजा लिया। स्वयं वार्डन ने अपने बारे में लिखी बातें बेहिचक पढ़ीं और हंसती रहीं।

किमाच वाली पूरी घटना स्वयं उस काले लड़के ने पेश की।

जूरियों ने इन दोनों घटनाओं को विद्यालय के अब तक के इतिहास में सबसे गम्भीर माना। प्रधान न्यायाधीश ने जूरियों से सलाह-मशविरा किया। फिर परिषद् को सम्बोधित करते हुए कहा—"सदस्यो, हम प्रिंसिपल साहब से प्रार्थना करते हैं कि वे हमारा मार्ग-दर्शन करें।"

बंटू के होश-हवाश गुम हो गए। उसे लगा जैसे उसकी आंखों के आगे सब कुछ हवा की तरह हिल रहा है। उसका कलेजा जोर से धड़कने लगा।

प्रिंसिपल साहब ने परिषद् को सम्बोधित किया :

"मेरे प्यारे विद्यार्थियो,

"ये घटनाएं वास्तव में गम्भीर हैं। हमारे विद्यालय का अपना नाम है। इस विद्यालय के छात्र देश में नाम कमा रहे हैं। इसकी बहुत प्रतिष्ठा है। मैं चाहता हूं कि विद्यालय का नाम किसी तरह खराब न हो।

" उपद्रव करना लड़कों का काम है। वे लड़के ही क्या जो उपद्रव करना न जानें। लेकिन उनके सामने एक 'लक्ष्मणरेखा' होनी चाहिए। इसके साथ ही अपनी बुराइयों को समझने और परखने की ताकत विद्यार्थियों में होना जरूरी है। जो अपनी बुराई को नहीं पहचान पाता, वह कभी सही रास्ते पर नहीं आ सकता।

" मुझे परिषद् के सामने यह कहते हुए दुःख है कि वंटू के भीतर वह आंख नहीं है। उसमें झूठा दम्भ है। अपने अहम् में वह अपने को बरबाद कर रहा है। और कोई विद्यालय होता तो उसे निकाल दिया जाता, परन्तु हमने कभी ऐसा नहीं किया। वंटू कितना भी ऊधम करे, हम उसे अपने यहां से नही निकालेंगे।"

सबने जोर से तालियां पीटीं। वंटू को लगा जैसे उसके सामने और आसपास तेज हथौड़े पीटे जा रहे हैं। उसने वहां से निकलकर भागना चाहा।

प्रिंसिपल ने आगे कहा—"मैंने वंटू को अपने पास बुलाया था। उससे मैंने क्षमा मांगने की बात कही थी। वह इसके लिए भी तैयार नहीं हुआ।"

वंटू को लगा, सारे विद्यार्थी उसे लानत भेज रहे हैं और नीची नजरों से उसे देख रहे हैं। उसने अपने-आपको एकदम अकेला पाया। उसका मन हुआ कि वह जोर से रो दे और उठकर बाहर चला जाए।

प्रिंसिपल साहब ने अन्त में कहा—"जूरी के सदस्यो, वंटू ने माफी नहीं मांगी। आपको भी उसे मांफी मांगने के लिए बाध्य नहीं करना चाहिए। क्योंकि यह उसकी गलती नहीं है। गलती उसके मां-बाप की है। हर लड़का अपने मां-बाप का प्रतिरूप होता है। जिस दायरे में वह रहता है, वहीं तो सीखता है। इसलिए वंटू निर्दोष है। उसे हम सजा नहीं दे सकते। मेरी यह सलाह है।"

वंटू को लगा, जैसे एक बड़े ज्वालामुखी ने उसे निगल लिया है। इससे बड़ी बेइज्जती और नहीं हो सकती। अब तक उसे ही दोषी माना जाता था। वह किसी तरह ठीक था लेकिन अब तो उसके माता-पिता को अपराधी कहा जाने लगा है। उसके माता-पिता अपराधी नहीं हो सकते। वे कितने अच्छे हैं। उससे कितना प्यार करते हैं···।"

वंटू सोच में डूबा था, तभी प्रधान न्यायाधीश ने खड़े होकर निर्णय

दिया :

"दोस्तो, प्रिंसिपल साहब ने हमें सही रास्ता दिखाया है। बंटू निर्दोष है। हम उसे कोई सजा नहीं दे सकते।"

बंटू को लगा, इससे बड़ा उसका अपमान और कुछ नहीं हो सकता। इससे बड़ी दूसरी सजा नहीं हो सकती। उसके लिए आगे के सारे दरवाजे बन्द कर दिए गए हैं। वह ऐसे विद्यालय में अब नहीं रह सकेगा। वह अपने पिता को लिख देगा कि यहां उन्हें तक अपराधी कहा जाता है। वह इसे सहन नहीं करेगा।...

रात को बंटू ने फिर पत्र लिखना शुरू किया। पहला पत्र वह लेटरबक्स में नहीं डाल सका था। वह वार्डन के हाथ में पड़ गया था। वह कितना आलसी लड़का है। उसने अपनी गलती महसूस की। तय किया कि पत्र लिखकर वह अभी लेटरबक्स में जाकर डाल देगा।

बंटू पत्र लिखता रहा।

मनोज अपने बिस्तर पर बैठा चारों ओर देखता रहा। उसे दुःख था, उसका इतना अच्छा साथी गलत रास्ते पर जा रहा है। इसके साथ ही उसके मन में एक बड़ी रिक्तता थी। बंटू सब कुछ इसलिए कर पा रहा था, क्योंकि उसके पिता जीवित हैं। उसे उनका एक बड़ा सहारा है।

मनोज ने एक लम्बी सांस ली। उसके पिता होते तो वह भी इसी तरह पत्र लिखा करता। मनोज ने अपनी टेबल का दराज खोला और एक किताब निकाली, उसका पृष्ठ भाग सुनहरे रंग का था। यह असल में उसकी डायरी थी। मनोज को डायरी लिखने की आदत थी। यह डायरी उसके पिता की थी। वे इसमें रोज की बातें लिखा करते थे। उसने डायरी के कुछ अंश लौटा कर देखे। उन्हें पढ़ना शुरू किया। एक जगह उसकी नजर ठहर गयी। लिखा था : "मैं चाहता हूं, मेरा बेटा मनोज एक अच्छा वैज्ञानिक बने और खूब नाम कमाये।"

मनोज की आंखों में आंसू उतर आए। आंसुओं का एक कतरा डायरी के बीच में जा गिरा। मनोज ने उसे पोंछा और अपने पिता के इस वाक्य के नीचे उसने लिख दिया :

"पिता जी, आप जो चाहते थे, वही होगा। मुझे शक्ति दीजिए।"

इसके वाद उसने पूरी डायरी लौटाकर देखी। आगे का पृष्ठ कोरा था। ऊपर तारीख लिखकर मनोज ने डायरी लिखनी शुरू की :

"वंटू मेरा सहपाठी है। वह वड़ा ज़िद्दी लड़का है। लेकिन जितने महा-पुरुष हुए हैं, उनमें कोई न कोई ज़िद रही ही है। मुझे विश्वास है, वंटू वड़ा आदमी होगा।"

इसके नीचे मनोज ने समय डाला और उठकर गुसलखाने में चला गया। वंटू ने तव तक पत्र पूरा कर लिया था। वह आंखें चुराकर मनोज को कुछ लिखते हुए देख रहा था। उसे लग रहा था कि मनोज भी उसकी नकल कर रहा है और अपनी मां या वहन को पत्र लिख रहा होगा। वह धीरे से उठा। उसने आसपास देखा। वह नहीं चाहता था कि मनोज यह देखे कि वह उसमें इतनी दिलचस्पी लेता है। मनोज के सामने तो वह यह वताना चाहता था कि उसे और किसीसे कोई मतलब नहीं है।

डरते-डरते वंटू ने मनोज की डायरी का वह अंश पढ़ डाला। उसकी आंखों को सहसा भरोसा ही नहीं हुआ। उसने वह अंश फिर पढ़ा। एक वार तो उसके शरीर में हल्का-सा झोंका दौड़ गया।

एक सुखद और आश्चर्यमिश्रित अनुभूति से वह सिहर उठा। उसके खून में एक गरमी तैर गई। उस गरमी में जो मज़ा था, वंटू ने उसका अनु-भव पहली वार किया।

उसी समय हल्की-सी आहट हुई। वंटू दौड़कर अपने विस्तरे में चला गया। और पहले की तरह पत्र लिखने का वहाना करता रहा। मनोज ने आकर अपनी डायरी वन्द कर दी। उसे टेवल की दराज़ में रखा और ताला लगा दिया।

वंटू सोच रहा था कि मनोज अव ज़रूर उससे वोलेगा, लेकिन मनो ने कुछ नहीं कहा। वह नहीं चाहता था कि वंटू के काम में रुकावट डा जाए।

वंटू ने लिफाफा वन्द किया और उठकर खड़ा हो गया। उसने लौट मनोज की ओर देखा और दरवाज़े की ओर वढ़ा। दरवाज़े तक वह प ही था कि मनोज ने आवाज दी—"वंटू!"

वंटू वहीं खड़ा हो गया। लौटकर उसने मनोज को देखा और बोला—"क्या है ?"

—"तुम कहां जा रहे हो ?"

—"कहीं जा रहा हूं। तुम्हें इससे क्या ?"

मनोज उठकर उसके पास आ गया। वंटू ने लिफाफा पीठ के पीछे छिपा लिया था। मनोज ने उसके कन्धे पर हाथ रखा और कहा—"वंटू, मुझे लिफाफा नहीं देखना। तुम पत्र लिख सकते हो, लेकिन यह पत्र डालने का समय नहीं है। बाहर कोई न कोई तुम्हें देख लेगा। आज 'परिषद्' में जो कुछ हुआ, तुमने वह देख लिया है। क्या अब भी तुम ज़िद करते रहोगे ?"

परिषद् का ध्यान आते ही वंटू झुंझला उठा। बोला—"मैं उसी परिषद् की शिकायत कर रहा हूं। मेरे पिता कलेक्टर हैं। सब लोगों ने उन्हें अपराधी कहा है···"

वंटू आगे कुछ कहता कि मनोज ज़ोर से हंस दिया। वह खूब हंसा। हंसते-हंसते उसने वंटू के दोनों कन्धे पकड़ लिए। बोला—"मेरे अज़ीज़ दोस्त, तुम वाकई बहुत भोले हो।"

वंटू का मन इस स्नेह-व्यवहार से पिघल उठा। उसने डायरी पढ़ ही ली थी। वह मुसकराया। लिफाफा उसने अपनी जेब में रख लिया और मनोज के गले लग गया। पहली बार वंटू के मन में एक मित्र के प्रति आत्मीयता के इतने गहरे भाव उभरे। मनोज तो खुशी से रो पड़ा। वह वैसे ही कमज़ोर और भावुक लड़का था।

थोड़ी देर के बाद वंटू अलग होकर खड़ा हो गया। उसने बाहर देखा। अंधेरी रात थी। होस्टल के कमरों से हल्का-हल्का प्रकाश बाहर आकर सामने के हरे लान पर बिखर रहा था। उस मद्धिम प्रकाश में उसे धूप-छाया का-सा आभास हो रहा था। कल ही उसने अपनी पुस्तक में पढ़ा था कि ज़िन्दगी धूप और छाया की तरह ही आदमी के साथ खेल करती रहती है। उसे यह वातावरण बहुत अच्छा लगा।

उसने ऊपर आकाश में देखा। अनगिनत तारे खरगोश के बच्चों की तरह कुलांचें भर रहे थे। "ये तारे भी निर्जीव नहीं हैं"—उसने अपने-आप

सोचा—'सर ने कल बताया था कि इनमें भी प्राणियों का निवास है। हमारी तरह वे भी हमें देखते होंगे। थोड़े दिनों में हम शायद वहां तक पहुंच भी सकेंगे।' उसने गौर से तेज चमकते तारों को देखा। उसे लगा, जैसे सचमुच उनमें भी जिन्दगी है। और कोई वहां से बातें कर रहा है।

'कोई जगह खाली नहीं।'—उसने अपने मन में सोचा—'मनुष्य हर जगह है।'

उसी समय कुछ हल्के-से स्वर उस वातावरण में आकर फैल गए। हवा धीरे-धीरे बह रही थी और उसमें घुलकर वीणा के स्वर एक हल्का-सा नशा छोड़ते जा रहे थे। ज़रूर यह आशा है। वही वीणा बजा रही है। उसका मन हुआ कि वह वहां चला जाए। और वहीं बैठकर, नजदीक से उन स्वरों को सुने।

मनोज ने देखा, बंटू की आंखें अपलक बाहर कुछ देख रही हैं। तभी कमरे में लगी घड़ी से एक चिड़िया बाहर निकली और उसने नौ बार आवाज़ दी। आखिरी आवाज़ के साथ ही वीणा के स्वर भी मौन हो गए। मनोज ने कहा—"चलो, बंटू, अब हमारे सोने का समय हो गया है।"

दस

एक लम्बी यात्रा

बंटू दूकान से निकला तो धूप पहाड़ों पर चढ़ रही थी। दूकान के सामने उसे परछाईं की तरह छाया चलती-फिरती नज़र आई। उसके हाथ में एक छोटा पैकेट था। वह खुश था। पैकेट से उसने एक टाफी निकाली और मुंह में डाल ली। वह अपने-आप गुनगुनाने लगा।

उसी समय उसे लगा, वह अकेला नहीं है। उसके साथ कोई और है। 'कौन हो सकता है।' उसने अपने-आप सोचा। फिर वह ज़ोर से हंस दिया। उसकी हंसी रुक भी नहीं पाई थी कि पीछे से एक हाथ उसकी पीठ पर आ पड़ा। उसने एकदम लौटकर पीछे देखा। वह विद्यालय की वार्डन अपर्णा सेन थीं। उन्हें देखकर बंटू रुका नहीं। वह धीरे-धीरे चलता रहा।

"वंटू !"—वार्डन ने कहा—"तुम यहां क्यों आए थे ?"

अब वार्डन उसकी बराबरी में थी।

"कुछ सामान खरीदना था, मिस···" वंटू घबराये स्वर मे बोला—"कल पिकनिक में जाना है न, कुछ सामान जरूरी था।"

वार्डन ने बड़े मीठे और सहज ढंग से कहा—"वंटू, विद्यालय का नियम जानते हो ?"

वंटू को यह प्रश्न अजीब लगा। हर जगह, हर समय, हर कोई नियमों की ही बात करता है।

"मुझे कोई नियम नही मालूम"···वंटू ने अपने ढंग से उत्तर दिया।

"वंटू···" वार्डन ने समझाया—"तुम कितने अच्छे लड़के हो···।"

वह अपनी बात पूरी नही कर पाई थी कि वंटू ने बीच मे रोककर कहा—"नहीं मिस, मुझसे बुरा लडका और कोई नहीं है।"

"तुम गलत सोचते हो—" वार्डन ने कहा—"तुममें कोई बुराई नहीं है। अब देखो न, कितनी छोटी-सी बात है। तुम अकेले सामान लेने बाजार चले आए। बाजार आने मे कोई बुराई नहीं है। परन्तु कभी अकेले नही आना चाहिए। यह विद्यालय का नियम है। और यह नियम सबकी सुविधा के लिए ही बनाया गया है। किसीको अपने साथ ले आते··।"

"मेरे साथ कौन आता ?"—वंटू ने उदास स्वर मे कहा।

"क्यों, तुम्हारा कोई दोस्त नही है ?"

"नहीं।"—उसने छोटा-सा उत्तर दिया।

वार्डन ने कहा—"वंटू, यही गड़बड़ी है। तुमने कभी सोचा है, तुम्हारा कोई दोस्त क्यों नहीं है ?"

वार्डन की आवाज मे बड़ी आत्मीयता थी। वंटू उसके कारण नरम पड़ गया। बोला—"मिस, मुझे नही मालूम।"

"तुम्हें मालूम है"—वार्डन ने कहा—"आदमी और प्राणियों से इसीलिए अलग है। उसके भीतर एक बड़ी चीज होती है। वह चीज है विवेक। हम जो भी करते हैं या जो भी सोचते हैं, हमारा विवेक उसका विश्लेपण कर देता है। हम तुरन्त अपने-आप जान लेते हैं कि हम गलती कर रहे हैं या नही।"

डांटती हैं तो मैं पिताजी से शिकायत कर देता हूं। पिताजी उन्हें डांट देते हैं। मुझे खुशी होती है। पढ़ता भी मैं वही हूं, जो मुझे अच्छा लगता है।"

अपर्णा सेन बंटू के बिगड़ने का सारा कारण समझ गयी। बोली—"बंटू, तब तो यह तुम्हारा नहीं, तुम्हारे पिता का दोष है। प्रिंसिपल सर ने ठीक ही समझा था।"

इसे सुनते ही बंटू को गुस्सा आ गया। बोला—"मिस, मेरे पिता को दोषी ठहराने का मजा सबको मिलेगा।"

"और मुझे भी" मिस ने हंसते हुए पूछा।

बंटू "हां" कहना चाहकर भी नहीं कह सका।

अब तक दोनों विद्यालय के पिछले गेट तक आ गए थे। वार्डन ने समझाया—"बंटू, इस तरह काम नहीं चलेगा। तुम घर जाना चाहो तो उसके लिए इस तरह परेशानियां मोल लेना अच्छी बात नहीं है। थोड़े दिन यहां मन लगाकर रह जाओ तो तुम्हें इससे अच्छी जगह और कोई नहीं लगेगी। सबसे खराब बात तो यह है कि तुम गलती करते हो, परन्तु उसे स्वीकार नहीं करते।"

बंटू चुप रहा। पिछले गेट से भीतर आते हुए वार्डन ने कहा—"मेरे कमरे में आओ।" वह बंटू को अपने कमरे में ले गईं। बोलीं—"अकेले बाजार जाना गलत है। यह तुम स्वीकार करते हो?"

"हां···न···।" बंटू स्पष्ट उत्तर नहीं दे पाया।

"इसके लिए तुम्हें खेद प्रकट करना चाहिए।"—वार्डन ने कहा। वार्डन के कहने का ढंग ऐसा था कि बंटू उसका विरोध नहीं कर सका। बोला—"मुझे खेद है, मिस।"

वार्डन ने पहली बार बंटू को झुकते हुए देखा था। वह खुश हुईं। उसके सिर पर हाथ फेरते हुए उन्होंने कहा—"जाओ, अब ऐसा कभी मत करना।"

बंटू अपने कमरे में आया तो मनोज दरवाजे पर खड़ा था। उसके पास आशा भी खड़ी थी। दोनों कुछ बातें कर रहे थे। बंटू को देखकर वे खुश हुए। दोनों एकसाथ बोले—"हलो, बंटू···।"

बंटू को पता लगा कि ये दोनों उसकी खोज कर रहे थे। कप्तान भी ढूंढने आया था। बंटू को न पाकर वह नाम नोट कर ले गया है। प्रिंसिपल

साहब भी शायद परेशान थे। उन्होंने विद्यालय के चपरासी को ढूंढ़ने भेजा है।

वंटू का माथा चकराने लगा। फिर भी वह आश्वस्त था। उसके साथ वार्डन भी थीं। उसे खुशी हुई, उसने वार्डन के सामने 'खेद प्रकट' कर उन्हें नाराज़ भी नहीं किया। वह ज़ोर से हंसा। हंसते हुए उसने एक-एक टाफी दोनों को दी। एक स्वयं खाई। दोनों के कन्धे पर अपना एक-एक हाथ रखकर उसने कहा—"अरे, तुम लोग तो अब तक सोच में ही पड़े हो। जो हो गया सो भूल जाओ। कल पिकनिक में चलना है और अभी संगीत में। पियानो के साथ मैं आज एक नया गीत गाऊंगा।"

वंटू खुश खड़ा था। उसके चेहरे पर खुशी की सुरखी तैर रही थी। मनोज और आशा के चेहरों से अब भी चिन्ता की रेखाएं नहीं मिटी थीं। तब भी उन्होंने मुस्कराने की कोशिश की।

"तुम दोनों बाथरूम में जाकर मुंह धो आओ।" वंटू ने कहा—'उल्लुओं की तरह लगते हो।"

तीनों एकसाथ हंस दिये।

'संगीत-कक्ष' में जाकर वंटू खड़ा हुआ। उसने पियानो आज गलत ढंग से नहीं बजाया। उसके साथ उसने एक रिकार्ड निकालकर लगा दिया और स्वयं भी गाने लगा। उसने गाना शुरू किया तो सारे कमरे के विद्यार्थी वहां जमा हो गए। वंटू बहुत मीठे स्वर में गा रहा था। वह तन्मय था और झूम-झूमकर पियानो के स्वर छेड़ रहा था।

संगीत की अध्यापिका भी वहां आ गयीं। वह आने लगीं तो एक ढोल से उनका पैर जा टकराया और वह गिर पड़ीं। उनके गिरते ही वंटू ने पियानो बन्द कर दिया। वह दौड़कर उनके पास गया। उनका काला चश्मा दूर गिर गया था। उसने चश्मा उठाकर मिस को दिया। पूछा—"मिस, लगा तो नहीं?"

"नहीं।" संगीत की अध्यापिका ने कहा—"यह तुम गा रहे थे, वंटू?"

"जी।"—उसने कहा।

"तुम तो खूब अच्छा गा लेते हो। तुम्हारा गला भी बड़ा मीठा है।" अपनी तारीफ सुनकर वंटू को खुशी हुई।

संगीत का समय पूरा हुआ तो बंटू अपने कमरे की ओर चला। रास्ते में उसे मिस के गिरने की याद आई तो वह अपने-आप मुस्करा उठा। परन्तु दूसरे ही क्षण उसका मन बदल गया। उसका चेहरा उतर गया। उसने एक बार सोचा था कि संगीत की मिस बहाना करती हैं, उनकी आंखें हैं। आज उसने देख लिया था। वे सचमुच अंधी थीं। बंटू को अपनी गलती के लिए पश्चात्ताप हुआ।

'मुझे यूं धारणा नहीं बना लेनी चाहिए।' उसके मन में अपने-आप यह विचार उभरा। उसका मन हुआ कि वह लौटकर संगीत की मिस के पास जाए और अपने सोचे हुए के लिए खेद प्रकट करे, परन्तु यह विचार क्षणिक था। दूसरे ही क्षण उसके मन से एक लहर उठी।

'खेद प्रकट करना, क्षमा मांगने की तरह है और क्षमा मांगना कमज़ोर लड़कों का काम है।'—उसने अपना पुराना विचार मज़बूत बना लिया। उसे फिर हंसी आ गई। संगीत की मिस के गिरने का दृश्य जब इस बार उसकी आंखों के सामने आया, तो वह अपने-आप खूब हंसा।

सूरज निकलने के पहले ही स्कूल की बस रवाना हो गई। विद्यालय के चालीस विद्यार्थी कश्मीर के लिए रवाना हुए। बाकी या तो अपने घर चले गये या विद्यालय में ही रुक गए। बस जब रवाना होने लगी तो बचे हुए लड़के-लड़कियों ने रूमाल हिलाकर अपने साथियों को विदा दी।

"हुर्रा..."—एकसाथ आवाजें उठीं और उसीके साथ बस आगे सरक गई।

दो दिन की लम्बी यात्रा कम दिलचस्प नहीं थी। बस में विद्यार्थियों के साथ वार्डन थीं। गणित के अध्यापक थे—चश्मुद्दीन। उनका यह नाम अब तक बंटू ने सारे विद्यालय में लोकप्रिय बना दिया था। दो-तीन अध्यापक और थे। बंटू ने देखा, वह काला लड़का भी साथ है—वह बस के आखिरी कोने में दुबका-सा बैठा हुआ था। उसे देखते ही बंटू को हंसी आ गयी। उसने अपनी हंसी रोकी नहीं। वह जोर से हंसने लगा। उसे हंसता हुआ देखकर बिना कुछ सोचे-समझे और लड़के भी हंसने लगे।

बंटू जिस सीट में बैठा था, उसीमें दो लड़के और थे—हरकिशन और

मनोज। हरकिशन को अपने पास बैठा देखकर बंटू को खुशी हुई। यही लड़का है जो प्रधान न्यायाधीश बनता है। बंटू उसे जिज्ञासा के साथ देखता रहा।

सामने की सीट पर लड़कियां बैठी थीं। उनमें आशा थी और मोहिनी गुप्ता भी। मोहिनी को ही साहस दिखाने के लिए पुरस्कार दिया गया था। बंटू सभी लड़कों की ओर अलग-अलग नजर से देख रहा था। बीच-बीच में वह कुछ गड़बड़ी कर देता, जिससे एक गहरा ठहाका सारी बस में गूंज उठता। सारे विद्यार्थी एक नये मूड में थे और उनके चेहरे में से खुशी के झरने फूट-फूटकर बह रहे थे। बंटू पिछला सारा इतिहास भूल गया था। वह यह भी भूल गया था कि उसे इस विद्यालय में अधिक दिनों तक नहीं पढ़ना—उसका यहां मन नहीं लगता और वह इसे छोड़कर घर वापस जाना चाहता है।

श्रीनगर पहुंच कर सबके मन बांसों उछलने लगे। एक अच्छे होटल में उनके ठहरने का प्रबन्ध किया गया। होटल के सामने झेलम नदी बहती थी। झेलम के दोनों ओर हाउस-बोटें थीं और ढेर-से शिकारे। यहां पहुंचने के पहले उन्होंने झेलम का उद्गम स्थान देखा था—वेरी नाग। एक चौड़े और गहरे कुंड से झेलम का पानी बाहर निकलता है। ऊपर पाइन के लम्बे झाड़ हैं। कुंड का पानी ५० फुट गहरा है। लेकिन इतना साफ और नीले रंग का है कि नीचे की सतह तक दिखाई देती है। लगता है सतह हाथ से छुई जा सकती है। कुंड में तैरती रंग-बिरंगी मछलियां बंटू को बहुत पसन्द आई थीं। उसने रसभरी के लाल-काले फल खरीदे थे और मछलियों को चुगाए थे।

बाहर निकलते हुए उसने सामने का बोर्ड पढ़ा था। उसमें लिखा था : इसे मुगल बादशाह शाहजहां ने बनवाया था। बंटू ने सोचा था—इस तरह के बाग-बगीचे बनवाना बादशाहों का ही काम है। और उसके पिता किसी बादशाह से कम नहीं हैं। बड़ा होकर वह उनकी गद्दी छीनेगा और फिर ऐसे ही बड़े-बड़े बाग बनवाएगा। इस विचार के कारण 'वेरीनाग' उसकी आंखों में समा गया था।

इसी छोटे-से कुंड से निकली झेलम नदी श्रीनगर में आकर इतनी फैल

गई थी। होटल में एक बड़ा हाल था और उसी हाल मे सारे विद्यार्थी और शिक्षक ठहरे हुए थे। वंटू ने अपने लिए एक अलग कोना चुन लिया था। उस कोने पर एक खिड़की थी और उस खिड़की से झेलम पर चलते हुए रंग-बिरंगे शिकारे आसानी से देखे जा सकते थे।

दूसरे दिन वे निशात बाग से लौट रहे थे। अब तक वंटू ने मनमाना आनन्द लूटा था।

रात को एक बड़ी घटना घट गई। उसके कारण गिरीश को सज़ा दी गई। उसे श्रीनगर में घूमने नहीं दिया जाएगा। वह कमरे में ही बन्द रहेगा। वंटू को इससे बड़ा सुख मिला।

उसने मनोज से कहा—"मनोज, वह काला-कलूटा, तेल पिये डंडे की तरह मुस्तंद लड़का अब रास्ते में न आएगा।"

'बेचारा!"—आशा ने कहा—"हम रोज़-रोज़ कश्मीर घूमने तो नहीं आते। उसे इतना कठोर दण्ड अपर्णा मिस को नहीं देना था।"

"तुम्हें उसपर बड़ी दया आती है।"—वंटू ने व्यंग्य किया।

"हां।"—आशा ने कहा—"जब तुम्हें सज़ा मिलती थी तब मुझे तुमपर भी दया आती थी।"

"ऊं-ऊं-ऊं"—वंटू को अपनी तुलना उस लड़के के साथ करना अच्छा नहीं लगा। कहां यह राजा भोज और कहां वह भनुआ तेली। वंटू मुनकर अलग हो गया। उसने मनोज के गले में हाथ डाला और उसके कान में कुछ फुसफुसाने लगा। यह देखकर आशा भी उसके पास आ गई। बोली—"अच्छा भाई, मुझे बोर मत करो।"

मनोज ने उसे भी अपनी बातों में शामिल कर लिया। वंटू के मन में जैसे एक बड़ा अनपच था। वह उसे उगलना चाहता था और चाहकर भी पेट के भीतर नहीं रख पा रहा था। उसने पूछा—"कल क्या हुआ, तुम्हें पता है?"

आशा ने कहा—"हां, कुछ तो पता है, परन्तु पूरी बात क्या है, नहीं मालूम। तुम्हें शायद मालूम है। बताओ न?"

"असल बात बताऊं?"—वंटू ने कहा।

"ज़रूर, ज़रूर"—आशा और मनोज एकसाथ बोले।

वंटू ने बताया—" दोस्त, मजा आ गया। कल रात मुझे बड़ी ठण्ड लगी। बहुत देर तक तो मैं सिकुड़ता रहा। अपने घुटनों को छाती के पास लगाए किसी तरह समय काटता रहा। परन्तु फिर ठण्ड सहन नहीं हुई। और लोग खर्राटे ले रहे थे। यह मुझे निहायत गलत और वेढंगी बात लगी।

" मैं अपने बिस्तर से उठ बैठा। मैंने बिजली की बटन दबायी। बिजली गायब थी। मैंने सुख की सांस ली। रात को सोते समय मैंने गणित के सर को रज़ाई के ऊपर कम्बल ओढ़ते हुए देख लिया था। "

"रज़ाई के ऊपर कम्बल !"—अचरज से आशा ने कहा—"इतनी ठण्ड तो नहीं थी।"

"हां, तब भी वे रज़ाई के ऊपर कम्बल ओढ़े थे। यही बात तो मेरे मन में खटक रही थी।"—वंटू ने कहा—"चश्मुद्दीन सर ने मुझे कम नहीं सताया। जब सब लड़के मौज करते थे तो चश्मुद्दीन सर मेरा सिर गणित के सवालों से पीटा करते थे।"

आशा को मज़ा आने लगा। उसे लगा, वंटू जरूर कोई रहस्यमय कहानी सुनाने जा रहा है। उसने बड़ी दिलचस्पी के साथ कहा—"वंटू, जल्दी बताओ, क्या हुआ ?"

"कुछ नहीं, क्या हुआ।" वंटू ने उसे तंग करते हुए कहा—"क्यों बताएं। तुम्हें बता दें तो तुम सबसे बताती फिरो। क्यों न ?"

"नहीं, मैं नहीं बताऊंगी।"—आशा की इस बात पर भी वंटू ने विश्वास नहीं किया। उसने कहा—"पहले वचन दो।"

आशा ने वंटू की हथेली पर अपनी हथेली मारी और कहा—"वचन देती हूं।"

वंटू उत्साह में वैसे भी था। आशा वचन न देती, तो भी वह बिना बताये न रहता। उसने कहा—"मैं आधी रात को उठकर दबे पैर चश्मुद्दीन सर के पास गया। वे ज़ोर-ज़ोर से खर्राटे भर रहे थे। मैं आश्वस्त हुआ, वे सो रहे हैं। मैंने चुपचाप उनके ऊपर पड़ा हुआ कम्बल उठाया। एक मिनट वहीं खड़ा रहा। शायद वे उठ जाएं या करवट लें। वे बिलकुल नहीं हिले। बस, फिर क्या था, मैं कम्बल को लेकर लौट आया।

लेकिन'''।"

वंटू रुक गया। आशा उसके मुह की ओर देख रही थी। बोली—"वंटू, तुम्हारी यही आदत खराब है। कभी भी बात बीच में नहीं छोड़नी चाहिए।"

"हां, दोस्त"—मनोज ने कहा—"जल्दी बताओ, फिर जल्दी चलना है। और लोग डल झील पर हमारी प्रतीक्षा कर रहे होंगे। वहा से चश्मेशाही जाना है न।"

"दोस्त, एक गड़बड़ी हो गई"—वंटू ने बात बढ़ाई। "जब मैं लौट रहा था तो बालटी मे मेरा पैर लग गया। वह भरी हुई थी। सारा पानी गिर गया। मेरा तो खून सूख गया था। मैंने वह कम्बल वही छोड दिया। अब वह एक बड़ा सिरदर्द हो गया था। मैं दुबककर अपने बिस्तर मे आ पड़ा।"

आशा और मनोज एकसाथ जोर से हसे। आशा ने वंटू की पीठ पर जोर से हाथ मारा—"मान गए तुम्हें, वटू, बदमाशी तुमने की और पकडा गया बेचारा गिरीश।"

"उसे बेचारा कहती हो!"—वंटू ने आंखें दिखाकर कहा—"अनाड़ी कहीं का। उसे पता नही किससे पाला पड़ा है।"

मनोज को बुरा लगा। गिरीश जो करता रहा है, वह उसकी मरजी नही है। वह आदेश मात्र है। वह देखने में कितना भी भयानक लगे, लड़का बुरा नहीं है। बेचारे के मां-बाप कोई नही हैं। लेकिन पढता खूब है। ऊंचा होने के कारण उसे कक्षा में सबसे पीछे बैठाला जाता है। लेकिन इससे क्या।'''उसे अच्छा नही लगा। सारे लड़के श्रीनगर में सैर करें और वह बेचारा दीवारों से अकेला सिर पीटता रहे।

मनोज के लिए वंटू का यह कृत्य सुखदायी नहीं था। उसने कहा—"वंटू, यह सरासर अन्याय है। मैं अपर्णा मिस से जाकर यह बता दूगा।"

वटू को गुस्सा आ गया। उसने मनोज का हाथ पकड लिया—"क्या? क्या कहा, बता दोगे?"

"तो क्या तुम मुझे मारोगे?" मनोज ने कहा।

"हां, जरूर मारूंगा। मुझे इस विद्यालय में तो रहना नहीं। अब औ

नहीं रहूंगा, जहां तुम्हारी तरह धोखेवाज साथी हैं।"

वंटू ने आशा का हाथ पकड़ा और कहा—"चलो, हम अलग चलेंगे।"

"नहीं वंटू, मनोज को भी साथ ले लें। तुमने सचमुच अच्छा नहीं किया।" आशा ने यह कहा तो वंटू आग-ववूला हो गया। ये दोनों उसकी शिकायत करेंगे। पहले यही बड़ी आत्मीयता दिखा रहे थे।

आशा ने आश्वासन दिया कि वह शिकायत नहीं करेगी। उसने 'वचन' दिया। मनोज ने भी 'वचन' दिया कि वह शिकायत नहीं करेगा—कम से कम उस समय तक, जब तक वे अपने विद्यालय को नहीं लौट जाते।

तीनों वहां से वापस आए और शिकारों में बैठ गए। शिकारों का झुण्ड पानी की सतह को चीरता आगे चलता गया। लड़कों ने एकसाथ गाना शुरू कर दिया।

ग्यारह

दुःखद अन्त

पहलगाम पहुंचकर भी वंटू अपने मन को वापस नहीं ला सका।

सिंधु नदी के उछलते जल को देखकर मनोज ने कहा—"वंटू, देखो, यह पानी नहीं दूध बहा जा रहा है। हमारे यहां ऐसा सौन्दर्य कहां है।" वंटू तब भी कुछ नहीं बोला। उसने वंटू का हाथ पकड़ा और उसे खींचकर नीचे ले गया। सिंधु का पानी वर्फ की तरह ठण्डा था।

इतना ठण्डा पानी देखकर वंटू को भी अचरज हुआ। उसने मुसकराने का प्रयत्न किया। वहीं खड़े-खड़े वह पानी में तैरती मछलियों को देखने लगा।

उसी समय एक कश्मीरी हाथ में लम्बा वांस और एक वंसी लिए वहां आया। उसने पूछा—"साव, मछली मारेगा ?"

यह वात उसने एक दूसरे आदमी से पूछी थी। वंटू ने उस आदमी की ओर देखे विना कहा—"हां, मारेगा।"

मनोज भी तैयार हो गया। वह चाहता था, किसी तरह वंटू का मन

रम जाए। यह यात्रा भारी न पड़े। दो रुपये में वह आदमी एक घण्टे के लिए मछली मारने का वह उपकरण देने को तैयार हो गया। मनोज और बंटू ने चंदा कर लिया। मोहिनी और आशा चंदा देने को तैयार नहीं थीं। उन्होंने कहा कि वे इस तरह मछलियां नहीं मारना चाहतीं। किसी जीव की हत्या करना पाप है।

"पाप है!"—बंटू ने दोनों को जीभ दिखाई।

उसने मछली मारने का वह काम उस आदमी से ले लिया। उसने समझाया कि मछलियां थोड़ा ऊपर चलकर मिलेंगी। यहां बहाव तेज है। इतने तेज बहाव में मछलियां नहीं रुकतीं।

वे सिन्धु नदी के किनारे-किनारे ऊपर चले गए। एक जगह पानी ठहरा हुआ था और उसमें ढेर-सी मछलियां कुलांचें भर रही थीं। आशा और मोहिनी उन सुन्दर मछलियों को ध्यान से देखने लगीं। आशा ने कहा—"अरे, ये तो नाच रही हैं।"

"हां, सचमुच—" मोहिनी भी खुश हुई।

बंटू ने उनकी उपेक्षा की। वह बंसी पानी में डालकर बैठ गया। मनोज भी इसका मजा ले रहा था। बीच-बीच में बंटू तार खींचता, फिर छोड़ देता।

आध घंटे तक दोनों बैठे रहे। कोई मछली उसमें नहीं फंसी। एक-दो मछलियां फंसी भी तो फिर छूटकर भाग गईं। बंटू को गुस्सा आया तो वह पानी पर ही बांस पीटने लगा।

मनोज ने सामने से हरकिशन को आते हुए देखा। उसने बंटू से बताया तो बंटू वहीं से चिल्लाया—"हरकिशन, ओ हरकिशन!"

हरकिशन वहां आ गया। उसे मछली मारना आता था। पहले भी वह अपने संस्मरण बंटू को सुना चुका था। एक बार उसने एक मछली की कहानी सारे बच्चों को सुनाई थी। वह एक बड़ी मछली थी। रोहू मछली। एक मछुआरन उसे मारकर ले आई थी। मछेरे के कहने पर भी उसने वह मछली बाजार में नहीं बेची थी। उसने वह मछली काटी तो उसके भीतर उसे सोने की दो अंगूठियां मिली थीं। वह खुशी से नाच उठा था। मछुआरन भी साथी बनकर नाचने लगी थी। मछेरे ने उसकी की ईमानदारी को स्वीकार कर लिया था।

उन अंगूठियों ने दोनों की हालत बदल दी थी।

बंटू को यह कहानी बार-बार याद आने लगी। उसने सोचा, कहीं इस बार भी दो अंगूठियां निकल जाएं तो। तो उसकी नज़रें खुले आकाश में तैरने लगीं। एक अंगूठी वह अपनी मां को भेजेगा और दूसरी···। वह सोचने लगा। उसे समझ में नहीं आया कि दूसरी अंगूठी वह किसे भेजे ?

तभी हरकिशन आ गया। बंटू ने वह बांस उसे थमाते हुए कहा—"दोस्त, एक बड़ी मछली फंसा दो, बस।"

हरकिशन को सचमुच मछली मारने का शौक था। वह बंसी डालकर बैठ गया। उसके आगे-पीछे ये चारों थे। आशा और मोहिनी भी आंख लगाये पानी के भीतर देख रही थीं। पानी एकदम साफ़ था और आईने की तरह उसमें सब कुछ दिखाई दे रहा था।

हरकिशन ने एक-दो बार झटका दिया और तीसरी बार बांस ऊपर खींचा तो सब एकसाथ चिल्ला पड़े। उसमें एक मछली फंस गई थी। मछली के नथुने में बंसी जा फंसी थी। हरकिशन ने बांस ऊपर खींचा। पानी के बाहर आते ही मछली तड़पने लगी।

बंटू को खुशी हुई। बोला—"अरे, मछली तो नाच रही है। आज मज़ा आएगा।" उसने अपना पुराना सपना एक बार फिर दोहराया। मछली अब ज़मीन पर थी और लोट रही थी। मोहिनी ने कहा—"अरे, रे। कितनी प्यारी मछली है। कैसे लोट रही है।"

बंटू ने उसकी चोटी ज़ोर से खींच दी। वह चीख उठी। बंटू ने उसे जीभ दिखाई और कहा—"चुप रह।"

आशा को भी यह अच्छा नहीं लगा। उसने कहा—"बंटू, बदतमीज़ी करोगे तो हम चले जाएंगे।"

बंटू ने कोई जवाब नहीं दिया। वह मछली को ध्यान से देखता रहा। वह लोट-पोट हो रही थी। हरकिशन को कहीं जाना था। उसने कहा—"बंटू, अब मैं जाता हूं। मछली का क्या करोगे, इसे पानी में डाल देना।"

हरकिशन चला गया। बंटू ने अपने मन में सोचा, वह इसे ज़रूर काटेगा। परन्तु···दूसरा विचार उसके सामने आया। वह काटेगा कैसे ? उसे काटना तो आता ही नहीं।

मनोज ने कहा—"बंटू, चलो, मछली को अब पानी में वापस फेंक दें।"

"नहीं—" बंटू ने कहा—"हम इसे अपने कैम्प में ले चलेंगे। सबको दिखाएंगे। तब मजा आएगा।"

मोहिनी ने प्रतिवाद किया—"तुम्हें मजा आएगा, जान उसकी जा रही है।"

बंटू ने फिर उसे डांट दिया। उसने मछली को अपनी दोनों हथेलियों में उठा लिया। वह उसे लिपलिपी-सी लगी। मछली बड़ी थी और आसानी से बंटू की हथेलियों में नहीं आ रही थी। उसने मनोज से कहा—"मनोज, जरा पकड़ो तो।"

मनोज से पहले मोहिनी आगे आई। उसने कहा—"ला, मैं पकड़ती हूं।"

बंटू ने एक बार मोहिनी के चेहरे को देखा। मोहिनी अपने दांतों से होंठों को दबाये मछली की ओर ध्यान से देख रही थी। उसने बंटू को सोचने का समय नहीं दिया। वह मछली अपनी हथेली में लेते हुए उसने कहा—"बंटू, यह तो खासी भारी है।"

"हां···" बंटू पूरी तरह कह भी नहीं पाया था कि मोहिनी ने हाथ उठाकर जैसे हवा में उड़ा दिया। मछली फिर पानी के भीतर पहुंच गई।

बंटू को आग लग गई। उसके मनसूबे उड़ गए थे। उसके हाथ में वह बांस था। बांस के ऊपर ब्लेड की तरह एक पैनी चीज लगी थी। बंटू उसे बांस से खींचकर मोहिनी की ओर दौड़ा। मोहिनी ने दौड़ लगाई।

बंटू उसका पीछा करता गया। पुल के पास आकर मोहिनी बैठ गई। वह बुरी तरह हांफ रही थी। उसने कहा—"बंटू, माफ कर दो···।"

बंटू ने उसकी दोनों चोटियां पकड़ीं और वह तेज धार वाला ब्लेड चला दिया। दूसरे ही क्षण चोटियां उसके हाथ में थीं। चोटियों को उसने मोहिनी के सामने दो बार घुमाया और फिर जोर से बहती सिंधु की धार में जा फेंका। बोला—"जाओ, चोटियो, तुम भी उस मछली के पास चली जाओ।"

मोहिनी की जैसी घिग्घी बंध गई। वह लगभग बेहोश हो गई। बंटू ने इसकी चिन्ता नहीं की।

तब तक मनोज और आशा भी दौड़ते आ गए थे। आकर देखा, तो दोनों के खून सूख गए। उन्होंने इसकी कल्पना भी नहीं की थी। वे सोच रहे थे कि बंटू मजाक कर रहा है। मोहिनी को थोड़ा परेशान करेगा। फिर अपने-आप शान्त हो जाएगा।

आशा ने मोहिनी को उठाया। उसका चेहरा एकदम सूख गया था। वह पीला पड़ गया था। उसने अपनी फटी आंखों से आशा की ओर देखा। आशा ने सामने नजरें दौड़ाईं। बंटू तब तक नौ दो ग्यारह हो चुका था।

मनोज चुपचाप खड़ा इन दोनों को देख रहा था। वह आगे बढ़कर मोहिनी के पास आया। बोला—"मोहिनी, डरो मत, बाल घर की खेती हैं। फिर बढ़ जाएंगे।"

मोहिनी को इससे सन्तोष नहीं हुआ। वह क्रोध में थी। उसने मनोज को ऐसी झड़प लगाई कि वह चुप रह गया। मोहिनी का परेशान होना सहज था। वह अपने बालों को बड़ी लगन से सम्हालती थी। उनमें दही और शिकाकाई लगाया करती थी। उसके बाल विद्यालय में सबसे लम्बे और चमकदार थे। उसकी चोटियां बांधने का ढंग भी निराला था। वह असल में अपने बालों के लिए ही विद्यालय-भर में विख्यात थी। इतने कीमती बाल चले गए। अब क्या होगा!

उसने एक लम्बी सांस भरी और रोने लगी।

बंटू बहुत खुश था। उसने मोहिनी को ऐसा मजा चखाया है कि वह कभी नहीं भूलेगी। वह काफी दूर निकल आया था। यह पहाड़ की एक चोटी थी। इस ऊंचाई से उसने उछालें भरती सिंधु को देखा। उसका मन भी बांसों उछलने लगा। वह सोचने लगा—यह नदी कितने निर्विकार भाव से वेग के साथ बही जा रही है। उसे किसीकी फिकर नहीं है।

उसने वहीं से पानी के भीतर आंखें गड़ाईं। वह शायद चोटियों को देखना चाहता था। वे वहां कहां थीं।

उसने अपना चेहरा घुमाया और सामने के क्षितिज की ओर देखा। बर्फ से ढंकी चोटियां चांदी की तरह चमक रही थीं। एक लहर बनाती पर्वत श्रेणियां सर्प की तरह जैसे चमक रही थीं। एक उनके नीचे सीधे खड़े

पाइन और फर के झाड़ थे। ये झाड अपने-आपमें अलग हैं। कितना भी पानी गिरे उनके नीचे को ज़मीन कभी गीली नहीं होती। ठण्ड में जब बर्फ गिरती है, तब भी वह इन झाडों से गिलहरियों की तरह खिसककर नीचे आ जाती है।

पहलगाम बंटू को बड़ा सुहावना लगा। बहुत देर तक वह अपने आस-पास फैले सौन्दर्य को आंखों में भरता रहा। फिर वह उठा। नीचे उतरा तो तारकोल की सीधी और समतल सड़क थी। थोड़ा ही आगे चलकर वह बाज़ार में पहुंच गया। दोनों तरफ दुकानें थीं और रंग-बिरंगे कपड़े पहने बूढ़े, बच्चे और जवान सभी या तो घूम रहे थे या सामान खरीद रहे थे।

बंटू ने अपनी जेब देखी। उसमें अभी कुछ पैसे थे। उसने एक कश्मीरी टोपी खरीदी और फिर गरम जलेबियां खायीं।

टोपी लगाकर एक आईने के सामने उसने अपने-आपको देखा। वह खूब ज़ोर से हंसा और वहां से आगे चल पड़ा।

मोड़ पर आशा मिल गई। वह कैम्प से वापस आई थी। बंटू ने आवाज़ दी—"आशा!"

"क्या है, बंटू?"—आशा खुश नहीं थी।

"ठहरो"—बंटू उसके पास पहुंच गया। उसने आशा के सामने हाथ जोड़े। कहा—"आशा, तुम तो नाराज़ नहीं हो?"

"हूं—" आशा को अच्छा नहीं लगा। बंटू ने कहा—"मोहिनी ने शिकायत तो नहीं की?"

"अभी तो नहीं—" आशा ने कहा—"मिस भी कहीं घूमने गई हैं।"

"तो चलो, हम भी घूम आएं।"—बंटू ने राहत-भरी सांस ली।

"नहीं, मैं तुम्हारे साथ नहीं घूम सकती। तुम अच्छे लड़के नहीं हो।"—आशा सचमुच नाराज़ थी।

"मैंने तुम्हारी चोटियां तो नहीं काटीं। फिर…" बंटू की इस बात का आशा पर कोई असर नहीं हुआ। वह आगे जाने लगी। तभी उसने दो-तीन खाली घोड़े सड़क पर देखे। घोड़ों को देखकर उसे अपने विद्यालय की याद हो आई। रोज़ वह घुड़सवारी का अभ्यास करती है और अब तो वह काफी अभ्यस्त हो गई है।

लेकिन, उसे याद आया। पहला दिन भी कितना अजीब होता है। वंटू के सामने वह घोड़े से गिरी थी और तब वंटू कितना खुश हुआ था। यह बात ध्यान में आते ही उसने चुटकी बजायी और पीछे लौटकर देखा। वंटू वहीं खड़ा था। उसने कहा—"वंटू, चलो हम आज घुड़सवारी करें।"

वंटू खुश हुआ। वह खड़ा-खड़ा सोच रहा था कि अकेला कहां जाए और क्या करे। वंटू ने आवाज़ देकर घोड़े वालों को रोका। उनसे दो घोड़े मांगे तो उन्होंने कहा—"यहां नहीं, दफ्तर में मिलेंगे। हमारे साथ चलिए।"

वे दोनों घोड़े वालों के साथ आगे गए। उनका दफ्तर दूर नहीं था। किराया अदा करने के बाद उन्हें घोड़े मिल गए।

आशा का घोड़ा सफेद रंग का था और ऊंचाई में छोटा था। आशा उसपर आसानी से चढ़ गई। वंटू का बादामी घोड़ा ऊंचा था। इसलिए घोड़े वाले ने मदद दी, तब कहीं वंटू चढ़ सका।

दोनों चन्दनवाड़ी को जानेवाली खुली सड़क पर घूमते रहे। आशा के चेहरे पर शरारत के भाव रह-रहकर उतर रहे थे। वह अवसर की ताक में थी।

वंटू भी कम खुश नहीं था। वह जानता था कि कैम्प में तो पहुंचते ही उसके सिर पर कढ़ाई गिरेगी। उसे झेलना उसके लिए कठिन होगा। इसलिए वर्तमान के जितने आनन्ददायी क्षण मिलें, उनका पूरा उपभोग क्यों न कर लिया जाए?

सड़क के कोने पर जाकर आशा ने कहा—"वंटू, तुम्हें घोड़ा दौड़ाना आता है?"

वंटू ने अपने-आपमें गर्व का अनुभव किया। बोला—"क्यों नहीं!"

—"तो चलो, हम साथ-साथ दौड़ाएं। देखें किसका घोड़ा तेज़ दौड़ता है।"

आशा की बात वंटू ने तुरन्त स्वीकार कर ली। वैसे वंटू हमेशा ऐसे ही अवसरों की ताक में रहता है। उसे अपने-आपमें विश्वास था। वह आशा को हराये बिना नहीं रहेगा।

"कोई शर्त हो जाए।"—वंटू ने प्रस्ताव रखा।

"मुझे मंजूर है। जो कहो वही हो जाए—"आशा ने पहली बार बिना

हिचक के इसे स्वीकार कर लिया ।

"तुम्हीं कह दो।"—बंटू ने तपाक से कहा। आशा थोड़ी देर तक सोचती रही। फिर उसने कहा—"अच्छा, एक-एक बात की शर्त हो जाए।"

—"यानी ?"

—"यानी ये कि जो पराजित हो, वह विजेता की एक बात को बिना प्रतिवाद के मान ले।"

बंटू ज़ोर से हंसा, "बस, इतनी-सी बात।

"हां"—आशा ने गम्भीर होकर कहा।

दोनों दौड़ के लिए तैयार हो गए। घोड़ेवालों से कह दिया गया कि वे यहीं ठहरें। एक फर्लांग से दूर वे नहीं जाएंगे। दौड़ शुरू हो गई। एक फर्लांग तक जाकर उन्हें उसी जगह लौटना था। जाते समय बंटू का ही घोड़ा आगे रहा। वह लौटने लगा तो बंटू ने थोड़ी राहत लेने के लिए घोड़े की पीठ पर हाथ टेका। उसी समय आशा ने पीछे से दो-तीन कोड़े घोड़े की पीठ पर जड़ दिए। घोड़ा जोर से एड़ लेकर भागा तो बंटू अपने को सम्हाल नहीं पाया।

दूसरे ही क्षण वह ज़मीन पर था और घोड़ा थोड़ा आगे जाकर खड़ा हो गया था। आशा ने वहीं अपना घोड़ा रोका और तालियां बजाकर हंसने लगी। वह खूब हंसी। पास आकर बोली—"अरे, तुम तो बड़े सवार बनते थे। अब क्या हुआ ?"

बंटू अपनी कमर पर हाथ रखे दर्द से कराह उठा। आशा ने इस अवसर का खूब लाभ उठाया। बोली—"उस दिन जब मैं गिरी थी, तब तुम कितने खुश हुए थे, याद है।"

वह ताली पीट-पीटकर हंसने लगी। बंटू के लिए यह घोर अपमान का अवसर था। हिम्मत कर वह उठा, परन्तु तुरन्त बैठ गया। उसका दर्द बढ़ गया था।

आशा को अब लगा कि ज़रूर कोई खास बात हो गई है। वह बंटू के पास गई। उसके हाथ की दाहिनी कोहनी छिल गई थी और उससे रक्त बह रहा था। उसकी कमर में एक पत्थर ज़ोर से लगा था। उसकी पीड़ा असह्य हो रही थी। बंटू इस समय कुछ भी नहीं कह पा रहा था।

रो सकता था, न हंस ही पाता। उसके मन में केवल दर्द था। और किसी तरह के विचारों के लिए वहां कोई जगह नहीं थी।

आशा ने तब अनुभव किया कि वंटू को सचमुच चोट लग गई है। उसके पास उस समय कुछ नहीं था। रूमाल भी नहीं था। वह सफेद मोजे पहने थी। उसने एक पैर का मोज़ा उतारा और उसके ऊपर के साफ भाग से उसने वंटू का खून पोंछा।

"मुझसे बड़ी भूल हो गई, वंटू। मुझे क्षमा कर दो।" आशा को पश्चात्ताप हुआ। खेल-ही-खेल में उसने क्या कर दिया।

वंटू कुछ नहीं बोला। वह किसी तरह अपने दर्द को सम्हालने की कोशिश करता रहा। इतने में दोनों घोड़े वाले भी आ गए। उन्होंने वंटू को उठाया। उसका घाव पोंछा। उसे उठाकर वे कैम्प तक ले गए। आशा रास्ते-भर पछताती रही। उसके मन के भीतर से एक बड़ा ज्वालामुखी उठा और बाहर आकर फूट पड़ा।

उसने अपने पूरे शरीर पर एक भारी बोझ का अनुभव किया। यह बोझ तब भी बना रहा, जब बस घरघराकर पहलगाम से रवाना हुई। सब विद्यार्थियों ने एक साथ 'जय' के नारे लगाए। वंटू को लगा, ये नारे उसके विरुद्ध हैं। इतनी सारी आवाज़ों का उसे अकेले सामना करना पड़ेगा।

"इतनी दिलचस्प यात्रा का यह दुःखद अन्त!" वह अपने-आप बुदबुदाया। खिड़की से अपना सिर टिकाकर उसने आंखें बन्द कर लीं। वह केवल बस की भयावनी आवाज़ें सुनता रहा।

बारह

जन्मदिन की खुशियां

एक सुहावनी सुबह। सूरज धूप-छांव की तरह बिखरा हुआ था। आकाश में बादल थे···कुछ काले और भारी, कुछ कपसीले। हवा बह रही थी और उसमें हल्की-सी नमी थी।

वंटू नाश्ता कर वापस लौटा था। उसने अपना घाव देखा। अब वह

काफी ठीक था। उसने राहत-भरी सांस ली।

मनोज ने आकर कहा—"बंटू, इतनी लम्बी थकान-भरी यात्रा के बाद घर लौटने पर कितना हल्कापन महसूस होता है। लगता है, जैसे हम पत्थरों का बोझ ढोते रहे हैं। वह अब उतरा है।"

"हां, मनोज, तुम ठीक कहते हो। मैं तो अपने को हवा की तरह हल्का महसूस कर रहा हूं।"—बंटू उठकर खड़ा हो गया। उसने मनोज के गले में अपने दोनों हाथ डाले। बोला—"दोस्त, वाकई मजा आ गया। यह यात्रा हमें हमेशा याद रहेगी।"

मनोज को पहली बार बंटू से इतनी आत्मीयता मिली थी। वह खुश हुआ। दोनों ने किताबें निकालकर आगे का काम देखा। यह तय किया कि वे मिलकर काम करेंगे। इससे एक-दूसरे की गलतियां भी पकड़ में आएंगी।

दोनों बातें कर ही रहे थे कि आकाश गहरा हो गया। बादल छातों की तरह दिखने लगे। मनोज ने कहा—"आज पानी गिरेगा। अच्छा हुआ, हम लोग कल लौट आए।"

"हां"—बंटू कमरे के बाहर आ गया। बादल अब और काले होकर सिमट रहे थे। वे एक-दूसरे में मिल गए। बिजली चमकी और पानी गिरने लगा। पहले बड़ी-बड़ी बुंदियां आईं और फिर धागे की तरह एक सीधी कतार में पानी उतरने लगा। बंटू और मनोज ने इसका आनन्द लिया। दोनों फटी आंखों से बरसते मेह को देखते रहे। बाहर अब कोई नहीं था। सब अपने-अपने कमरों में बन्द थे। लान पर पानी तैरने लगा था।

एक दुबका हुआ कुत्ता 'कईं-कईं' करके भाग गया। बंटू का मन हुआ कि वह उसे पकड़े। परन्तु पानी जोर का था। काफी देर तक पानी गिरता रहा। थोड़ी देर के बाद दोनों अपनी-अपनी टेबल पर चले गए और पढ़ने लगे।

दोपहर होते-होते पानी थम गया। तभी गिरीश बंटू के कमरे में आया। उसने कहा—"पोस्टमैन आया है। तुम्हारी कोई डाक है। वह वार्डन के कमरे में है। वार्डन ने तुम्हें बुलाया है।"

"जरूर, पिताजी ने कुछ भेजा होगा।" बंटू खरगोश की तरह उछलकर

वार्डन के कमरे में जा पहुंचा। पोस्टमैन ने एक बड़ा-सा पारसल वंटू को दिया। उसने एक छोटे-से कागज पर हस्ताक्षर करा लिए। पारसल काफी बड़ा था। वार्डन ने कहा—"तुमसे नहीं सम्हलेगा। ठहरो···।"

वार्डन ने आवाज़ लगाई। विद्यालय का चौकीदार वहां आ गया। उसने पार्सल सम्हाल लिया। वंटू जब आने लगा तो वार्डन ने कहा—"इस पार्सल के लिए हमारी बधाई।" उन्होंने मुस्कराकर वंटू को देखा। बंटू का चेहरा खुशी से सूरजमुखी हो रहा था।

कमरे में आकर उसने पारसल खोला। खोलते ही उसे एक चिट मिली। उसे पढ़ते ही वह खुशी से नाच उठा। मनोज को हाथ पकड़कर उसने बाहर खींचा। उसकी कमर में हाथ डालकर चक्कर काटने लगा।

—"क्या बात है, वंटू ?"

वंटू ने जवाब नहीं दिया। वह उसी तरह उछलता रहा। उछलते-उछलते वह हांफने लगा। तब कहीं वह रुका। बोला—"मैं तो भूल ही गया था। आज मेरा जन्मदिन है।"

"अच्छा···।" मनोज ने बिना सोचे हुए कहा। उसे पता नहीं था कि जन्मदिन क्या होता है। कभी किसीने उसका जन्मदिन मनाया नहीं। वंटू उसे खींचकर टेबल के पास ले गया। पारसल खोलते हुए मनोज ने एक-एक सामान देखा।

वंटू बोला—"अरे, मनोज, ये देखो बुशशर्ट और टाई। कितनी खूबसूरत हैं।" उनपर एक परची लगी थी। मनोज ने वह परची पढ़ी। बोला—"अरे, यह तो तुम्हारी मम्मी की भेंट है।"

"हां, और यह भेंट, यह स्कार्फ···?" वंटू ने उनकी तह बिगाड़ दी।

मनोज ने फिर परची देखी। उसमें लिखा था—"नीता मिस की ओर से।"

"नीता मिस।" वंटू ने उन कपड़ों को चूम लिया—"नीता मिस, तुम कितनी अच्छी हो। कितनी ! आह···।"

नीचे एक मोटा कागज था। वंटू ने उसे उठाया। उसके नीचे एक 'वर्थ-डे-केक' था। उसीके पास एक लिफाफा रखा हुआ था। वंटू ने लिफाफा खोला। उसमें तीस रुपए थे। लिखा था—"डैडी की ओर से।"

"ओ, डैडी···!" बंटू खुशी से पागल हुआ जा रहा था। उसकी आंखें अपने-आप गीली हो रही थीं। डिब्बे में बिस्कुट के दो बड़े पैकेट, कुछ टाफियां और एक सीटी थी। सीटी मिलते ही बंटू उसे ज़ोर-ज़ोर से बजाने लगा।

मनोज हतप्रभ हो देखता रहा। उसने बंटू को कभी इतना खुश नहीं देखा था। उसने अनुभव किया कि उपहार पाना भी कितनी अच्छी बात है। उसने एक लम्बी सांस ली। आज तक किसीने उसे उपहार नहीं दिया। वह क्या समझे, इसमें क्या मजा है।

सीटी बजाते हुए, बंटू ने मनोज से पूछा—"तुम्हारा जन्मदिन कब आएगा?"

"मुझे पता नहीं।" मनोज ने कहा।

—"अरे, पता नहीं तो भी मेरी तरह तुम्हें पता लग जाएगा।"

"नहीं बंटू"—मनोज गम्भीर हो गया—"मेरा जन्मदिन कभी किसीने नहीं मनाया। मुझे पता ही नहीं है।"

बंटू को अचरज हुआ। किसीने उसका जन्मदिन नहीं मनाया। उसने पूछा—"विद्यालय में तो जन्म तारीख लिखी होगी?"

"हां"—मनोज ने निराश होकर कहा—"उसमें तो बीस नवम्बर लिखा है।"

"अरे!" बंटू ने कलेंडर की ओर देखा—"तब तो थोड़े ही दिन शेष हैं।"

मनोज ने अपना चेहरा झुका लिया। वह सोचने लगा, थोड़े दिन शेष हों या पूरा साल, अन्तर क्या पड़ता है। कभी घर से कोई पत्र नहीं आता। फिर उपहार कौन देगा।

नाश्ते के समय सारे विद्यार्थी वहां जमा हुए। वार्डन भी थी और प्रिंसिपल भी आए थे। वार्डन ने बड़े जतन से 'बर्थ-डे-केक' पर मोमबत्तियां रखी थीं। सब घेरकर खड़े हो गए। बंटू नये कपड़े पहने बादशाहों की तरह मेज़ के पास खड़ा था। उसने एक फूंक में सारी मोमबत्तियां बुझा दीं। सबने तालियां बजाईं और उन्हींकी गड़गड़ाहट के बीच बंटू ने केक काटी!

"जन्मदिन शुभ हो ! जन्मदिन शुभ हो !" सब एकसाथ बोले। अपर्णा सेन ने सबको केक के टुकड़े दिए। वह केक भी अपने ढंग का था। उसका आकार पेटन टैंक की तरह था। उसमें चीनी के कई गोल पहिये बने थे। बंटू ने वे पहिये अपने हाथ से बांटे। उसने आशा और मोहिनी को भी पहिये दिए। गिरीश के प्रति अपनी उपेक्षा वह अब भी दूर नहीं कर सका था। उसने उसे पहिया नहीं दिया। अपर्णा मिस ने उसे केक ही दी। बंटू ने हरकिशन को दो पहिये दिए। उन्हें देकर उसे बड़ी खुशी हुई।

बंटू को गर्व था। विद्यालय में ऐसा जन्मदिन किसीका नहीं मनाया गया। उसके चेहरे पर गर्व की अनगिनत रेखाएं खिच गईं।

तेरह

तीन अपराधों की दो सज़ाएं

कल बंटू ने जन्मदिन मनाया था। सुबह उठते ही उसने अपने पूरे शरीर में एक भारीपन महसूस किया। उसकी समझ में नहीं आया कि इस भारीपन का कारण क्या है। उसने एक-दो बार ज़ोर की अंगड़ाइयां लीं। उसे लगा, जैसे उसका घाव फिर हरा हो गया है। उसमें फिर दर्द उभर आया है। इसलिए बंटू ने बड़े अनमने ढंग से कवायद की। घुड़सवारी में भी उसने मज़ा नहीं लिया।

आशा ने उसे बहुत समझाया। पर बंटू पर कोई असर नहीं हुआ। गिरीश ने आकर बंटू को धन्यवाद दिया। कहा—"कल का केक बड़ा मीठा था। मैंने तो ऐसा केक पहली बार खाया···।"

बंटू ने कोई जवाब नहीं दिया। उसने जैसे गिरीश की बात सुनी ही नहीं।

दोपहर और भारी हो गई। उसे अब पता लगा कि उसके भीतर भारीपन कहां से आया है। घण्टी बजी तो वह लगभग रुआंसा-सा हो गया।

मनोज ने कहा—"चलो, बंटू।"

घंटू ने उसकी ओर देखा तक नहीं। ये सब उसके दुश्मन हैं। सब उसके पीछे लगे हैं। आज 'विद्यार्थी-परिषद्' की बैठक है। ये सभी उसमें घंटू का विरोध करनेवाले हैं। लेकिन···। उसके मन में प्रकाश की एक किरण फूटी। घने अंधेरे के बीच में एक आशा-किरण उसने देखी। कल हरकिशन को उसने दुगना केक दिया था। वही तो जूरी का प्रधान बनेगा। कुछ तो लिहाज करेगा वह। उसे खुशी हुई कि इस यात्रा में उसने हरकिशन से दोस्ती कर ली है।

बड़े हाल में जाकर सभी इकट्ठे हुए। दूसरी घंटी बजी तो सब अपनी-अपनी सीटों पर जा बैठे। प्रिंसिपल भी अब तक आ गए थे। वे और विद्यालय के अन्य अध्यापक पिछली सीटों पर बैठ गए।

सामने से तीन लड़के आए और जूरी की कुर्सियों पर जा बैठे। दूसरे दरवाजे से दो लड़कियां आईं। वे भी बैठ गईं। विद्यार्थियों ने ताली बजाकर इनका स्वागत किया।

हरकिशन ने फिर लोहे का हथौड़ा टेबल पर पीटा—"शान्ति, शान्ति!" एक गहरी खामोशी छा गई। जरा-सी भी सरसराहट कहीं नहीं थी।

हरकिशन ने विद्यार्थियों की ओर देखकर कहा—"अब हम आज की कार्यवाही शुरू करते हैं। इस बार यह बैठक काफी लम्बे अर्से के बाद हो रही है। इसलिए शायद कुछ अधिक समय लगे। हम प्रिंसिपल साहब से प्रार्थना करते हैं कि वे हमें थोड़ा समय और दें।"

प्रिंसिपल ने खड़े होकर और समय दे दिया। कहा—"जब तक पूरी कार्यवाही खत्म न हो जाए, घंटी नहीं बजेगी।"

हरकिशन ने प्रिंसिपल को जूरियों की ओर से धन्यवाद दिया। उसने वार्डन श्रीमती अपर्णा सेन की ओर अंगुली दिखाकर कहा—"जूरी चाहते हैं कि हमारी वार्डन कश्मीर-यात्रा के बारे में बताएं।"

विद्यालय के बहुत-से विद्यार्थी इस यात्रा पर नहीं गए थे। इसलिए सबने बड़ी दिलचस्पी के साथ पूरी कहानी सुनी। सब खुश हुए। सब कुछ सुनाने के बाद वार्डन ने घोषणा की—"बच्चो, हम कश्मीर से कुछ केसर लाए हैं। हम पाम्पुर में केसर के खेत देखने गए थे। वहां की सरकार ने हमें भेंट में थोड़ा केसर दिया है। आज शाम के भोजन में हम सब विद्या-

थियों और अध्यापकों को थोड़ा-थोड़ा केसर बांटेंगे।"

तालियों की गड़गड़ाहट के बीच वार्डन का भाषण समाप्त हुआ और वे बैठ गईं।

हरकिशन ने अपने सामने रखा सफेद कागज देखा। प्रिंसिपल की ओर अंगुली दिखाकर उसने कहा—"अब, जूरी प्रिंसिपल साहब से एक महत्त्वपूर्ण घोषणा करने की प्रार्थना करती है।"

प्रिंसिपल खड़े हो गए और सामने आए। एक हलकी-सी सरगरमी पूरे हाल में तैर गई। प्रिंसिपल साहब क्या घोषणा करेंगे। उन्होंने सारे विद्यार्थियों की ओर देखा और कहा—"बच्चो, इस साल दिसम्बर में अन्तर्राष्ट्रीय टूर्नामेण्ट होंगे। हमने तय किया है कि हमारा विद्यालय उसमें पूरी तरह भाग ले···।"

वह अपनी बात पूरी नहीं कर पाए थे कि ज़ोर से तालियां पीटी जाने लगीं। उन्होंने हाथ उठाकर रोका और कहा—"जो बच्चे भाग लेना चाहें, वे अभी से अपना नाम लिखा दें।"

बंटू बहुत खुश हुआ। उसने और जोर से ताली पीटी।

प्रिंसिपल अपनी जगह पर जाकर बैठ गए। लड़के एक-दूसरे की ओर देखने लगे। मुंह पलटाकर वे बातें कर रहे थे कि प्रधान न्यायाधीश ने दो बार टेबल पर हथौड़ा पीटा। सारे हाल में फिर नीरव शान्ति छा गई।

हरकिशन ने कहा—"अब शिकायतें पेश होंगी।"

शिकायतें पेश हुईं। तीसरी कक्षा के कप्तान ने एक लड़के की शिकायत की। वह बार-बार कहने पर भी सुबह देर से उठता है। जूरियों ने सलाह की और सजा सुना दी गई—"रात को उसकी चोटी बांध दी जाए।"

फिर नवमी का अधिकारी विद्यार्थी खड़ा हुआ। बोला—"बंटू के विरुद्ध बहुत-से आरोप हैं। क्या अदालत सुनेगी?"

हरकिशन ने जूरियों से फिर सलाह ली। कहा—"हां, सुनेगी।"

उसके विरुद्ध आरोप पढ़कर सुनाए जाने लगे:

कश्मीर जाने के पहले एक दिन बंटू अकेला बाज़ार गया था। उसने बाज़ार से बहुत-सा सामान खरीदा।

बंटू की नजरें सहसा अपर्णा मिस की ओर उठ गईं। उस दिन वे कितना मीठा बोल रही थीं। उनके सामने बंटू ने 'खेद प्रकट' भी कर दिया था। तब भी यह बात यहां रखी गई। उसे अपर्णा मिस से घृणा हो गई। उसने अपने नाक-भौंह सिकोड़ी और नजरें पलटा लीं।

दूसरा आरोप पढ़ा गया :

श्रीनगर में एक रात बंटू ने पानी गिराया। गणित के सर का कम्बल चुराया और सजा व्यर्थ में गिरीश को मिली।

सुनते ही बंटू सन्न रह गया। उसने एक बार मनोज की ओर देखा। दूसरी बार आशा की ओर। यही दो तो थे, जो इस बात को जानते थे। इनमें से किसीने शिकायत की है। उसने दोनों को हिकारत की नजरों से देखा। वह अब किसे मित्र माने। किसपर विश्वास करे। उसे इसकी कल्पना नहीं थी। उसकी समग्र आस्था हिल उठी।

तीसरा आरोप लगाया गया :

तीसरा आरोप बहुत गम्भीर है। बंटू ने पहलगाम में मोहिनी गुप्ता की दोनों चोटियां काटकर पानी में फेंक दीं।

'चोटियां काट लीं!'—सब मुसकराने लगे। सबने एकसाथ मोहिनी गुप्ता की ओर देखा। वह शर्म के मारे गड़ी जा रही थी। नीचे सिर झुकाये वह सिसकने लगी।

"हद हो गयी।" एक ने धीरे से अपने साथी से कहा—"यहां तो रहना मुश्किल हो जाएगा।"

उसी समय बंटू का नाम पुकारा गया—"आपको कुछ कहना है?"

"हां···" बंटू उठकर खड़ा हो गया। उसके चेहरे पर एक भी शिकन नहीं थी। वह बिलकुल नहीं झिझका। उसने कहा—"मुझे केवल एक बात कहनी है। मैं इस विद्यालय में नहीं पढ़ना चाहता।"

सबके कान खड़े हो गए।—बंटू यहां नहीं पढ़ना चाहता। बंटू यहां नहीं पढ़ेगा। वह चला जाएगा···यह अच्छा नहीं होगा। उसीके कारण तो विद्यालय में गरमी रहती है···चला जाए तो अच्छा है···हमारी चोटियां तो बची रहेंगी। लड़का नहीं काल है। ···अपने को नवाब समझता है···अरे, बड़े बाप का इकलौता बेटा है। पहला पूत, हो किसीका सपूत?···"

प्रधान न्यायाधीश ने फिर हथौड़ा पीटा। उन्होंने पूछा—"वंटू, क्या आपने यह निश्चय कर लिया है ?"

—"हां।"

—"आपकी शिकायत क्या है ?"

"कई शिकायतें हैं, लेकिन मैं नहीं कहूंगा।"—वंटू ने गर्व के साथ उत्तर दिया, जैसे बाकी सब छोटे लोग हैं। शिकायत छोटे लोगों से कभी नहीं की जाती।

जूरियों ने आपस में सलाह-मशविरा किया। मामला पेचीदा था। वंटू पर एकसाथ तीन आरोप लगाए गए थे। तीनों गम्भीर थे।

हरकिशन ने चारों ओर देखा। फिर उसकी नज़रें वंटू पर आकर रुक गईं। वंटू की आंखें हरकिशन से जा टकरायीं। वंटू की आंखों में नफरत थी। हरकिशन को केक के दो पीस दिये, तब भी वह उसका साथ नहीं दे रहा।

हरकिशन ने जूरियों का फैसला सुना दिया—"वंटू पर लगाए गए अब सारे आरोपों पर सावधानी के साथ हमने विचार किया है। प्रिंसिपल साहब की भी सलाह ली है। यह स्पष्ट है कि परोक्ष रूप से वंटू ने तीनों आरोप स्वीकार कर लिये हैं। इनके बदले में उन्होंने एक ही बात कही है कि वे इस विद्यालय में पढ़ना नहीं चाहते।

किए देते हैं।"

"मैं चपरासी नहीं हूं। मैं चौकीदारी नहीं कर सकता।"—वंटू जोर से चिल्लाया।

हरकिशन ने कहा—"तो आपको एक सप्ताह का खर्च नहीं दिया जाएगा।...अब आप दूसरी सजा भी सुन लीजिए। हमें खेद है, वंटू जी, हर अपराधी इसी तरह चिल्लाता है।"

हरकिशन ने सामने देखकर आगे कहा—"मोहिनी की चोटियां काटकर वंटू ने समस्त नारी जाति का अपमान किया है। हमारे देश में नारी पूज्या है। वेदों से लेकर आज तक नारियों को देवियों का स्थान दिया गया है। वंटू ने हमारे भारतीय आदर्शों को तोड़ा है। इसलिए उन्हें सजा दी जाती है कि वे विद्यालय की सारी लड़कियों से क्षमा मांगें।"

सारा हाल हंसी से गूंज उठा। हरकिशन ने हथौड़ा पीटकर सभीको फिर गम्भीर रहने का आदेश दिया। वंटू उठकर खड़ा हो गया। उसने कहा—"मैं एक भी लड़की से क्षमा नहीं माग सकता। मैंने आज तक किसी-से क्षमा नहीं मागी। फिर लड़कियों से मैं क्षमा मांगू ? हुंतुत।" वंटू अपनी जगह पर बैठ गया।

हरकिशन ने एक बार फिर पूछा—"वंटू, क्या आप वास्तव में क्षमा मागने के लिए तैयार नहीं है ?"

"नहीं—" जोर से वंटू ने कहा।

हरकिशन ने आदेश दिया—"वंटू को एक सप्ताह के लिए घुड़सवारी, संगीत और सामूहिक भोजन से रोका जाता है। उनका नाश्ता और भोजन उनके ही कमरे में भेज दिया जाएगा।"

रात को सोने से पहले उसने पिताजी को एक पत्र लिखा :

"पिता जी, मैं इस विद्यालय में हरगिज नहीं पढ़ सकता। आप जबरन पढ़वाएंगे तो मैं कहीं भाग जाऊंगा। नीता मिस को आप भेज दीजिए। आप व्यस्त होंगे। मैं अब उन्हींके पास पढूंगा। उन्हींके साथ घर वापस आ जाऊंगा।"

वंटू ने वह पत्र तह किया। उसे एक लिफाफे में बन्द कर दिया। लिफाफे के ऊपर उसने पता लिखा। वह अपने कमरे से बाहर आया। विद्यालय का नियम था कि घर भेजे जाने वाले पत्र लेटर बक्स में सीधे न डाले जाएं। वे वार्डन या प्रिंसिपल के पास भेज दिये जाएं।

वंटू ने अपनी सख्त निगाहों से सामने देखा। बाहर एक चौकीदार था। उसने उसे आवाज़ दी। उसके हाथ में पत्र देकर उसने कहा—"प्रिंसिपल साहब को दे आओ।"

चौकीदार पत्र लेकर चला गया। वंटू को लगा, उसके सिर से एक बड़ा दर्द उतर गया है। उसने राहत-भरी सांस ली।

चौदह

विद्यालय छोड़ने का निश्चय

पत्र पाने के थोड़ी देर बाद प्रिंसिपल ने वंटू को अपने घर में बुलाया। वंटू वहां भी नहीं जाना चाहता था। परन्तु चपरासी के बहुत कहने पर वह चला गया।

वह रात पानी से गीली और नमी भरी थी। झींगुरों का शोर एक तन्द्रा की तरह हो रहा था। मेंढक भी बोलने लगे थे। लान की घास आधी पानी में डूबी थी। हवा ज़ोर से बह रही थी। उसके साथ पानी के कण उड़ते हुए आकर बिखर रहे थे। कुल मिलाकर मौसम अच्छा था, परन्तु जब मन के भीतर तूफान उठ रहा हो, तब कुछ भी अच्छा नहीं लगता।

प्रिंसिपल के सामने जाकर वंटू ने 'नमस्ते' की। इतने दिन विद्यालय में रहने के कारण वंटू की आदत 'नमस्ते' करने की अनजाने पड़ गई थी।

प्रिंसिपल ने उसे अपने पास बुलाया। उसके सिर पर हाथ फेरा। उसे बैठने के लिए एक कुर्सी दी। उन्होंने फिर से उसे समझाया—"बेटे, तुम्हारे पिताजी को मैं बहुत दिनों से जानता हूं। जब तुम पैदा हुए थे, तब भी मैं तुम्हारे घर गया था। बड़ा उत्सव हुआ था उस दिन। अंगरेज़ी बैंड बजे थे और एक आलीशान दावत दी गई थी।"

प्रिंसिपल एक लम्बी भूमिका बना रहे थे। बंटू ध्यान से सुन रहा था। उसे खुशी थी, उसके पिता शुरू से ही उसे चाहते रहे हैं। उसने गर्व का अनुभव किया। प्रिंसिपल ने कहा—"तुम मेरे बेटे की तरह हो।...यह विद्यालय अपने ढंग का निराला है। देश में ऐसी संस्थाएं कम हैं। हम चाहते हैं कि तुम्हें यहां ठीक शिक्षा मिले, ताकि तुम अपने पिता की तरह आगे बढ़ो और नाम कमाओ। यहां कोई तुम्हारा दुश्मन नहीं है...।"

प्रिंसिपल बंटू को काफी देर तक समझाते रहे। उन्होंने कहा—"विद्या का आभूषण विनय है। जितने व्यक्ति महान् हुए हैं, उनमें यह गुण अवश्य रहा है। भरी हुई गागर कभी नहीं छलकती। अध-भरी गागर हमेशा छलकती है। विनयी व्यक्ति झुककर चलता है। घमंडी अपने सींग बाहर निकालता है, क्योंकि उसके पास अपनी संचित निधि कुछ नहीं होती। अपने गर्व को ही वह आत्मगौरव मान लेता है।...तुम्हें अधिक से अधिक विनयशील बनना चाहिए। जिस दिन तुममें यह गुण आ जाएगा, तुम कुन्दन की तरह इस विद्यालय में चमकोगे और हमें भी गर्व होगा।"

बंटू चुपचाप सिर झुकाए सुनता रहा। उसके मन में और कोई विचार नहीं थे। प्रिंसिपल के शब्द एक के बाद एक हथौड़े की तरह चोट करते जा रहे थे। वह तिलमिला उठा। उसका मन हुआ, वह उठकर खड़ा हो जाए और भाग जाए।

प्रिंसिपल ने भी अपनी बात खत्म कर दी। वह अपनी कुर्सी से उठकर खड़े हो गए। बोले—"अब तुम जा सकते हो। आज शाम तक अपने निर्णय की सूचना मुझे दे देना। तुम अब भी चाहोगे तो पत्र मैं तुम्हारे पिता के पास भेज दूंगा। ईश्वर तुम्हें सद्बुद्धि दें।"

बंटू उठकर चला आया। प्रिंसिपल ने उसे एक भंवर में फंसा दिया था। उसमें फंसा वह अपने-आप चक्कर खा रहा था। एक ओर विद्यालय के विद्यार्थी थे, जो मित्र बनकर उसकी शिकायत करते थे। दूसरी ओर वह स्वयं था, जो सम्हलकर भी सम्हल नहीं पा रहा था। उसके साथ उनके अपने संस्कार थे। जिन संस्कारों में वह पला है, और जो दायरे उसे घेर रहे हैं, वे अपने-आप में काफी सख्त थे।

शाम तक बंटू कुछ तय नहीं कर सका। प्रिंसिपल ने नियत समय पर

दफ्तर का एक चौकीदार बंटू के पास भेजा। बंटू उसे देखकर ही चीख पड़ा। बोला—"मुझे परेशान मत करो। मेरे इरादे अपरिवर्तित हैं। प्रिंसिपल सर से जाकर कह दो।"

प्रिंसिपल ने सुना तो उन्होंने एक लम्बी सांस ली। बंटू के लिफाफे पर विद्यालय की सील लगा दी। चौकीदार को देकर उन्होंने कहा—"इसे लेटर-बक्स में डाल दो।"

दूसरा दिन शुरू हुआ।

एक भरी हुई दुनिया का सारा रीतापन बंटू के हाथ लगा। सुबह न घुड़सवारी के मज़े और न शाम संगीत की सरगरमी। अकेले भोजन और नाश्ता।

रह-रहकर उसे स्मृतियों के बवंडर ने घेर लिया। उसके सामने सुबह आशा की शक्ल झूलने लगती। उसने बंटू को घोड़े से गिराया था। लेकिन इसके पहले वह भी तो उसे गिरा चुका है। घोड़े से गिरकर भी आशा नाराज़ नहीं थी। जब वह गिरा था, तो वह दुःख से रोई भी थी। उसका भीतर-बाहर पहाड़ी नाले के पानी की तरह कितना स्वच्छ और निर्मल है। उसे जब मोहिनी की याद आती, तो वह घबरा जाता। किस मिट्टी की बनी है वह लड़की। उसकी चोटियां चली गयीं, परन्तु उसने शोर तक नहीं मचाया।

शाम को उसे रेखा मिस की याद बरबस आ जाती। वह प्यानो सिखाने में कितना रस लेती हैं।…फिर उसे खेल का खुला और सपाट मैदान दिखाई देता। कभी उसके हाथ में बैडमिण्टन का रैकेट होता, कभी क्रिकेट का बल्ला। वह अपने-आपको हंसते-खिलखिलाते हुए साथियों के बीच में देखता।

अकेले भोजन करना कितना भारी होता है। उसने अनुभव किया, अकेले रहने में कितना दर्द है। मनोज जब भोजन के लिए जाने लगा, तो बंटू उठकर खड़ा हो गया। बोला—"मित्र, मैं इस अकेलेपन से तंग आ गया हूं। मैं भी तुम्हारे साथ चलूंगा। खाऊंगा नहीं, वहीं खड़ा रहूंगा, बस।"

मनोज की आंखें भर आईं। उसने बंटू के हाथ दबाए—"बस, चार दिनों की बात और है, बंटू। फिर सब उसी तरह चलने लगेगा।"

"नहीं, मैं जरूर तुम्हारे साथ चलूंगा।"—बंटू ने कहा। मनोज थोड़ी

देर उसकी ओर देखता रहा। फिर उसने कहा—"बंटू, तुम्हारी यही कमजोरी है। एक मुसीबत दूर करने के लिए तुम दूसरी मुसीबत मोल ले लेते हो। इस तरह तो ये मुसीबतें कभी तुम्हारा पीछा नहीं छोड़ेंगी।"

बंटू निराश होकर अपनी कुर्सी पर बैठ गया। [illegible] मनोज गया तो उसने कहा—"बंटू, मेरे कारण तुम्हें दुःख हुआ है। मुझे माफ कर दो।"

बंटू कुछ नहीं बोला।

शाम को उसने आशा को संगीत की कक्षा में जाते हुए देखा। उसने आशा को रोका और कहा—"आशा, रेखा मिस ने कह दिया, बंटू को आपकी याद आती है।"

आशा चुपचाप नजरें झुकाकर चली गई। उसका हृदय भर आया था।

दूसरी दोपहर उसे मोहिनी मिली। वह किताबें लिए जा रही थी। आसपास कोई नहीं था। उसे अकेला देखकर बंटू ने उसे बुलाया। वह ठहर तो गई, किन्तु उसके पसीना छूट गया। बंटू अगर फिर कुछ गड़बड़ न [illegible]। उसने जोर से थूक निगलते हुए कहा—"क्या है बंटू ?" मोहिनी की नजरें झुकी हुई थीं।

बंटू उसके पास आ गया। बोला—"मोहिनी, मुझे एक बात कहनी है।"

बंटू की आवाज अप्रत्याशित रूप से [illegible]। उसने कहा "कह दो।"

बंटू की आवाज एक बार कांपी। फिर उसने कहा—"मैं अपने को सम्भाल नहीं पा रहा, मोहिनी। मुझे अब इस विद्यालय में ज्यादा दिन रहना भी नहीं है। मैं नहीं चाहता, मेरे कारण किसी के मन को आघात लगे। तुम्हारी चोटियां काटते समय मैंने अपराध की गम्भीरता पर विचार नहीं किया था। अब मैं अनुभव कर पा रहा हूं।"

मोहिनी ने बंटू के चेहरे को देखा। उसमें अपराध [illegible] आ गया था। वह थोड़ी देर तक उसे देखती रही। बंटू भी [illegible]। फिर उसके मन में जाने क्या आया, वह तेजी से भाग गया। मोहिनी ने उसे दौड़ते हुए देखा। उसे लगा, बंटू ने दौड़कर सारी पश्चात्ताप [illegible] कम कर डाली है। वह खुश होकर कक्षाओं के कमरे की ओर चली गई।

बंटू का यह परिवर्तन सारे विद्यालय में चर्चा का विषय बन गया।

वंटू के पास पैसे नहीं थे।

इस सप्ताह उसे खर्च नहीं मिला था। वैसे उसके पास तीस रुपये थे। ये रुपये उसके जन्म-दिन पर उसके पिता ने भेजे थे। परन्तु वह उन्हें खर्च नहीं करना चाहता था।

विना पैसों के वह परेशान रहने लगा। उसका मन कोई-न-कोई चीज़ खरीदने का होता, परन्तु वह अपने हाथ बंधे पाता।

एक दिन मनोज कुछ टाफियां लेकर आया। उसमें से दो टाफियां उसने वंटू को दीं। वंटू ने लेने से इन्कार कर दिया—"नहीं, यह तुम्हारा हिस्सा है। मुझे नहीं चाहिए।" वंटू यद्यपि लेना चाहता था, परन्तु उसने नहीं ली।

मनोज ने कहा—"इन्हें मेरी भेंट के रूप में ले लो।" वंटू तव भी नहीं माना। मनोज ने एक टाफी जवरन वंटू के मुंह में भर दी। उसकी कमर में हाथ डालकर वह वोला—"वंटू, इस सप्ताह हम दोनों मिलकर खर्च करेंगे। इससे तुम्हें भी पैसों का अभाव नहीं खटकेगा। अगले सप्ताह से जो पैसे मिलेंगे, हम दोनों लिया करेंगे। फिर देखना कितना मजा आएगा।"

वंटू को यह सुझाव अच्छा लगा। उसने मनोज की दो टाफी वड़े रस के साथ खाईं।

उस रात वंटू को नींद नहीं आई। उसके सामने एकसाथ ढेर-सी परेशानियां थीं। कश्मीर-यात्रा में जो मज़े उसने लिये थे, वे सव जैसे उसके साथ वदला ले रहे हैं। उसे प्रिंसिपल का चेहरा याद आया, वह चेहरा जो उन्होंने अपने घर में दिखाया था। उस चेहरे में एक आत्मीयता थी, एक निजी एकान्त के-से भाव थे। लेकिन···वही सव कुछ नहीं था। वंटू के दिमाग में 'विद्यार्थी परिषद्' की वह वैठक घूम गई जिसमें स्वयं प्रिंसिपल ने कहा था कि वंटू दोषी नहीं है। दोष उसके पिता का है।

वंटू के मन में एक वार फिर प्रतिहिंसा की अग्नि भड़क उठी। उसीके कारण उसके पिता दोषी ठहराए गए। वह भी सज़ाएं भुगते और उसके पिता भी अपराधी कहलाएं···।

"नहीं···नहीं"···। वंटू विस्तर में पड़े ही पड़े चिल्लाया···"यह नहीं हो सकता।" वह उठकर वैठ गया।

उसने हिसाव लगाया। पत्र कव तक डाक से निकलेगा, कव घर पहुंचेगा

और कब···। उसने एक ताजगी महसूस की। उसका मनचाहा हो ही जाएगा।

'लेकिन···' उसने सोचा—'जाने से पहले मुझे एक बड़ा काम करना चाहिए। मैं सारे विद्यालय को बता दूंगा कि मेरे पिता दोषी नहीं हैं। वे एक महान् और उदार व्यक्ति हैं। उनके जैसे गुण और किसीमें नहीं हैं।'

यह विचार बंटू के मन में मजबूत हो गया। उसने खिड़की से झांककर देखा। रात तनहाई की चादर ओढ़े सो रही थी। उसने बिजली जलानी चाही। उसके उजेले में वह सोती हुई रात को देखना चाहता था। परन्तु वह ऐसा नहीं कर सका। अपर्णा मिस का भय उसे एक बार कंपा गया। वह चादर ओढ़कर सो गया। उस चादर के भीतर उसने फिर अकेलेपन का अनुभव किया। मनोज है, आशा है, मोहिनी है, हरकिशन है, गिरीश है, अपर्णा मिस हैं, रेखा मिस हैं, और···नहीं वह तब भी अकेला है।

बंटू सुबह उठा तो काफी खुश नजर आया। मनोज के उठते ही उसने 'नमस्ते' की। उसने अपना बिस्तर अपने-आप स्वयं समेटा। मनोज घुड़सवारी के लिए चला गया। बंटू को दुःख नहीं हुआ। वह अपनी टेबल पर जा बैठा और अंगरेजी का पाठ याद करने लगा। सहसा उसे पुस्तक के पन्नों पर घोड़े दौड़ते नजर आए। वह उठने लगा तो घोड़े गायब थे।

बंटू अपने-आप हंसा। बस, अब देर नहीं है। वह फिर घोड़े दौड़ाएगा।

इस तरह सारा समय पार हो गया। बंटू की सजा खत्म हो चुकी थी। उसके सामने एक नया सवेरा था। उस सवेरे उसने सारे काम सावधानी से किए। दोपहर को उसे मनोज का ध्यान आया। कल उसका जन्मदिन है।

छुट्टी के बाद वह फिर बाजार की ओर गया। उस ओर जाते हुए उसे अपर्णा मिस की याद आई। कहीं उन्होंने देख लिया तो फिर पहाड़ टूट पड़ेगा। मनोज ने ठीक ही कहा था, वह सोचने लगा कि तुम एक परेशानी को दूर करने के लिए और परेशानियां मोल ले लेते हो। बंटू विद्यालय के घेरे के बाहर खड़ा हो गया। वह सोचने लगा, क्या करे। दो मिनट के बाद ही उसके कदम आगे बढ़ गए। 'जो होगा देखा जाएगा'—उसने अपने-आपसे कहा, 'आज तो जाना ही होगा।'

उस समय बंटू की जेब में तीस रुपये थे। मन में एक आकांक्षा ही थी। उसके कदम तेज हो गए।

···

एक दूकान में जाकर वंटू ने कई चीजें खरीदीं। पहले उसने लिखने के लिए एक फाउण्टेनपेन लिया। फिर एक पेंट और बुशशर्ट। उसके बाद उसने एक बड़ा केक लिया। इन सबमें उनतीस रुपये खतम हो गये। वंटू के पास एक रुपये का नोट रह गया। उसने वह नोट भी दुकानदार को दे दिया। कहा—"इसकी टाफियां दे दो।"

वंटू ने टाफियां लीं। उनमें से दो अपनी जेब में रख लीं। एक वहीं खा गया। बाकी अपने सामान के साथ पैक करवा लीं। दुकानदार ने सारा सामान करीने के साथ एक डिब्बे में पैक कर दिया। उसमें वंटू ने दो परचियां रख दीं। एक में लिखा था—"जन्मदिन के अवसर पर तुम्हारी मां की प्रेम-भेंट।" दूसरे में लिखा था—"यह बहन की भेंट है।" उस पैकेट को लेकर वंटू विद्यालय की ओर चला आया। वह दबे पैर कमरे में आया। वहां मनोज नहीं था। उसे खुशी हुई। उसी समय उसने एक चिट्ठी लिखी। यह चिट्ठी मनोज की मां और बहन की ओर से लिखी गई थी। उसकी मां और बहन दोनों अपढ़ थीं। वंटू चिट्ठी लिखते समय यह भूल गया। उसने आड़े-तिरछे अक्षरों में उनके हस्ताक्षर कर दिए। फिर उस पैकेट को उसने अपनी अलमारी में छिपा दिया। एक राहत-भरी सांस लेकर वह संगीत की कक्षा में चला गया।

वंटू ने पियानो में एक नया गीत गाया। वह गीत नीता मिस ने उसे एक पत्र में लिखकर भेजा था।

गीत सुनकर रेखा मिस भी खुश हुईं। उन्होंने कहा—"वंटू, तुम्हारे बिना यह कक्षा सूनी लगती थी। तुम आ गए तो फिर रौनक लौट आई है।"

रेखा मिस ने वंटू को अपने पास बुलाया। वहां आशा और मोहिनी भी थीं। बोलीं—"अब गड़बड़ मत करना। नियमों में चलना और खूब पढ़ना। टूर्नामेंट में संगीत-प्रतियोगिता भी रखी गई है। मैंने उसके लिए तुम्हारा और आशा का नाम दे दिया है। तुम पियानो बजाओगे और आशा यही गीत गाएगी, जो तुमने अभी गाया था।"

वंटू ने आशा की ओर देखा। दोनों खुश हुए। उसी समय मनोज ने रेखा मिस से कहा—"मिस, वंटू का नाम क्रिकेट वाली टीम में भी शामिल किया गया है।"

"अच्छा।"—रेखा मिस खुश हुई—"यह तो बहुत अच्छी बात है।"

बंटू कुछ नहीं बोला। वह मुस्कराता रहा। उसका चेहरा जासौन के फूल की तरह लाल होता गया।

संगीत की कक्षा से वह लौटने लगा तो उसके सामने से मोहिनी जा रही थी। वह सिर पर नये बाल लगाए हुए थी। उन बालों मे दो चोटियां पड़ी थीं। उनमें दो लाल रिबन लगे थे। एकाएक यह पता ही नहीं चलता था कि ये बाल नकली हैं। उसका मन हुआ कि वह पास जाकर मोहिनी को रोके। उसके बाल छूकर देखे। परन्तु मोहिनी तेज कदम बढ़ाकर आगे चली गई।

बंटू ने अपने कदम आशा के कमरे की ओर मोड़ दिए। उसने आशा को बाहर बुलाया। काफी देर तक उससे बातें करता रहा। आशा ने एकाएक कहा—"न, बाबा न। तुम तो मुझे भी फंसा दोगे।"

बंटू ने समझाया—"मैं सब मनोज की खुशी के लिए कर रहा हूं। तुम्हें इस काम में मेरा साथ देना ही होगा।"

आशा ने गम्भीर होकर कहा—"बंटू, मेरे पिता डाक्टर हैं। वे एक नामवर आदमी हैं। मैं तुम्हारा साथ दू और कल प्रिंसिपल को पता चल जाए तो···।"

"तो वे तुम्हारे पिता को भी दोषी कहेंगे, यही न।"—बंटू ने कहा।

"हां।" आशा ने सिर हिला दिया।

"ऐसा नही होगा"—बंटू बोला—"तुम्हारी इस विद्यालय में धाक है। हम तो बदनाम लड़को में से हैं। लेकिन आशा···" बंटू ने उत्तेजित होकर कहा—"एक दिन प्रिंसिपल साहब को अपनी गलती मंजूर करनी पड़ेगी। उन्होंने मेरे पिता के लिए जो शब्द कहे हैं, उन्हे वापस लेना होगा। तुम देखना।'

आशा को इससे खुशी हुई। बोली—"तब तो मैं तुम्हारा साथ जरूर दूगी।" बंटू वही खड़े-खड़े खूब हंसा। उसका मन चम्पा की तरह खुलता जा रहा था। उसे हंसता देखकर मोहिनी ने कमरे से झांका, तो बंटू ने उसे जीभ दिखाकर ठेंगा दिखा दिया। मोहिनी भी अपनी हंसी नहीं रोक पाई।

सुबह अचानक ही चौकीदार ने मनोज को एक बड़ा पैकेट दिया। उसके साथ एक अलग लिफाफे में एक पत्र था। इन्हें देकर वह चला गया। मनोज ने अचरज के साथ वह पत्र और पैकेट देखा। यह क्या है। उसने वंटू को आवाज़ दी—"वंटू, कहीं यह तुम्हारा पैकेट तो नहीं है? गलती से चौकीदार मुझे दे गया हो?"

"नहीं"—अपनी पुस्तक की ओर ध्यान लगाये ही लगाये वंटू ने उत्तर दिया—"चौकीदार कभी ऐसी गलती नहीं कर सकता।"

मनोज ने पैकेट खोला। फिर पत्र पढ़ा। उसकी आंखें फटी रह गयीं। हाथ लोहे की तरह निर्जीव हो गए। वह बुत बना खड़ा रहा। फिर एकाएक ज़ोर से चिल्ला पड़ा। वह पागलों की तरह हंसा। सब कुछ लाकर उसने वंटू के पलंग पर पटक दिया। बोला—"वंटू, मेरे दोस्त, मेरे अच्छे दोस्त, यह क्या हो गया!"

वंटू ने देखा। मनोज सचमुच अजीव-सी स्थिति में था। वह अपनी कुर्सी छोड़कर खड़ा हो गया। बोला—"क्या बात है, मनोज?"

"मेरी मां और बहन।···क्या हो गया उन्हें।"—मनोज अब भी अपने आश्चर्य को हज़म नहीं कर सका था। बोला—"ज़िन्दगी में पहली बार यह सवेरा हुआ है। आज तक मेरा कभी जन्मदिन नहीं मनाया गया। इन्हें आखिर यह क्या हो गया!"

वंटू ने उसे समझाया—"मनोज, अभी तक तुम्हारा जन्मदिन नहीं मनाया गया तो क्या आगे नहीं मनाया जा सकता? हो सकता है तुम्हारी मां और बहन को किसीने सही रास्ता दिखाया हो। कहा हो कि तुम्हारा बेटा एक बड़े विद्यालय में है···।"

वंटू ने उसे कई तरह से समझाया। मनोज की समझ में कुछ नहीं आया, किन्तु उसे समझना पड़ा। उसका अन्तर्मन खुशी से भर उठा।

सारे विद्यालय में एक लहर दौड़ गई। आज शाम की चाय मनोज के जन्मदिन की पार्टी के रूप में होगी।

मनोज ने केक काटा, तो उसका हाथ कांप रहा था। इसके पहले वह सारी मोमबत्तियां भी एक फूंक में नहीं बुझा पाया था। यह देखकर कई

विद्यार्थी हंसे थे। किन्तु दूसरी फूंक में उसने मोमबत्तियां बुझा दीं। सारे विद्यार्थियों ने तालियां बजाईं और एक साथ कहा—"जन्मदिन शुभ हो।"

मनोज ने नये कपड़े पहन रखे थे। वार्डन अपर्णा मिस उसकी पार्टी में मदद कर रही थीं। मनोज हल्के-हल्के कांप रहा था। कोई उससे आकर हाथ मिलाता तो उसे झिझक होने लगती। बंटू बेहद खुश था। वह पूरे समारोह का मज़ा ले रहा था। इतने आनन्द का अनुभव तो उसने उस दिन भी नहीं किया था, जिस दिन उसका जन्मदिन मनाया गया था। उसके शरीर में एक नयी चेतना थी। बिजली के हल्के प्रवाह की तरह एक झनझनाहट-सी उसके शरीर में दौड़ रही थी। वह विस्मय और अकथ आनन्द के अतिरेक में डूबा हुआ था।

पार्टी खत्म हुई तो मनोज ने बंटू का हाथ पकड़ लिया। बंटू उस समय और सभी कुछ भूल गया था। उसने कहा—"चलो, मनोज, हम बाहर घूम आएं।"

दोनों ने जाकर वार्डन से अनुमति ली और बाहर निकल पड़े। विद्यालय के बाहर निकलते ही उन्हें आशा मिल गई। तीनों आगे चले। मनोज ने बर्फी टाफियां और चाकलेट बंटू और आशा को दिए। उसने कहा—"बंटू, मुझे अब भी भरोसा नहीं होता। घर में कभी किसीने मेरा जन्म-दिन नहीं मनाया। कहीं यह पैकेट किसी और का तो नहीं था ?"

बंटू और आशा अपनी हंसी नहीं रोक सके। दोनों खूब खिलखिलाकर हंस पड़े। आशा ने कहा—"अरे, मनोज, तुम ज़रा अपने को तो देखो···।"

"क्या ?" मनोज ने अचरज से कहा।

"कहीं तुम, मनोज तो नहीं हो···ज़रूर कोई और हो।"—आशा के इस मज़ाक का आनन्द तीनों ने खूब हंसकर लिया। बंटू सबसे अधिक खुश था। उसने सामने के बाग से गुलाब के फूल तोड़े और तितलियां पकड़ीं। आज उसने तितलियों को जमा नहीं किया। उन्हें पकड़-पकड़कर वह छोड़ता भी गया।

शाम ढलने लगी तो एकाएक बादल आ गए। बादल घने होते गए और बरसने लगे। तीनों ने भागने की कोशिश की, किन्तु वे नहीं भाग सके। जब वे विद्यालय वापस लौटे तो पूरी तरह भीग चुके थे।

सुबह अचानक ही चौकीदार ने मनोज को एक बड़ा पैकेट दिया। उसके साथ एक अलग लिफाफे में एक पत्र था। इन्हें देकर वह चला गया। मनोज ने अचरज के साथ वह पत्र और पैकेट देखा। यह क्या है। उसने बंटू को आवाज दी—"बंटू, कहीं यह तुम्हारा पैकेट तो नहीं है? गलती से चौकीदार मुझे दे गया हो?"

"नहीं"—अपनी पुस्तक की ओर ध्यान लगाये ही लगाये बंटू ने उत्तर दिया—"चौकीदार कभी ऐसी गलती नहीं कर सकता।"

मनोज ने पैकेट खोला। फिर पत्र पढ़ा। उसकी आंखें फटी रह गयीं। हाथ लोहे की तरह निर्जीव हो गए। वह बुत बना खड़ा रहा। फिर एकाएक ज़ोर से चिल्ला पड़ा। वह पागलों की तरह हंसा। सब कुछ लाकर उसने बंटू के पलंग पर पटक दिया। बोला—"बंटू, मेरे दोस्त, मेरे अच्छे दोस्त, यह क्या हो गया!"

बंटू ने देखा। मनोज सचमुच अजीब-सी स्थिति में था। वह अपनी कुर्सी छोड़कर खड़ा हो गया। बोला—"क्या बात है, मनोज?"

"मेरी मां और बहन।···क्या हो गया उन्हें।"—मनोज अब भी अपने आश्चर्य को हज़म नहीं कर सका था। बोला—"ज़िन्दगी में पहली बार यह सवेरा हुआ है। आज तक मेरा कभी जन्मदिन नहीं मनाया गया। इन्हें आखिर यह क्या हो गया!"

बंटू ने उसे समझाया—"मनोज, अभी तक तुम्हारा जन्मदिन नहीं मनाया गया तो क्या आगे नहीं मनाया जा सकता? हो सकता है तुम्हारी मां और बहन को किसीने सही रास्ता दिखाया हो। कहा हो कि तुम्हारा बेटा एक बड़े विद्यालय में है···।"

बंटू ने उसे कई तरह से समझाया। मनोज की समझ में कुछ नहीं आया, किन्तु उसे समझना पड़ा। उसका अन्तर्मन खुशी से भर उठा।

सारे विद्यालय में एक लहर दौड़ गई। आज शाम की चाय मनोज के जन्मदिन की पार्टी के रूप में होगी।

मनोज ने केक काटा, तो उसका हाथ कांप रहा था। इसके पहले वह सारी मोमबत्तियां भी एक फूंक में नहीं बुझा पाया था। यह देखकर कई

विद्यार्थी हंसे थे। किन्तु दूसरी फूक में उसने मोमबत्तियां बुझा दीं। सारे विद्यार्थियों ने तालियां बजाईं और एक साथ कहा—"जन्मदिन शुभ हो।"

मनोज ने नये कपडे पहन रखे थे। वार्डन अपर्णा मिस उसकी पार्टी में मदद कर रही थी। मनोज हल्के-हल्के काप रहा था। कोई उससे आकर हाथ मिलाता तो उसे झिझक होने लगती। बंटू बेहद खुश था। वह पूरे समारोह का मजा ले रहा था। इतने आनन्द का अनुभव तो उसने उस दिन भी नही किया था, जिस दिन उसका जन्मदिन मनाया गया था। उसके शरीर में एक नयी चेतना थी। बिजली के हल्के प्रवाह की तरह एक झनझना-हट-सी उसके शरीर मे दौड़ रही थी। वह विस्मय और अकथ आनन्द के अतिरेक में डूबा हुआ था।

पार्टी ख़त्म हुई तो मनोज ने बंटू का हाथ पकड़ लिया। बंटू उस समय और सभी कुछ भूल गया था। उसने कहा—"चलो, मनोज, हम बाहर घूम आएं।"

दोनों ने जाकर वार्डन से अनुमति ली और बाहर निकल पड़े। विद्या-लय के बाहर निकलते ही उन्हें आशा मिल गई। तीनों आगे चले। मनोज ने बची टाफियां और चाकलेट बंटू और आशा को दिए। उसने कहा—"बंटू, मुझे अब भी भरोसा नही होता। घर मे कभी किसी [illegible] नही मनाया। कही यह पैकेट किसी और का तो नही था?"

बंटू और आशा अपनी हंसी नही रोक सके। [illegible] हंस पड़े। आशा ने कहा—"अरे, मनोज, तुम [illegible]

वहां से आते ही मनोज पंखे के नीचे खड़ा हो गया। बंटू ने उसे रोका। कहा—"तुम काफी भीग चुके हो। हवा भी तेज़ और सर्द थी। पंखे के नीचे खड़े होने से तुम्हें ठण्ड लग सकती है।"

मनोज खड़ा हुआ। वह नये कपड़ों की ओर देख रहा था। चाहता था कि ये तुरन्त सूख जाएं, ताकि वह उन्हें सम्हालकर रख दे। परन्तु इतने गीले कपड़े कहीं इतनी जल्दी सूख सकते थे।

रात को मनोज ने अपनी मां को सब लिखा। उसके प्रति अपना अगाध आदर व्यक्त करते हुए, उसने इन उपहारों के लिए उन्हें धन्यवाद दिया। उसने वह पत्र उसी समय लेटरबक्स में जाकर डाल दिया। उसे यह भी ध्यान नहीं रहा कि वह पत्र उसे प्रिंसिपल साहब के द्वारा भेजना था। पत्र डालकर उसने बड़े आनन्द की अनुभूति की।

लगभग आधी रात को उसने कंपकंपी का अनुभव किया। उसे लगा, जैसे उसके शरीर के भीतर कोई बहुत बड़ी ताकत है, जो अपने दोनों हाथों से उसे हिला रही है। अपने को रोकना चाहकर भी मनोज नहीं रोक सका। वह हवा की तरह कांपने लगा। तब उसने बंटू को आवाज़ें दीं। बंटू अगाध नींद में डूबा था। उसने कुछ नहीं सुना। तब मनोज उठा और कांपते हुए बंटू के पास तक जा पहुंचा। पहुंचकर वह उसीके ऊपर गिर पड़ा। बंटू हड़बड़ाकर उठा। मनोज की देह छूते ही उसे धक्का लगा।

"यह क्या!"—उसने कहा—"तुम्हें तो बुखार हो गया है।"

"हां"—मनोज की आवाज़ भी कांप रही थी—"मैं अपने को सम्हाल नहीं पा रहा।"

बंटू ने उसे सहारा दिया। अपने ओढ़ने के कपड़े भी मनोज को ओढ़ा दिए। मनोज कांपता ही रहा। तब बंटू ने अपनी बांहों में उसके शरीर को कसकर पकड़ लिया। किसी तरह दोनों ने रात काटी।

सुबह कवायद की घंटी बजते ही बंटू ने वार्डन से शिकायत की। वार्डन तुरन्त डाक्टर को लेकर मनोज के कमरे में चली आई। बंटू ने कवायद की और फिर घुड़सवारी के लिए तैयार हुआ। वहां आशा भी थी। बंटू ने रात की घटना आशा को बताई, तो दोनों एकसाथ परेशान हुए। उनका मन घुड़सवारी में बिलकुल नहीं लगा। किसी तरह घुड़सवारी का समय काटकर

दोनों मनोज के पास पहुंचे। डाक्टर चला गया। उसने दवा दे दी थी।

आशा ने मनोज के माथे पर अपनी हथेली रखी। "अरे!"—उसने तुरन्त हथेली खींच ली—"इसे तो बड़ा तेज बुखार है।" बंटू ने भी हाथ रखकर देखा। बुखार सचमुच तेज था। मनोज अर्द्धमूर्च्छित जैसी स्थिति में था। वह बुखार के जोर में बड़बड़ा रहा था—'···उपहार!···तुम नहीं भेज सकतीं।···तुमने कब भेजा है···बताओ किसने किया सब···?···किसने?'

आशा और बंटू ने एक-दूसरे की ओर देखा। दोनों हतप्रभ और चकित थे। उन्हें कुछ नहीं सूझ रहा था।

दो घण्टे बाद फिर डाक्टर आया। उसने थर्मामीटर से मनोज का बुखार नापा। वह एक डिग्री और बढ़ गया था। उसकी पूरी देह में दर्द था। डाक्टर ने सलाह दी कि मनोज को तुरन्त अस्पताल में दाखिल कर दिया जाए।

डाक्टर चला गया। उसके जाते ही वहां एम्बुलेंस गाड़ी आ गई। मनोज को अस्पताल भेज दिया गया। उसके साथ अस्पताल तक स्वयं वार्डन अपर्णा मिस भी गईं।

बंटू अपने कमरे में अकेला रह गया। आशा चली गई थी। बंटू ने मनोज का पलंग देखा तो अपने-आप सिसकने लगा। विस्मृत स्मृतियों ने उसे आकर घेर लिया। एक दिन इसी पलंग से उसे चिढ़ थी। वह नहीं चाहता था कि उसके कमरे में और दूसरा लड़का रहे। आज···उसका मन उसके पास नहीं था। वह उड़कर अस्पताल पहुंच जाना चाहता था।

बंटू अपने-आप पछताया। उसे क्या पता था कि होम करते हाथ जलेंगे। अब···। उसने मनोज का पत्र देख लिया था। उसे लगा···कहीं मनोज की मां ने उपहार भेजने की बात अस्वीकार कर दी तो? इस विचार से ही बंटू कांप उठा। वह नहीं चाहता था कि किसीको असली बात का पता चले।

रात को उसने मनोज की मां के नाम एक पत्र लिखा :

'आदरणीय माता जी,

मैं बंटू हूं, मनोज का सहपाठी। मनोज के साथ ही उसी कमरे में रहता हूं। आपको मनोज का पत्र मिला होगा। उसे पाकर आप अचरज में हुई होंगी।

नोज के जन्मदिन के लिए सारे उपहार मैंने अपने पैसों से खरीदे थे। वह झसे इतने उपहार न लेता, इसलिए मैंने एक नाटक रचा। मनोज को अब धीरे-धीरे विश्वास होने लगा है कि वे उपहार आपने ही भेजे हैं। आप इस बात को स्वीकार कर लीजिए। उसकी आस्था न टूटने पाये। वरना···।

कल से उसे तेज़ बुखार है। उसे अस्पताल में दाखिल कर दिया गया है। डाक्टर का कहना है कि उसके फेफड़ों में ठंड लग गई है। मैं अभी अस्पताल से लौटा हूं। वह आपकी और बहन जी की याद कर रहा था। ···मैं अपने को अपराधी पाता हूं। यह सब मेरे कारण हुआ है। न उस दिन हम घूमने बाहर जाते, न पानी में हम भीगते और न मनोज बीमार पड़ता। मेरा मन कुरेद-कुरेदकर मुझे कोस रहा है। आप मुझे क्षमा कर दें।

आपका—वंटू।"

वंटू ने पत्र तुरन्त लेटरवक्स में डाल दिया। रात-भर वह सो नहीं सका। उस कमरे का अकेलापन उसे काटने लगा। मनोज था तो सारा कमरा भरा लग रहा था। बाहर रात सनसना रही थी। पानी गिर जाने के कारण झींगुरों ने फिर शोर मचाना शुरू कर दिया था। एक तार की तरह एक-सी आवाज़ें खिच रही थीं और वंटू को यह सन्नाटा काटे जा रहा था। एक बार तो उसे लगा कि वह ज़ोर से चिल्ला दे। दूसरी बार उसने चाहा कि वह वार्डन के कमरे में भाग जाए। तीसरी बार उसने अस्पताल जाने की बात सोची।···परन्तु, वह केवल सोचता रहा। मनोज का इलाज अस्पताल में चलता रहा। विद्यालय के क्रम में कोई परिवर्तन नहीं आया। वंटू प्रतिदिन सुबह-शाम मनोज को देखने जाता था। अपने साथ वह गुला[b] के फूल ले जाता। हर वार वह एक अपराधी की तरह मनोज के साम[ने] अपने को पाता।

उसने कहा—"मनोज, तुम्हारी मां को खबर कर दी जाए, तो अ[च्छा] रहेगा। मैं प्रिंसिपल से कहे देता हूं।"

"नहीं"—मनोज ने वंटू के हाथ पकड़ लिए—"तुम ऐसा मत कर[ो]। मेरी मां, वैसी नहीं है, जैसी तुम सोचते हो। उसके पास इतने पैसे नहीं और हैं भी तो वह आएगी नहीं। बुलाने के बाद वह न आयी तो मुझे

दर्द होगा।"

मनोज रुआसा-सा हो गया था। बंटू का चेहरा उतर गया। मनोज ठीक कहता है।...परन्तु। वह तो पत्र लिख चुका है। अब उसकी मां को आना ही चाहिए।

उस दिन लौटकर उसने प्रिंसिपल से कह दिया कि मनोज अपनी मां को देखना चाहता है। प्रिंसिपल ने कहा—"अच्छी बात है, उसके घर आज ही सूचना भेज दी जाएगी।"

दूसरे दिन 'विद्यार्थी-परिषद' की बैठक थी। बंधे हुए नियमों के अनुसार उसका कार्य आरम्भ हुआ। इस बैठक में प्रधान न्यायाधीश हरकिशन नहीं था। उसका कार्यकाल समाप्त हो गया था। वह अन्य जूरियों में से एक था। प्रधान न्यायाधीश इस बार ग्यारहवीं कक्षा का विद्यार्थी स्वदेश दवे बना। किन्तु कार्य-प्रणाली में कोई अन्तर नहीं आया।

सबसे पहले खड़े होकर सबने मनोज के स्वास्थ्य के लिए प्रार्थनाएं कीं। बंटू ने पूरे मन के साथ इस प्रार्थना में भाग लिया। उसके बाद आगे की कार्यवाही आरम्भ हुई।

बैठक इस बार अधिक देर तक नहीं चली। किसी भी विद्यार्थी की कोई शिकायत नहीं थी। हरकिशन ने रिपोर्ट दी कि बंटू ने पिछली सज़ाओं को नियम के साथ पाला है। आगे उसकी कोई शिकायत अभी तक नहीं आई है।

यह सुनकर सभीको खुशी हुई। प्रिंसिपल और वार्डन ने खुशी से तालियां बजाई। बंटू ने तालियों की आवाज़ें सुनीं, तो खुश नहीं हुआ। उसे लगा, ये तालियां फिर उसका मज़ाक उड़ाने के लिए बजाई जा रही हैं। उसके मन में प्रतिहिंसा भड़क उठी।...बड़ी कठिनाई से बंटू अपने को दबा सका। उसने अपने मन में एक बात दोहराई—'ये तालियां मुझे नहीं रोक सकेंगी, प्रिंसिपल साहब।'

बैठक के अन्त में एक घोषणा की गई। खेलकूद के शिक्षक ने टूर्नामेंट में भाग लेने वाले विद्यार्थियों के नाम पढ़े। उनमें बंटू का भी नाम था। उसे क्रिकेट टीम का कप्तान बनाया गया था। साथ ही आशा के साथ उसे

संगीत में भी भाग लेना था।

घोषणा सुनकर बंटू चौंक उठा। उसे क्रिकेट की टीम का कप्तान बनाया गया है। आखिर क्यों?

बैठक समाप्त हुई। टूर्नामेंट के लिए दूसरे दिन सबको रवाना होना था। सबसे कह दिया गया कि वे तैयारी कर लें।

पन्द्रह

बंटू कप्तान बना

टूर्नामेंट के लिए स्कूल की बस रवाना हुई।

मनोज नहीं जा सका था। बंटू अभी-अभी उसे देखकर अस्पताल से लौटा था। उसका बुखार उतर गया था, किन्तु वह बहुत कमजोर था। उसके चेहरे पर एक हल्का पीलापन उभर आया था। उसमें उदासी और खिन्नता की रेखाएं खिंच गई थीं। बंटू उसे छोड़कर नहीं जाना चाहता था। परन्तु मनोज ने उसे क़सम खिलाई। वह विद्यालय की प्रतिष्ठा का प्रश्न था। पहली बार वह टूर्नामेंट में भाग ले रहा है। उसे कई शील्ड जीतने चाहिए। मनोज ने पूछा था—"बंटू, क्या तुम मुझे सचमुच चाहते हो?"

"हां"—बंटू ने कहा—"तुम्हारे बिना वह कमरा मुझे काटने को दौड़ता है।"

"तो मेरी एक बात मानो''—मनोज ने कहा। उसने बंटू से वचन लिया कि वह उसकी बात अवश्य मानेगा। उसने कहा—"क्रिकेट में हमारे विद्यालय को विजय मिलनी ही चाहिए। तुम पूरी तरह मन लगाकर खेलोगे, वचन दो।"

बंटू ने उसे वचन दिया था। उसीको साथ लेकर वह जा रहा था। रास्ते-भर उसे मनोज की याद आती रही। उसने एक बड़ी रिक्तता का अनुभव किया। उसे लगा जैसे उसके जीवन से कोई एक बड़ा सार-तत्त्व कहीं खो गया है। वह सांसों के रहते हुए भी बेजान है।

आशा ने रास्ते-भर बंटू का मन बहलाने की कोशिश की। बंटू का मन बराबर उड़ता रहा।

तीन घंटे की यात्रा के बाद उनकी बस पहुंच गई। एक विद्यालय में उन सबको ठहराया गया।

दूसरे दिन सुबह संगीत प्रतियोगिता हुई। उसमें आशा ने गीत गाया और बंटू ने पियानो बजाया। पियानो के स्वर करुणा से भरे हुए थे। एक-एक तार एक दर्द-भरी आवाज की तरह गिरता और उठता था। आशा के कंठ में उतनी ही गहराई थी। उनके गीत खतम करते ही जोर की तालियां बजी। इसके बाद लखनऊ से आए विद्यार्थियों ने गीत गाए। सारंगी और तबले के साथ एक लड़की ने देशप्रेम का गीत गाया। इलाहाबाद के छात्रदल ने सूरदास का भजन गाया। देहरादून की एक लड़की ने मीराबाई का गीत सितार के साथ गाया। चंडीगढ़ के छात्रों ने पंजाबी में एक वीररस-भरा गीत सुनाया। गीत गाते-गाते वे इतने तल्लीन हो गए कि नाचने भी लगे। "यह धरती पंजाब दी...।" इसके साथ ही उनके पैर थिरक उठे। एक अच्छा-खासा समां बंध गया। बंटू ने भी इसका आनन्द लिया। उसने नर्तकों की उमंगों की तरंगों में अपने-आपको भी थिरकते हुए पाया।

संगीत के कार्यक्रम के बाद सारे विद्यार्थी आपस में मिले। उन्होंने एक-दूसरे से परिचय किया और खूब बातें भी की। बंटू को यहां भी मनोज की अनुपस्थिति बराबर खटकती रही। वह होता तो उसका मन भी बाग-बाग हो जाता। ऐसी प्रतियोगिताएं कितना बल देती हैं!

दोपहर को क्रिकेट का मैच शुरू हुआ। बंटू अपनी टीम के साथ मैदान के बीच में था। चारों ओर हजारों आदमी मैच देख रहे थे। इतने आदमियों के सामने अपने को इतने प्रमुख पद पर खड़े देखकर बंटू को गर्व हुआ। उसने चारों ओर अपनी नजरें दौड़ाईं। फिर उसने सामने देखा। फिर उसने अपने-आपको देखा। खुशी के मारे उसका मन बाग-बाग हो गया।

उसी समय दो अम्पायर्स मैदान में आए। टास किया गया। टास बंटू ने जीता। उसे खेल शुरू करना होगा। चारों ओर से तालियां

थीं। उसके विद्यालय के विद्यार्थी विशेष रूप से खुश थे। भाग्य का पहला फैसला उन्हीं के पक्ष में हुआ है। अन्त भी अच्छा होगा। फिर वंटू के खेल पर उन्हें भरोसा था। वंटू में एक साथ कई गुण थे—वह एक अच्छा फील्डर था। वैट्समैन की सारी योग्यताएं उसमें थीं। गोलन्दाज़ तो वह इतना तेज़ था कि उसकी वरावरी उसके विद्यालय में कोई नहीं कर सका था।

वंटू ने हाथ में वल्ला सम्हाला और हंसकर उसने अपने विपक्षी दल के कप्तान की ओर देखा। कहा—"खेल आप शुरू कीजिए।"

'आदर्श विद्यालय' के छात्रों ने ज़ोर से आवाज़ें कसीं—"यह नहीं होगा।"

एक ने कहा—"वंटू अपने को क्या समझता है। उसे घमण्ड हो गया है।"

दूसरे ने उसका समर्थन किया—"वंटू हमारे विद्यालय को हराकर रहेगा। हमारी नाक कटाकर मानेगा।"

"कौन होता है वह विपक्षियों को मौका देने वाला!"—एक ने ज़ोर से कहा।

वहां हलचल होती रही। वंटू इन सवके प्रति उदासीन वना रहा। दूसरे दल ने खेल आरम्भ किया। वंटू ने गोलन्दाज़ी शुरू की। खेल का आरम्भ शिथिल हुआ, लेकिन वंटू ने दस मिनट के वाद ही खेल में जान ला दी। उसने दो खिलाड़ियों के विकेट उड़ा दिए।

गैलरियों में वैठे दर्शकों ने तालियां पीटीं। वंटू की चर्चा वहां होने लगी। थोड़े समय बाद ही वंटू ने तीन को कैच कर लिया। विपक्षी दल की लगभग आधी टीम का सफाया हो गया। उसी समय अवकाश का समय घोषित कर दिया गया।

आधे समय के वाद वंटू के और साथियों ने गोलन्दाज़ी शुरू की। हरकिशन और गिरीश ने भी खूव जमकर विपक्षियों का सामना किया। डेढ़ सौ रन बनाकर विपक्षी दल ने अपना खेल खतम कर दिया।

तव धूप मर रही थी और धुएं की तरह एक हल्कापन चारों ओर उतरता आ रहा था। दर्शकों की एक वड़ी भीड़ होहल्ला मचाते और सीटी

बजाते बाहर निकली। बंटू के साथियों ने उसे आ घेरा। विपक्षी दल के कप्तान ने भी बंटू से हाथ मिलाए। वह लखनऊ के एक विद्यालय का छात्र था।

दूसरे दिन अगला खेल शुरू हुआ। बंटू की टीम ने खेल आरम्भ किया। सबसे पहले गिरीश ने आकर बल्ला सम्हाला, लेकिन पांच मिनट के बाद ही वह आउट हो गया। उसके बाद आया स्वदेश दवे। दवे ने जमकर खेलना शुरू किया। उसके खेल से उखड़ती टीम को बल मिला। पन्द्रह मिनट में उसने तीस रन बनाए। बाद में हरकिशन आया और फिर प्रेम-सागर। दोनों थोड़ी देर खेलकर ही आउट हो गए।

पांचवा नम्बर बंटू का था। बंटू के मैदान में आते ही दर्शकों के मन उछलने लगे। चारों ओर से सीटियां बजी और फिर तालियां। आदर्श विद्यालय के विद्यार्थी निराश होते जा रहे थे। उन्हें लग रहा था कि खेल बराबरी में खत्म होगा। बंटू के आते ही, वे भी उत्साह के साथ कूदने लगे। हुआ भी यही, बंटू ने पासा ही पलट दिया। उसने शतक बनाया। शतक बनते ही कुल रनों की संख्या १५१ हो गई। अब आगे खेलने की जरूरत नहीं थी। बंटू अन्त तक 'नाट-आउट' रहा और ६ विकेट तथा १५१ रन पर खेल खत्म हो गया।

खेल समाप्त होते ही दर्शकों ने चारों ओर से बंटू को घेर लिया। उस भीड़भाड़ में उसकी दुर्गति हो गई। कोई सिर का टोप छीन ले गया। किसी-ने बल्ला छीन लिया। सबने मिलकर बंटू को ही ऊपर उठा लिया और पूरे मैदान में—'बंटू जिन्दाबाद' के नारे गूंजने लगे। बंटू परेशान और भयभीत था। किसीने उसे छोड़ दिया तो वह नीचे गिरेगा और उसकी हड्डी-पसली टूट जाएगी। परन्तु किसीने उसे फेंका नहीं।

शाम को मनोरंजन के कार्यक्रम हुए। उसमें आशा ने नाच दिखाया। गिरीश ने एक दुष्ट राक्षस का अभिनय किया। बंटू थका हुआ था, इसलिए वह अधिक समय तक नहीं बैठ सका। वह उठकर चला गया।

बिस्तर पर जाते ही उसे नींद आ गई। वह बेहोश, घोड़े बेचकर सोता रहा। आधी रात के बाद उसकी नींद खुली। उसने एक उड़ती नजर डाली। उसके सभी साथी बेसुध सो रहे थे। बाहर पूरा चांद खिला था।

चांद की दूधिया सफेदी में डूबे पहाड़ कपूर की तरह दिखाई दे रहे थे। बंटू धरती और आकाश को जोड़ती हुई सफेदी को देखता रहा। इसीके बीच उसे मनोज की याद आ गई। वह होता तो…। तो मनोज उसे भी उठाकर साथ में लाता और उसके साथ उस खुली चांदनी में तैरता। उसे अकेलापन अखरने लगा। वह वहां से भीतर आ गया।

एकाएक वह पिछले दरवाजे से बाहर आया। कॉरीडोर के बाहर से उसने सोता हुआ शहर देखा। चांदनी में डूबे उसने छोटे-बड़े मकान देखे। तारकोल की चमकती सड़कें और लाल नियोन-साइन। सब शान्त थे। एक तार-सा खिंच रहा था और एक हल्की सनसनाहट उस समूचे वातावरण में फैली थी। बंटू सब कुछ अपलक और अकेले देखता रहा।

फिर वह अपने बिस्तर पर लौट आया। उसके हाथ-पैर जवाब दे रहे थे। सारी देह टूट गई थी। इस दर्द के बीच पिछली घटनाएं उसके मस्तिष्क पर एक के बाद एक खिसकने लगीं। उसके सामने आदर्श विद्यालय की इमारत उभर आई। कल जो सम्मान उसे मिला है, वह इसी विद्यालय के कारण है। अपने घर में वह रहता तो…। उसे नीता मिस का चेहरा भी फीका-फीका लगने लगा।

'एक बंधी-बंधाई जिन्दगी में कोई सार नहीं है। वह बन्द पानी की तरह सड़ने लगती है।' उसके मन में यह विचार एकाएक आया। वह सोचने लगा—'यह खुली चांदनी, यह निर्बन्ध हवा, ये मनमौजी नदी-नाले और एकसाथ खेलते-खिलखिलाते चेहरे—इनमें से कोई अकेला नहीं है!' उसको भरोसा हो गया कि आनन्द अकेलेपन की अनुभूति नहीं है। उसे सामूहिक रूप से ही भोगा जा सकता है।

बंटू के विचारों ने एक नई करवट ले ली थी। वह उनमें खो गया और फिर सो गया।

बंटू और उसके साथी लौट आए।

लौटते ही प्रवेश द्वार पर 'आदर्श विद्यालय' के विद्यार्थियों ने उनका स्वागत किया। बाहर बन्दनवार सजाया गया था। उसमें फूल और केले के पत्ते लगाए गए थे। बंटू ने प्रवेशद्वार पर अपने प्रिंसिपल और वार्डन को

भी खड़े देखा। प्रिंसिपल ने बंटू का हाथ पकड़ लिया। उसकी पीठ थप-थपाई। कहा—"हमारे विद्यालय को तुम पर गर्व है।" वार्डन ने कहा—"बंटू हमारी शान है।"

मनोज खुशी से उड़ रहा था। वह आगे आया और बंटू से लिपट गया। मोहिनी ने आशा को बधाई दी। 'आदर्श विद्यालय' ने तीन शील्ड जीते थे। संगीत में आशा को और फैंसी ड्रेस में गिरीश को पुरस्कार मिले थे। क्रिकेट में तो विद्यालय का मुकाबला कोई कर ही नहीं सका था।

सारा दल अपने-अपने कमरों में चला गया। शाम को विजय की खुशी में एक शानदार भोज हुआ। उस भोज में सबने अपने-अपने संस्मरण सुनाए।

रात को बंटू अपने कमरे में गया। मनोज ने उसको अपना हाल-चाल बताया। जब से वह अस्पताल से आया है, एक ताजगी महसूस कर रहा है। तब भी उसे लगता है, जैसे उसका 'कुछ' चला गया है। कमज़ोरी अभी पूरी तरह गई नहीं है।

मनोज ने कहा—"बंटू, एक और बात है। कल मेरी मां और बहन आ रही हैं।"

"यह तो अच्छी बात है।"—बंटू ने कहा।

"नहीं, मैं नहीं चाहता था कि उन्हें कोई परेशानी हो। वे मेरे लिए यहां तक आएं।...और माताजी ने लिखवाया है कि उन्होंने कोई उपहार नहीं भेजे...।" मनोज ने प्रश्न-भरी मुद्रा से बंटू की ओर देखा। बंटू एक बार कांप उठा। उसने पत्र लिखा था, तब भी...बंटू ने जम्हाई ली। कहा—"मनोज, आज बड़ी थकान है। नींद आ रही है। सुबह बात करेंगे।"

बंटू ने सोने का बहाना किया, परन्तु वह सो नहीं सका। एक भय उसके मन में गहरा होता गया। यह बात सब जगह जान ली जाएगी और बंटू को फिर सज़ा मिलेगी। वह बहुत सोचता रहा। अन्त में दूसरे दिन सुबह से ही उसने प्रिंसिपल के कमरे की ओर अपनी नज़रें लगा दीं।

दोपहर के लगभग एक तांगा आकर रुका। मनोज कक्षा में था। बंटू उसीके पास बैठा था।

वंटू की तेज़ निगाहों ने आते हुए तांगे को देख लिया। उसने शिक्षक से थोड़ी देर की छुट्टी मांगी और वहां जा पहुंचा।

उसने कहा—"मेरा नाम वंटू है···।"

एक वूढ़ी स्त्री ने वंटू की पीठ थपथपाई। कहा—"मैं मनोज की मां हूं। और यह उसकी वहन—सरला।"

सरला काफी वड़ी थी। वंटू ने उसकी ओर देखा। उसे लगा, उसकी वार्डन और सरला में कोई खास अन्तर नहीं है। वैसे दोनों में अन्तर था। सरला वीस वर्ष से अधिक की नहीं थी।

वंटू ने दोनों को अतिथि-गृह में ठहरा दिया। उससे रहा नहीं गया। उसने कहा—"माताजी, मैंने सव कुछ मनोज की खुशी के लिए किया था, हुआ उलटा। इसका मुझे कितना खेद है, कह नहीं सकता। मेरे घर से हमेशा उपहार आते हैं, आप लोग मनोज को कभी कुछ भेजते ही नहीं।···"

मनोज की वहन ने उसे वीच में ही रोककर कहा—"तुम सही कहते हो, वंटू। लेकिन तुम्हें हमारी स्थिति का पता नहीं है···।"

वंटू वह जानना भी नहीं चाहता था। वह स्थिति और अ-स्थिति का भेद भला क्या समझे। उसने अन्त में कहा—"माताजी, एक प्रार्थना है। आप यह पता न लगने दें कि उपहार आपने नहीं भेजे···।"

"लेकिन हमने तो पत्र में मनोज को लिखवा दिया है।" मां जी के इस कहने का भी वंटू पर असर नहीं हुआ। वोला—"लिखवा दिया होगा, वह अलग वात है। यदि मनोज को पता लग जाएगा, तो उसका मन टूट जाएगा।"

वंटू उनसे वातें कर अपनी कक्षा में चला गया।

वार्डन ने आकर उनसे भेंट की। फिर प्रिंसिपल मिले। सरला ने सारी कहानी प्रिंसिपल को सुना दी। वंटू जो कह गया था, वह भी वता दिया। प्रिंसिपल ने सुनकर आश्चर्य व्यक्त किया।

उनकी नजरों में वंटू की एक नई तसवीर उभरी। इस तसवीर के तीन कोने थे—एक, शैतान वंटू; दूसरा, खेलकूद में सवको पछाड़ने वाला वंटू; और तीसरा, अपने दोस्तों के लिए इतना वड़ा त्याग करने वाला वंटू। इन तीनों वातों में वंटू की वरावरी करने वाला सारे विद्यालय में कोई

नहीं था।

छुट्टी होने के बाद मनोज को सूचना दी गई। मनोज की मां और बहन उसके कमरे में गईं। उन्होंने देखा, वह कमजोर हो गया है और पीला पड़ गया है। मां ने मनोज को छाती से लगा लिया। बहन ने उसे नन्हे बच्चों की तरह गोद में उठाया। अपने साथ वे कुछ फल लाई थीं। उन्होंने वे फल मनोज को दिए। मनोज ने उन्हें टेबल पर रख दिया। बहन ने कहा—"मनोज, एकाध खा लो।"

"नहीं"—उसने कहा—"अभी नहीं। बंटू के साथ खाऊंगा।"

मां ने मनोज की बलैयां लीं। कहा—"बेटा, बंटू जैसा दोस्त तुम्हें मिला है। ये तुम्हारे भाग्य हैं। उससे कभी बैर मत करना। उसने जो किया है, तुम्हारा सगा भाई होता तो भी न करता।"

मनोज ने पूछा—"क्या यह सच है कि उपहार बंटू ने ही भेजे थे…?"

मां और बहन दोनों ने इसका सीधा उत्तर नहीं दिया। उन्होंने बात टाल दी। लेकिन मनोज के बहुत कहने और परेशान करने पर सरला ने बंटू का लिखा पत्र उसके सामने बढ़ा दिया। मनोज ने सांस रोककर वह पत्र पढ़ा और उसका हृदय भर आया। उसकी आंखों में आंसू छलछला आए। बंटू ऊपर से जितना सख्त और लापरवाह दीखता है, है नहीं। उसका रोम-रोम बंटू के प्रति आभार से सिहर उठा।

बंटू बाहर से लौटा तो कमरे में उसने इन तीनों को पाया। वह खुश हुआ। उसने मनोज के गले में अपने दोनों हाथ रख दिए। फिर उसने मनोज की मां और बहन से 'नमस्ते' की। इस बार किसीको 'नमस्ते' करने के लिए उससे कहना नहीं पड़ा। वह उनके पास बैठ गया। सरला ने फल छीलकर मनोज और बंटू को दिए। मनोज की मां ने कहा—"बंटू, तुमने हमारी आंखें खोल दी हैं। हमें मनोज की उपेक्षा इस तरह नहीं करनी चाहिए थी। अब कभी ऐसा नहीं होगा। हम वचन देते हैं।"

बंटू ने उनका आभार माना। सरला ने कहा—"तुम दोनों हमेशा भाई की तरह रहो। हम यही चाहते हैं।"

बंटू ने वचन दिया कि वह बराबर इस बात के लिए प्रयत्न करता रहेगा।

दूसरे दिन मनोज की मां और बहन जाने लगीं। जाते समय उन्होंने वंटू को अपने कलेजे से लगाया। प्रिंसिपल से उन्होंने बातें कीं और वंटू का पत्र उनके हाथ में थमा दिया।

वे चली गईं तो प्रिंसिपल ने वह पत्र पढ़ा। उसे वे तीन बार पढ़ गए। उन्हें गर्व हुआ। वंटू उनके एक परिचित मित्र और ऊंचे अफसर का लड़का है। खून का असर नहीं जाता। वंटू में यदि महान् गुण हैं तो उसकी हरकतें भी उन्हींका एक अंग हैं।

दूसरे दिन न चाहते हुए भी यह बात सारे विद्यालय में फैल गई। लेकिन इससे उसका सार नष्ट हो गया। बात धुएं की तरह उठती है और जब फैलती है तो आग की तरह जलने लगती है। असल में वह कुछ थी; बदल कर कुछ हो गई। उसका नया रूप अजीब-सा हो गया। बात इतनी-सी रह गई कि वंटू के पिता ने तीस रुपये भेजे थे। वंटू ने विद्यालय के नियमों के अनुसार वे रुपये जमा नहीं किए। उसने उनका अकेले उपयोग किया। वह अकेले बाज़ार गया। उसने अपने मन की चीज़ें खरीदीं और खाईं। मनोज को अपना साझीदार बनाने के लिए उसके घर एक चिट्ठी लिखी। उस चिट्ठी में मनोज की खूब तारीफ की गई थी। लिखा था—"मनोज से अच्छा लड़का इस विद्यालय में नहीं है।" प्रयोजन यह था कि यह पत्र मनोज को वापस मिलेगा। इस तरह वह मनोज को अपनी मुट्ठी में कर लेगा और प्रिंसिपल साहब भी खुश होंगे।

विद्यालय के बहुत-से लड़के खुश थे। अब सारी कलई खुल जाएगी। वंटू को फिर सजा मिलेगी। और अब की बार की सजा साधारण नहीं होगी। ...वंटू के बहुत-से विरोधी खुश थे। उनमें गिरीश था, तो मोहिनी भी।

सोलह

विकास की ओर

सवेरे से वंटू ने भारीपन का अनुभव किया।

मनोज ने चाय के बाद वंटू से पूछा—"वंटू, आज विद्यार्थी परिषद् की

बैठक है। तुम्हें मालूम है न ?"

"हां—" वंटू के उत्तर में भारीपन था।

"तुम इन बातों की चिन्ता न करो। इनका कोई असर नहीं होगा।" मनोज ने कहा—"ये लड़के सिर्फ तुम्हें चिढ़ाने के लिए ऐसी बातें करते हैं। वरना किसीके मन में तुम्हारे प्रति दुर्भावना नहीं है। सब तुम्हें चाहते हैं।"

"चाहें या न चाहें, मेरे लिए इसमें कोई अन्तर नहीं है।" वंटू ने उपेक्षा से जवाब दिया। उस समय उसका दिमाग भारी था। वह थोड़ी देर अकेला रहना चाहता था। उसने कहा—"मेरे दोस्त, मुझे एक घण्टे के लिए अकेला छोड़ दो। तुम्हारी बड़ी कृपा होगी।"

मनोज ने वंटू की ओर देखा। उसके माथे पर एक सिकुड़न-सी उभर आई थी। वह काफी परेशान नजर आ रहा था।

वंटू ने अपने-आपको विचित्र स्थिति में पाया। वह कुछ सोच नहीं पा रहा था। उसके भीतरी दिमाग में गहरा धुआं-सा फैला था। वह कुछ सोचता और फिर भूल जाता। उसे निर्णय करना है। अपने-आपके बारे में उसीको सोचना है। और यह कितना कठिन काम है।

वंटू की स्थिति अब और थी। पहले उसकी एक मुट्ठी खाली थी। अब दोनों भारी थी। एक मुट्ठी में जय-विजय और मित्रता के सूत्र बन्द थे। दूसरी मुट्ठी पहले से ढीली जरूर थी, परन्तु खुल नहीं पाई थी। वह करना कुछ चाहता है, कर कुछ जाता है। यह छोटी परेशानी नहीं थी।

पेंडुलम की तरह एक विचार-सूत्र उसके सामने घूम गया। उसने अपने सामने खुले नीले आकाश के नीचे आलीशान बंगले, कार, नौकर और नीता मिस को देखा। उसने वे नजरें देखी, जो हर बार उसीके लिए गिरती-उठती हैं। दूसरी ओर उसने एक बंधी हुई जिन्दगी देखी। लेकिन बंधी होने पर भी कितनी निर्बन्ध है। उसके सामने अनगिनत साथियों के चेहरे और हंसती-मुसकराती छवियां घूम गईं। चोटी कटने के बाद भी मोहिनी के मुंह से आह नहीं निकली। झिड़की खाने पर भी गिरीश हंसता रहा। पहले दिन मनोज को उसने चांटा मारा था, तब भी उसने पहल की और वह उसका सबसे अच्छा मित्र बना। घोड़े से गिरने पर भी आशा ने साथ नहीं छोड़ा। हरकिशन, स्वदेश दवे और ढेर सारे लड़के—कौन नहीं चाहता उन्हें।

उसे अपने-आप-हंसी आ गई। गणित के शिक्षक की एक छाया उसके सामने खड़ी थी। उन्हींको तो उसने 'वशमुद्दीन' कहा था। वार्डन अपर्णा मिस अपने बेटे की तरह उसे चाहती हैं। प्रिंसिपल उसकी छोटी-सी भी अच्छी बात की सराहना करने में नहीं चूकते। इतने भरे-पूरे साथियों के बीच रहने में कितना मजा है। बंटू ने अनुभव किया कि अकेलेपन की जिन्दगी अपने-आप में एक सजा है।...तब भी, उसने सोचा—नीता मिस के पास पढ़ने में जो आजादी है, यहां नहीं है।

बंटू कुछ सोच रहा था, कुछ नहीं सोच पा रहा था। तभी घण्टी बज गई और उसे अपनी कक्षा में जाना पड़ा।

कक्षा में हाजिरी हुई तो बिना अवरोध के बंटू ने 'येस सर' कहकर अपनी उपस्थिति बताई। सारा काम उसने सावधानी से किया। हर अध्यापक ने उसकी प्रशंसा की।

दोपहर बाद विद्यार्थी परिषद् की कार्यवाही आरम्भ हुई। अपर्णा मिस ने टूर्नामेंट का सारा हाल परिषद् के सामने रखा। क्रिकेट जीतने की बात आई तो सबने जोर से तालियां पीटीं। उनके दल ने चांदी की शील्ड जीती थी। वह शील्ड सबको दिखाई गई। दिखाने का यह काम बंटू को ही सौंपा गया। सबने बंटू को शील्ड के साथ देखा। वे खुश हुए बिना नहीं रहे। फिर आशा और गिरीश को धन्यवाद दिए गए।

इसके बाद थोड़ी देर शोरगुल होता रहा। हर विद्यार्थी विभिन्न तरीकों से अपनी खुशियां व्यक्त करता रहा। पन्द्रह मिनट के बाद प्रधान न्यायाधीश स्वदेश दवे ने हथौड़ा पीटा। एक गम्भीर शान्ति उस कमरे में घिर आई।

शिकायतें पेश होने का समय आया। पहले एक-दो छोटी शिकायतें की गईं। फिर हरकिशन ने बंटू की शिकायतें पेश कीं। वह खड़ा हो गया। उसने कहा :

" जूरियो और साथियो,

" बंटू ने हमारे विद्यालय का नाम रोशन किया है, हम इसे नहीं भूल सकते। लेकिन मेरे पास उनकी तीन शिकायतें हैं। पहली, बंटू के पिताजी ने तीस रुपये भेजे थे। विद्यालय के नियमों के अनुसार वे रुपये बंटू ने विद्यालय

फण्ड में जमा नहीं किये । उनका उपयोग उन्होंने अकेले किया और इस
तरह स्वार्थ का परिचय दिया । दूसरी शिकायत यह है कि कुछ दिन पहले वे
फिर अकेले बाजार गए थे । बंटू ने कई बार ऐसा किया है । तीसरी, बंटू ने
मनोज की माताजी को गलत पत्र लिखा । उसमें मनोज की झूठी तारीफ की ।
यह पत्र बंटू ने प्रिंसिपल को दिखाये बिना सीधे भेज दिया । इसमें एक प्रयो-
जन था । बंटू जानते थे कि वह पत्र वापस आएगा । उसे प्रिंसिपल देखेंगे
और खुश होंगे । उन्होंने गलत ढंग से हमारे प्रिंसिपल को खुश करने की
कोशिश की ।"

हरकिशन एक लिखा हुआ कागज पढ़कर बैठ गया । सुनते ही बंटू के
आग लग गई । यह तो बाल की खाल निकालना हुआ । उसने कभी ऐसा कुछ
नहीं सोचा । उसने अपनी आँखें बन्द कर ली । उसका मन विद्रोह कर उठा ।
वह चुपचाप बैठा कुछ सोच रहा था, तभी स्वदेश ने बंटू का नाम पुकारा ।
कहा—"बंटू साहब कुछ कहना चाहेंगे ?"

बंटू ने आंखें खोलीं । उसकी दृष्टि के सामने कोहरा था । वह तब भी
खड़ा हो गया । उसे कुछ सूझ ही नहीं रहा था कि वह क्या कहे । उसे एका-
एक कहा—"दोस्तो, आपको याद होगा, आपने एक बात मुझसे कही थी
आप जानना चाहते हैं कि मैं यहां पढ़ूंगा या नहीं । मैं अपना अन्तिम निर्ण
दे दूं—।"

स्वदेश ने रोककर कहा—"जरूरी चाहते हैं कि पहले आप हमारी
का जवाब दें । आपको ऊपर की शिकायतों के बारे में कुछ कहना है ?"

"नहीं ।" उसने एक भरी हुई और दृढ़ आवाज में कहा । चारो
शोर फैल गया । उस कोलाहल के बीच मनोज खड़ा हुआ । उसे एक
ने हाथ खींचकर बैठा दिया । फिर आशा खड़ी हुई । तभी स्वदेश
हथौड़ा पीटकर शान्त रहने का आदेश दिया ।

कमरा एकदम शान्त हो गया । तब प्रिंसिपल अपनी जगह से
उन्होंने खड़े होकर कहा—"महोदय, मुझे एक बात कहनी है ।"

सबकी आंखें प्रिंसिपल की ओर उठ गईं । उन्होंने एक काग
या कहा—"परिषद् को गलत खबरें दी गयी हैं । बंटू ने जो पत्र म
... वह यह है ।" एक सरसराहट-सी फैल गई । ए

के पास पहुंचा दिया गया। उन्होंने उसे पढ़ा।

फिर स्वदेश ने ज़ोर-ज़ोर से वह पत्र पढ़कर सुनाया। सुनते ही सब स्तब्ध रह गए। लड़कियों की तो आंखें हो नम ही गईं। मनोज फूट-फूटकर रोने लगा। स्वयं स्वदेश का गला भर आया था।

पत्र पढ़कर उसने सबकी ओर देखा। सारी आंखों में एक दूसरा भाव था। स्वदेश ने कहा—"दोस्तो, हमें बंटू जैसे साथियों पर गर्व है। विद्यालय के नियम हम लोगों ने ही बनाए हैं। वे हमारी ही सुविधा के लिए हैं। हर बनाए गए नियम को तोड़कर आगे बढ़ने का ही नाम प्रगति है। यही विकास का क्रम है। हमारी व्यवस्था विकास के सिद्धान्त पर ही आधारित है। हमने आज एक नया सिद्धान्त पाया है—घिसे-पिटे और पुराने मूल्यों को तोड़ते रहना। उनकी जगह नये मूल्यों की स्थापना करना।—हमें विश्वास है, बंटू एक दिन इस पूरे विद्यालय का नेतृत्व करेंगे—।"

"नहीं"—एक आवाज़ आई।

सबने चौंककर देखा। वह बंटू की आवाज़ थी। वह खड़ा हो गया। उसने कहा—"मैंने अपना निर्णय कर लिया है। उसमें कोई परिवर्तन सम्भव नहीं, मैं इस विद्यालय को छोड़ना चाहता हूं।"

सारे विद्यार्थी अपनी जगह से उठ बैठे। सबने बंटू को घेर लिया। काफी देर तक हलचल होती रही। परिषद् की बाकी कार्यवाही उसके बाद जल्दी खत्म कर दी गई। सबने सप्ताह का खर्च लिया। कुछ विद्यार्थियों ने अतिरिक्त पैसों की भी मांग की। वह पूरी कर दी गई।

सत्रह

टाफियों का शोर

सारे दिन विद्यालय में सरगरमी रही।

बंटू छोड़कर चला जाएगा, इस विचार-मात्र से सबको दुःख हुआ। विद्यालय के विद्यार्थी एक के बाद एक बंटू के पास आते गए। अपनी बातें कहकर वे चले जाते। मनोज की परेशानी का अन्त नहीं था। उसीके कारण

यह संकट खड़ा हुआ।

रात्रि को मनोज ने बंटू से ढेर-सी बातें की। उसे कई तरह से समझाया। बंटू चुपचाप सुनता रहा। सोने का समय हुआ तो बंटू ने बिस्तर में पड़े-पड़े सोचना शुरू कर दिया। कई तर्क-वितर्क उसके सामने आए, गए। सोचते-सोचते वह सो गया। सपने में उसने देखा, 'विद्यार्थी परिषद्' की बैठक हो रही है। उसकी कुछ गलतियों की चर्चा हुई, तो उसने उठकर उनके लिए खेद प्रकट किया। सारे विद्यार्थी खुश हुए। बंटू को क्षमा कर दिया गया। उसने सुना, प्रिंसिपल कह रहे हैं—"खेद प्रकट करना एक अच्छी बात है। उससे मन का सारा भार एकदम उतर जाता है। पवित्र आत्माएं कभी अपने भीतर भार नहीं ढोया करतीं···।"

बंटू चौंककर उठ बैठा। उसने अपनी आंखें मली। खिड़की से झांककर देखा। रात गहरी थी। चौकीदार के लकड़ी खटखटाने की आवाज के सिवाय और कोई शोर नहीं था। दूर से रह-रहकर सियारों की आवाजें आ रही थीं। इन्हें सुनकर कुछ कुत्ते भी भौंकने लगते थे।

बंटू को यह गम्भीर शान्ति अच्छी नहीं लगी। रात का निपट अकेलापन उसे खटकने लगा। उसने सोचा—'अशान्ति में ही गति है। गतिमान पानी ही शोर करता है। एकान्त एक भयावह आत्मघात है। उसे आत्मघात का रास्ता नहीं चुनना चाहिए।'

बंटू अपने-आप मुसकराया। वह मनोज के पलंग के पास पहुंचा। उसने देखा, मनोज का चेहरा शान्त है। वह प्रगाढ़ नींद में डूबा हुआ है। उसने उसे उठाना चाहा। उठाने के लिए उसने हाथ भी बढ़ाया, किन्तु उसका हाथ रुक गया। ऐसी अच्छी नींद उसे नहीं तोड़नी चाहिए।

सुबह कवायद के बाद वह लौटा तो प्रिंसिपल ने उसे बुला लिया। एक पत्र निकालते हुए उन्होंने कहा—"यह तुम्हारे पिताजी का पत्र है। वे आज दोपहर को आनेवाले हैं।"

बंटू खुशी से नाच उठा। प्रिंसिपल ने उसे अपने पास बैठाया और समझाया। बंटू सब कुछ सुनता रहा। अन्त में प्रिंसिपल ने कहा—"इस तरह तुमने देखा कि सारे परिवर्तन तुम्हारे अपने मन के भीतर से ही उठे

हैं। आदर्श विद्यालय की यही सफलता है। तुम खुश रहो और सुख पाओ, यह हम सब चाहेंगे।"

वंटू उठकर चला आया। विद्यालय के द्वार पर उसने आशा को देखा। आशा ने उसके पास आकर कहा—"वंटू, तुमसे एक बात कहनी है।"

"कहिए।"—वंटू ने शैतानी से अपना चेहरा बनाया। आशा ने गम्भीर होकर कहा—"तुम्हें एक बात याद है?"

—"कौन-सी?"

—"तुम 'एक बात' हारे थे, याद है? तुमने एक शर्त हारी है, घुड़सवारी के समय…पहलगाम में…।"

वंटू जोर से हंसा। उसने कहा—"तुम्हारी चोटियां अभी बाकी हैं…।"

आशा ने सचमुच अपनी दोनों चोटियां एक ओर कर लीं और उन्हें हाथ से पकड़ लिया। यह देखकर वंटू को और हंसी आ गई। उसने तेजी के साथ आशा की दोनों चोटियां अलग कर दीं और कहा—"डरो मत, अब नहीं काटूंगा।" इसे सुनकर आशा और गम्भीर हो गई। बोली—"मैं आज वही 'एक बात' तुमसे मांगने आयी हूं।"

"तो मांग लो।"—बड़े सहज भाव से वंटू ने कहा।

"तुम यह विद्यालय नहीं छोड़ोगे, वचन दो।"—आशा ने कहा।

वंटू ने उसके कन्धे पकड़कर जोर से हिला दिए। बोला—"इत्ती बड़ी बात।…ऐसी बात मैं नहीं देता।"

वंटू आशा को वहीं छोड़कर दौड़ते हुए अपने कमरे में भाग गया। वह सीधे नहाने के कमरे में गया और आईने के सामने अपनी शक्ल देखकर खूब हंसने लगा।

दोपहर को एक कार विद्यालय में आई।

वंटू अपनी कार को पहचान गया। वह दौड़ा-दौड़ा गया। उसमें उसके पिता थे, मां थी, नीता मिस थीं और ड्राइवर नत्थूसिंह भी था। बहुत दिनों के बाद वह इन सबसे मिल रहा था। इनसे मिलकर उसे बहुत खुशी हुई। वंटू ने नीता मिस से हाथ जोड़कर 'नमस्ते' की। अपनी मां और पिता के उसने पैर पकड़े। [illegible] नत्थूसिंह से कुशल-समाचार पूछा। यह

सब देखकर सभीको अचरज हुआ। उसमें इतनी शिष्टता पहले कभी नहीं थी। वह विद्यालय की ड्रेस पहने था। और उसमें बहुत चुस्त लग रहा था।

बंटू उन्हें 'अतिथि गृह' में ले गया। प्रिंसिपल ने कलेक्टर मुकर्जी का खूब स्वागत किया। बाद में श्रीमती मुकर्जी ने कुछ फल और मिठाइयां बंटू को दीं। बंटू ने उन्हें ले लिया तो मां ने कहा—"थोड़ी-सी खा ले।"

"नहीं, मां, मैं अकेला नहीं खाऊंगा।"—उसने कहा—"थोड़ी होंगी तो मनोज और आशा को दूंगा। काफी हुई तो सबको बांटूंगा।" प्रिंसिपल ने अचरज के साथ बंटू को देखा। वे आंखें फाड़े देखते रहे।

बंटू ने नीता मिस का हाथ पकड़ लिया। उन्हें उसने सारा विद्यालय घुमाया। अपनी वार्डन से उन्हें मिलाया। मिलाते समय बोला—"लेकिन अपर्णा मिस आपकी तरह रियायतें नहीं देतीं। काफी सख्त हैं···।"

अपर्णा मिस हंस पड़ीं। बोलीं—"बड़ा शरारती लड़का है।"

बंटू नीता मिस को फिर रेखा मिस के पास ले गया। रेखा मिस ने कतई पता नहीं लगने दिया कि वे अन्धी हैं। उनसे मिलकर नीता मिस को बड़ी खुशी हुई।

बंटू ने अपनी मां को भी सारे विद्यालय में घुमाया।

उसने मनोज से उन्हें विशेष रूप से मिलाया। कहा—"यह न होता तो···"

मनोज ने बात पूरी कर दी—"मैं भी न होता।"

मनोज भी उनके साथ हो लिया। वे आशा के कमरे में गए। बंटू ने कहा—"मम्मी, यह हमसे 'बात' मांगती है। कहीं बात भी दी जाती है?"

श्रीमती मुकर्जी को इन सबका क्या पता। वे केवल हंसती रहीं। मोहिनी के कमरे में जाकर बंटू ने उसके नकली बाल उतार दिए। कहा—"चि···च्च।" रास्ते में गिरीश मिला तो बंटू ने उससे हाथ मिलाए। कहा—"मम्मी, इसकी जांघ में जरा-सा किमाच लग गया था, तो इसने सारे विद्यालय को सिर पर उठा लिया था।"

बंटू ने एक-एक कर हर लड़के से अपनी मां और नीता मिस को मिलाया।

शाम को संगीत की कक्षा में उसने पियानो वजाया। फिर आशा के साथ गीत गाया। मुकर्जी साहव की खुशी का अन्त नहीं था। जव उन्होंने सुना कि वंटू ने क्रिकेट मैच जीता है, तव वे खुशी से पागल हो गए। वोले—"काश ! हम यहां फिर पढ़ पाते।"

नीता मिस को तो किसी वात पर विश्वास ही नहीं हो रहा था। वंटू ने कितने अच्छे ढंग से 'नमस्ते' की थी। सारे साथियों का उसे स्नेह मिला था। इस विद्यालय में जैसे एक ही तो हीरा था।

दिन उतरकर वैठ गया तो मुकर्जी साहव रवाना हुए। उन्हें जांच के लिए पास के एक गांव में जाना था। वहीं से वे रामनगर लौट जाएंगे। आए थे वे वंटू को लेने, लेकिन वापस अकेले हंसते हुए लौट गए। जाते समय नीता मिस ने टाफियों का एक वड़ा पैकेट वंटू को दिया। वंटू ने शोर मचाते हुए सवको टाफियां वांटीं।